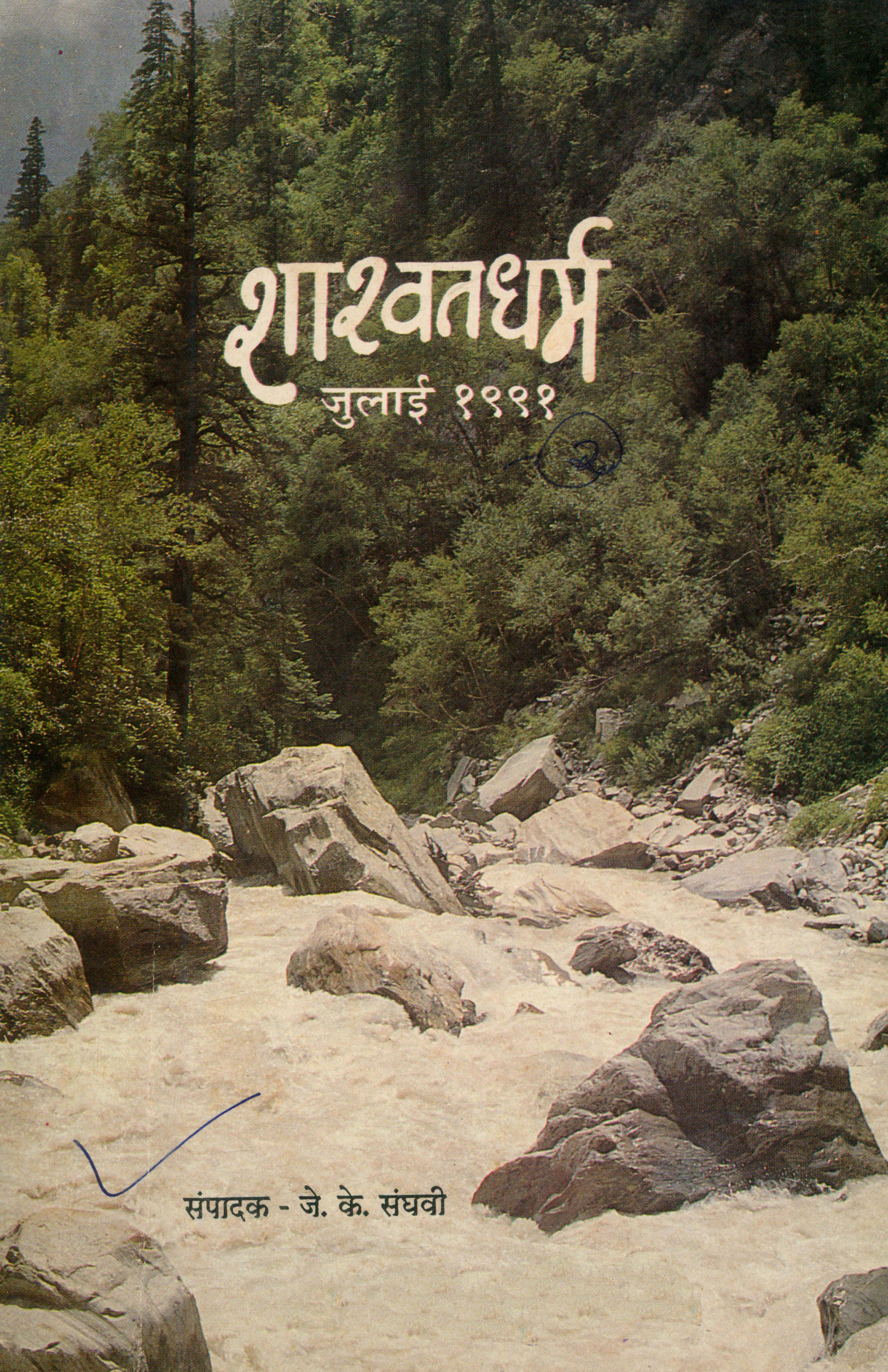

शाश्वतधर्म

जुलाई १९९१

संपादक - जे. के. संघवी

साहित्य मनिषी आचार्य देव श्रीमद्‌विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी द्वारा लिखित / सम्पादित उपलब्ध साहित्य आज ही मंगवाइये।

* नमो मन से नमो तन से — पांच रूपये
  नवकार पर आधारित प्रवचनों का सुन्दर संकलन (द्विरंगी मुद्रण)
* जीवन ऐसा हो — पांच रूपये
  (मार्गानुसारी के पेंतीस गुणों का वर्णन, द्विरंगी आकर्षक मुद्रण)
* जयन्तसेन सतसई — चार रूपये
  (विविद विषयों पर ७०७ दोहों का संकलन)
* ज्योतिष प्रवेश — सात रूपये
  (ज्योतिष सम्बन्धी प्रारंभिक जानकारी)
* नवकार गुण गंगा — पांच रूपये
  (नवकार पर सुन्दर / भाववाही स्तवनों का संकलन)
* चिर प्रवासी — चार रूपये
  (जीवन यात्रा के विभिन्न पड़ावों पर उपदेशात्मक मुक्तक)
* गुरूदेव पुष्पांजलि — तीन रूपये
  (श्रद्धेय गुरूदेव श्रीमद् राजेन्द्रसूरिजी के भक्ति गीतों का संग्रह)
* तीर्थ - वंदना — तीन रूपये
  (विविध तीर्थों के मूलनायक भगवंतों के स्तवन)
* भगवान महावीर ने क्या कहा ? (हिन्दी/गुजराती) — बीस रूपये
  (आगम ग्रन्थों से चुनी हुई २५० सुक्तियों पर सुन्दर विवेचन)
* भक्ति सागर — दो रूपये
  (स्तवनों का संकलन)
* अरिहंते शरणं पवज्जामि (हिन्दी/गुजराती) — दस रूपये
* यतीन्द्र मुहुर्त दर्पण — इक्कावन रूपये
  (मुहूर्त संबंधी वृहद् संकलन)
* भक्ति प्रदीप (स्तवन) — दो रूपये
* हेम मुक्ति स्वयं सुधा (गुजराती) — पांच रूपये
* नवकार आराधना (हिन्दी / गुजराती) — पांच रूपये
  (नवकार पर मननीय प्रवचन)
* अष्टान्हिका व्यख्यानम् — दस रूपये
  (पर्युषण व्याख्यान)
* जिनेन्द्र पूजा संग्रह (वृहद्) (गुजराती) — इक्कीस रूपये
  (विविध पूजायें रंगीन चित्रो के साथ)
* जिनेन्द्र पूजा संग्रह (लघु) — दस रूपये
  (विविध पूजाये रंगीन चित्रो के साथ)
* पंचप्रतिक्रमण विधी सह (पॉकेट साईज) — दस रूपये
  (प्रतिदिन आवश्यक क्रिया में उपयोगी)

उपरोक्त पुस्तकें मंगवाने हेतु मूल्य के साथ प्रति पुस्तक पोस्टेज एक रूपया जोड़कर मनीआर्डर निम्नांकित पते पर भिजवायें —

शाश्वत धर्म कार्यालय, जामली नाका, थाने - ४०० ६०१ (महाराष्ट्र)

1313

शाश्वतधर्म

धर्म की विविधा में शाश्वतता का प्रवर्तक हिन्दी मासिक

संस्थापक - व्या. वा. आचार्यदेवश्री यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.

संपादक : जे. के. संघवी

सहसंपादक : शांतिलाल सुराना

: संपर्क सूत्र :

☎ 5340724

शाश्वतधर्म कार्यालय,

जामली नाका, थाने - ४०० ६०१. (महाराष्ट्र)

सदस्यता शुल्क

बीस वर्षीय – तीन सौ रूपये

पांच वर्षीय – एक सौ रूपये

वार्षिक – पच्चीस रूपये

विज्ञापन शुल्क (एकबार)

पूरा पृष्ठ – ३००/- रूपये

आधा पृष्ठ – १७५/- रूपये

पाव पृष्ठ – १००/- रूपये

अंतिम पृष्ठ – ५००/- रूपये

(विशेषांक पर यह दर लागू नहीं है।)

वर्ष : ३९ ★ अंक 2 ★ जुलाई १९९१

अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद द्वारा संचालित

अवैतनिक सम्पादन : अव्यवसायिक प्रकाशन

आ. श्री कैलाससागर सूरि ज्ञान मंदिर
श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र, कोबा.

शाश्वत धर्म - जुलाई १९९१

कहां ? क्या ?...

अपनी बात .... जे. के. संघवी 3

श्रीमद् आचार्य श्री स्मृति पटल पर........................ आ. श्री जयंतसेनसूरिजी 5

श्री सुपार्श्वनाथ जिन स्तवन(7) .... मुनिराज श्री जयानंद विजयजी 7

योगदृष्टि में आत्मविकास.......................... साध्वीजी दिव्यदर्शनाश्रीजी 9

श्री राजेन्द्र वचनामृत.. संकलित 12

मोक्ष प्राप्त करना हमारा लक्ष्य: प्रतिमा दर्शन पहुँचने का मार्ग..श्री जी. आर. भंडारी 13

एक नजर इधर भी .... धर्ममित्र 16

अध्यात्म-कल्पद्रुम: सरल अध्ययन .... श्री लक्ष्मीचंद सरोज 17

मनुष्य के प्रकार .... श्री महेन्द्र जे. संघवी 23

परिग्रह: आकाश-क्षितिज की भ्रांति .... श्री नरेन्द्रकुमार जैन (बागरा) 24

ज्ञान कसौटी (7) .... श्री महेन्द्र जे. संघवी 27

आचारांग की सूक्तियाँ (1) .... श्री पुखराज भंडारी 28

शब्दसागर स्पर्धा (3) ....श्री प्रदीप एम. जैन 31

समाचार दर्शन.. 33

चित्रदर्शन..

ગુજરાતી વિભાગ

આત્મ સંશોધન....................................... મુનિ શ્રી પ્રશાંતરત્ન વિજયજી

ચન્દનબાલા.. પં. શ્રી પૂર્ણાનન્દવિજયજી મ. સા.

लेखक के विचारों से परिषद् एवं सम्पादक की सहमति आवश्यक नहीं है।

स्वाध्यायी पाठकों को सप्रेम भेंट.....

जिन भाई-बहनों ने पंच प्रातिक्रमण सूत्र कंठस्थ कर लिये हों, उन्हे स्व० आचार्य श्री यतीन्द्रसूरीश्वरजी द्वारा लिखीत 'प्रकरण चतुष्टय' (श्री दंडक, नवतत्व,- जीवविचार एवं लघु संग्रहणी प्रकरण मूल व अर्थ सहित) का तृतीय संस्करण पक्की जिल्द में स्वाध्याय हेतु 2 रु. के पोस्टेज स्टेम्प भेजने पर भेंट भेजी जायेगी

संपर्क सूत्र:- शाश्वत धर्म कार्यालय, जामली नाका, थाने-४००६०१.

धर्म निरपेक्षता एवं राष्ट्रीय अखंडता

धर्म निरपेक्षता हमारे शासन का आदर्श होने के बावजूद यदि गहरा चिन्तन करें तो धर्म सापेक्षता की वास्तविकता नजर आयेगी। धर्म अर्थात् जीवनमूल्य!

मूल्यों के मृतप्राय: या नाश हो जाने के बाद धर्म रहता ही नहीं है। धर्म के नाम पर हमारे देश में शासकों ने/सत्ता लालचुओं ने कटुता एवं वैर के बीज ही बोये हैं। 'हिन्दु-मुस्लीम भाई-भाई' के कोरे नारे गुंजाने या एकता दिवस समारोह मनाये जाने से राष्ट्रीय एकता की स्थापना नहीं हो सकेगी।

आझादी के ४४ वर्षों बाद की इस परिस्थिति की समीक्षा करने के लिये हमारी जिम्मेदार नीतियों की समीक्षा करनी पड़ेगी। भारतीय जनता सदियों से शान्तिप्रिय रही है, लेकिन 'फूट डालो राज करो' वाली नीति के कारण आज नाना प्रकार की समस्यायें सामने आ रही है। मात्र वोट एवं कुर्सी को लक्ष्य बनाकर जब जीवन मूल्यों के साथ सौदा किया जाता है, तो धर्म निरपेक्षता कहाँ रह जाती हैं।

पिछड़े वर्गों को सुरक्षा प्रदान की जाये, यह सही बात है किन्तु उन्हें गलत उत्तेजन देकर नयी खाई पैदा की जाये या बहुमति के साथ अन्याय किया जाय, यह कौन-सा धर्म है? भारत में रहने वाला प्रत्येक नागरिक मात्र भारतीय के रुप में पहचाना जाना चाहिये, उसे धर्म या मज़हब की आड़ में विशेष अधिकार या विशेष सुविधायें दी जायें, यह उचित नहीं है।

शासकों द्वारा अब तक निश्चित वर्ग को लघुमति के बहाने अनेकों प्रकार की छूट दी है। कानून कायदों में भी उनके लिये अलग से उदारता बरती गयी है। हिंसा या खून के अपराधियों में, चोरी, लुटपाट या धर्म स्थलों में घातक हाथियार या घातक हथियारों, विस्फोटक हथियारों से संबंध विशेषकर लघुमति के लोग ही होते है, किन्तु सरकार की उनके प्रति हमेशा ढीली नीति रही है। उन्हें चाहें उतनी बार शादी करने या तलाक देने की छूट धर्म या संप्रदाय की आड़ में दी गयी है, दूसरी ओर बरसों से सरकार परिवार कल्याण (नियोजन) का कार्यक्रम चला रही हैं, कैसे मेल खाती हैं ये नीतियाँ? चालू नौकरी के समय धार्मिक क्रिया हेतु उन्हें खास छुट्टी दी जाती है। प्रात:काल चार-पांच बजे उठकर ध्वनिवर्धक यंत्रों (लाउड स्पीकरों) द्वारा धर्म के नाम का उपयोग कर लघुमति कौम द्वारा आसपास के लोगों की निंद बिगाडी जाती है, लेकिन हमारी सरकार कुछ नहीं कहती। लघुमति कौम के मतों को ध्यान में रखकर ही सरकार इस अन्यायपूर्ण समर्थन द्वारा देश की स्थिति को बिगाड़ने में सहायक बन रही है।

पक्षपात, अन्याय एवं इरादापूर्वक वर्ग विशेष के प्रति दोहरी नीतियों के

कारण धर्म निरपेक्षता का तो कहीं अंश भी दिखायी नहीं दे रहा है। धर्म तो हमेशा जोड़ने का कार्य करता है किन्तु इन राजनेताओं ने इसे राजकारण में घसीटकर तोडने का कार्य प्रारंभ कर दिया है, इसीलिये जब-जब चुनाव आते हैं तब तब लघुमतियों द्वारा अपने हित में ज्यादा से ज्यादा लाभ का सौदा किया जाता है। यही कारण है कि बहुमति या दूसरी कौम के लोग स्वाभाविक तौर से विरोध एवं नफरत की राह पर आने लगे हैं। यदि सरकार तटस्थ हो तो एकता के नारे गूंजाये बिना भी एकता दृढ़ बन सकती है।

भारत में रहने वाले तमाम नागरिकों के लिये समान कानून हो, समान नियम हो, वर्ग विशेष को विशेषाधिकार न दिये जाकर सभी को समानाधिकार हो, तो राष्ट्रीय अखंडता के समक्ष कोई कोई खतरा पैदा नहीं हो सकता किन्तु कोरी बातें या उपदेश कारगर सिद्ध नहीं हो सकता। P. K. Sanghvi -सम्पादक

नया प्रकाशन : आज ही मंगवाये

हर धर्म में प्रार्थना को महत्व दिया गया है।
जैन दर्शन में 'जयवीयरायसूत्र' एक अनोखी प्रार्थना है।
जयवीयराय सूत्र (प्रार्थना सूत्र) पर
विस्तृत विवेचन

अरिहंते सरणं पवज्जामि

चिन्तनकार : आचार्य श्री जयन्तसेनसूरि

- **गुजराती में दो संस्करणों के बाद अब हिन्दी में उपलब्ध**
- **चार रंगी लेमीनेशनयुक्त कवरपृष्ठ के साथ, लेजर टाइप सेटींग ऑफ सेट में मुद्रित**

प्रकाशक-श्री राज राजेन्द्र प्रकाशन ट्रस्ट, अहमदाबाद/बम्बई
मूल्य - दस रुपये + २ रुपये डाक खर्च
प्राप्ति स्थान : शाश्वत धर्म कार्यालय,
जामली नाका-**थाने-४०० ६०१**

स्व. पू आचार्य श्रीमद्‌विजय विद्याचन्द्रसूरीश्वरजी म. सा. की — पूण्यतिथी पर

श्रीमद् आचार्य श्री स्मृति पटल पर

आ. श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरिजी म. सा.

परम पूज्य शान्तमूर्ति कविरत्न आचार्य प्रवर श्रीमद् विजय विद्याचन्द्र सूरीश्वरजी म. जिन की स्मृति आज भी ज्यों की त्यों बनी हुई है।

प्रसन्न मुखमुद्रा एवं गंभीर चिन्तन! कवित्व कौशल्य एवं वैचारिक उदारता। आन्तरिक स्नेहार्द्रता एवं व्यवहारिक सौजन्यता! मानवीय आचार संहिता के साथ श्रमण जीवन की आचार संहिता के पालन में तत्परता।

सर्व प्रथम मिले शालेय जीवन में था जब मैं। एक पुस्तक प्रदान करते हुए मेरे को कहा "आमां प्रभुभक्तिना गीत छे, भणजे वांचजे याद करजे!"

मैंने पुस्तक खोली देखा 'गीत पुष्पाजली'

भाषा हिन्दी, लिपि गुजराती धीरे से मेरे को सम्बोधित करते हुए कहा 'जीवन भक्ति बिन रिक्त है शून्य है। शक्ति प्रदान करती है भक्ति। चित्त प्रमुदित हुआ उस समय स्नेह सिक्त शब्द वृष्टि में भींजकर।

विविध राग रागणियों में परमात्मा के भक्ति गीतों को पढ़ा सीखा। हर्षानुभूति हुई। वह समय था विक्रम सं. २००५, भाद्रव मास। समय गतिवन्त है। गतिशील रहा।

सौभाग्य बना परमोपकारी पू. पा. गुरुदेव श्रीमद् विजय यतीन्द्र सूरीश्वरजी म. के चरणारविन्द के मधुप बनने का। संयम पथ पर जीवन समर्पण कर दिया गुरुदेव के चरणों में। अध्ययन काल में प्रेरणा मिलती रही इनसे।

छंद शास्त्र के वे अनुपम ज्ञाता थे। छंद रचना का क्रम चलता रहता था। हरिगीतिका, गीतिका, वीर छंदादि का बोध करवाया एवं शैली सिखाई। जीवन मे प्राप्त अनेक अनुभवों का वर्णन करते कहते, खूब सोचो। कम बोलो!! कर्तव्य परायण रहो!!! शासन गुरु गच्छ के प्रति सन्निष्ठ रहो! कहते ही नहीं थे ये आदर्श आपके जीवन में स्थायित्व प्राप्त कर चुके थे। इन्हीं आदर्श गुणों ने आप को गुरुगच्छ धुरा सफल संचालन का दायित्व दिलाया था।

विजय विद्याचंद्रसूरीश्वरजी

हमारे परम कृपालु गरुदेव महाप्रयाण कर गये! हम आपके नेतृत्व में हमारा साधना मार्ग तय कर रहे थे।

आपश्री के पास स्थापनाचार्यजी थे जो दादागुरुदेवश्री ने अपने हाथों तैयार किया था। राजगढ़, राजेन्द्र भवन विश्राम था। यकायक मुझे आवाज दी! मैं तत्क्षण निकट पहुँचा, अंजली बद्ध खड़ा रहा। स्थापनाचार्य मेरी अंजली में थमाते हुए कहा' तेरे को यह दे रहा हूँ, जो गुरुदेव की' निधि है।'

आ. श्री कैलाससागर सूरि ज्ञान मंदिर
श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र, कोबा

नत मस्तक हो स्वीकार करते हुए प्रत्युत्तर दिया 'जैसी दी है आपने, मैं वैसी ही सुरक्षित रखूँगा इस निधि को।'

स्वस्थान पहुँचकर मैं चिन्तन में खो गया। क्या जँचा होगा उन पूज्यश्री को! अन्य को न देकर मेरे को देने के लिए उस समय उन्हें क्यों स्फुरणा हुई होगी? क्या ज्ञात कर मेरे को दी होगी, यह निधि।'

पू. पा. आचार्य प्रवर की दूर दर्शिता को मैंने उस समय महसूस किया।

हम सियाणा चार्तुमास स्थित थे! पूज्यश्री पालिताणा बिराज रहे थे। चार्तुमास पूर्णाहूति पर तार मिला 'विहार कर मोहनखेड़ा आओ'। विहार कर दिया, कदम बढ़े मोहनखेड़ातीर्थ की ओर!

विचारों के उतार चढ़ावों के साथ हम पहुँचे गुरु दरबार में। वंदना की। खड़ा हुआ कि आवाज मिली आ गया उग्र विहारी? अजब शब्द थे अन्तस्तल को छू गये। बैठ गया श्रीमद् मे सम्मुख! सारी बातें हुई।

उपधान तप आयोजन हुआ। सानन्द सपन्न भी हो गया।

बाग से प्रस्थित सिद्धाचलतीर्थ छ रि पालक संघ में जाने का आदेश मिला। श्रीमद् की भावनानुसार संघ सह यात्रा कर लम्बे विहार कर हम श्रीमोहनखेड़ातीर्थ पहुँचे।

आप श्री की निश्रा में धार्मिक शिबिर का सफल आयोजन अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के माध्यम से किया गया। २४ दिन का यह शिबिर था जिस में आप श्री ने प्रेरक उद्बोधन दिया।

शिबिर के संस्कारों देखकर आप श्री ने कहा 'जयन्त! ऐसे शिबिर समाज में प्रतिवर्ष आयोजित करो, संस्कारों से युवकों का जीवन सुसंस्कारित एवं सुदृढ बनेगा' मैं इतना ही कह सका 'आप की कृपा से सब होगा'

श्रीमद आचार्य श्री दिर्घदृष्टा भी थे, इसी कारण समाज के निर्माण की प्रक्रिया एवं संस्कृति सुरक्षा प्रक्रिया का आपश्री ने लक्ष्य बना लिया था। सभी को तद्नुरुप कार्यकलाप हित प्रेरणा भी देते रहते थे।

गुरुदेव के प्रति उनका अनन्य समर्पण भाव सदा सर्वदा मूर्तिमन्त बना रहेगा। गुरु भक्ति एवं सेवा सुश्रुषा ही आप ने जीवन का प्रमुख लक्ष्य बना लिया था जो अवर्णनिय एवं शब्दातित है।

आप की काव्य रचना मधुर एवं अस्खलित थी। आप द्वारा निर्मित पथिक काव्य प्रत्येक के मानस को सीधा स्पर्श करता है। श्री आदीश्वर, श्री शान्तिनाथ , शिवादेवी नन्दन, दशावतारी, चरम तीर्थंकर महावीर विविध छंद एवं खंडो में आज सभी को प्रेरणा प्रदान कर रहे है। जिनमें शान्त , वीर, श्रृंगार, उग्र रसों का आस्वादन प्राप्त किया जा सकता है।

मैं इस पावन स्मृति में अपनी श्रद्धा भक्ति के पुष्प अर्पित कर भाव भृता श्रद्धांजली अर्पित करता हूँ। अलम्

★ ★ ★

श्री सुपार्श्वनाथ जिन स्तवन (७)

विवेचन - मुनिराज श्री जयानंदविजयजी

(कपुर होवे अति ऊजलो रे ०-ए राग)

पंचम काल प्रभाव थी रे, प्रगट्यो पाखंड प्रचार।
संजमिया सुख शीलियां रे, बोले विविध विचार रे।
सुपार्श्व जिन सुणिये, मुज अरदास। सु. ॥ १ ॥

भावार्थ : *हे सप्तम सुपार्श्वजिन! मेरी यह अर्जी सुनिये—*

भस्मग्रह से दुषित हुंडा अवसर्पिणी युक्त पंचमकाल/पंचम आरा आपके शासन को छिन्न भिन्न कर रहा है। काल के प्रभाव से पाखंडी जनों का प्रचार विशेष रूप से हो रहा है। वह भी आपके ही नाम से और चारित्र का वेश ग्रहण कर 'सुखशीलता' अर्थात् मोजशोक/आरामदेह बन जाने वाले लोगों ने विविध प्रकार के विचारों का/सिद्धान्तों का प्रचलन कर दिया है।

समाचारी सम शोधतां रे, गच्छगति गम ग्रहे लोक।
परंपरा तुम पेखतां रे, फेल करे सहु फोक रे। सु. ॥ २ ॥

भावार्थ : *भौतिक सुखों को प्राथमिकता देने वालों ने, मान पान के इच्छुक जनों ने स्वमति कल्पना के द्वारों को खोलकर गच्छों के वाड़े बना दिये और उसमें समाचारी अलग-अलग बना दी। आप श्री द्वारा प्ररूपित वास्तविक परंपरा को फेल अर्थात् नष्ट करके रख दी। स्व स्व मान्यतानुसार गच्छ समाचारी बनाकर उसे ही परंपरा के नाम से भोले भक्तों को दर्शाकर पोल में ढ़ोल बजाने लगे।*

उत्सर्ग अपवाद अखे रे, अपवादे उत्सर्ग।
स्याद्वाद शोधे सांकडे रे, एम भाषे अपवर्ग रे। सु. ॥ ३ ॥

भावार्थ : *उत्सर्ग में अपवाद एवं अपवाद में उत्सर्ग की स्थापना करने लगे अर्थात् शास्त्रीय मार्ग वह उत्सर्ग एवं गीतार्थों द्वारा आचरित अपवाद जहां शास्त्रीय मार्ग की आवश्यकता थी वहां गीतार्थ आचरित की स्थापना एवं जहां गीतार्थ आचरित की आवश्यकता थी वहां शास्त्रीय मार्ग की स्थापना कर स्याद्वाद को सीमित दायरे में अर्थात् स्व मान्यता में लगाने लगे और उसीमें अपवर्ग अर्थात मोक्ष प्राप्ति बताने लगे। स्व प्ररूपित क्रियाकाण्ड से ही मोक्ष होगा ऐसी प्ररुपणा करने लगे।*

अन्य देव आराधतां रे, संवर नहीं सावद्य।
कारण कारज कहे रे, नास्तिक हुवा निरवंध्य रे। सु. ॥ ४ ॥

भावार्थ : *देवाधिदेव को तजकर अन्य देवों की आराधना में निमग्न होकर सावद्य/पापवाले मार्ग को/अधर्म को संवर का मार्ग/धर्म कहने लगे। कहीं कहीं कारण को कार्य मानकर*

व्यवहार करने लगे। जो साधन था उसे ही साध्य मान लिया गया। जैसे आहार संज्ञा घटाना साध्य था, तप साधन था पर साध्य भूला दिया गया और तप रूप साधन को ही साध्य धर्म मान लिया गया इसी प्रकार हर क्रिया के विषय में जान लेना।

पंचमकाल में नास्तिक लोगों की अधिकता हो गई। धर्म के नाम से लोग दूर भागने लगे ऐसे प्ररुपक भी अनेकानेक पैदा हुए बरसाती मेंढक सदृश। फिर जिनशासन उन्हें निरवंध्य ही मानता है। अर्थात् उनका अहित हो ऐसा नहीं कहता/नहीं मानता। जिनशासन तो नास्तिक से नास्तिक का भी भला हो/हित हो उसे सद्बुद्धि देने का प्रयत्न करने का ही कहता है।

सूरि राजेन्द्र ना सूत्र नी रे, पामी में परतीत।
नास्तिक ने मानुं नहीं रे, चित्त धरश्युं चारित रे। सु. ॥५॥

भावार्थ : *गुरुदेव श्री कह रहे हैं कि तीर्थंकर प्ररुपित सूत्रों की विश्वस्तता को मैने प्राप्त की है। सूत्रानुसार आचरणा ही कर्म मुक्ति में पूर्ण सहायक होगी।*

नास्तिकता में निमग्न लोगों को एवं उन द्वारा प्ररुपित स्वकल्पित आचरणाओं को न मानकर, चित्त में अर्हनिश चारित्र पालन के सुदृढ भाव पूर्वक, सूत्रानुसार सूत्र सहमत गीतार्थ आचरणा के द्वारा, चारित्र पालन कर स्वकार्य सिद्ध करुंगा।

इस स्तवन में पंचमकाल में प्रगटे गच्छभेद मत मतांतरों के विषय में देवाधिदेव से निवेदन कर भक्त गण को सूचन किया है कि गच्छ कदाग्रह के मोह जाल में न फंसकर सूत्रानुसार सूत्र सहमत गीतार्थ आचरणा को मान्यता देकर क्रियाकांड के द्वारा साध्य सिद्ध होगा। साधन गलत मिल गया या साधन को ही साध्य मान लिया गया तो परिभ्रमण में कोई फर्क नहीं पड़ेगा।

ज्ञान कसौटी (७) के उत्तर

[१५१]विशेष अंश को जानना ज्ञान है। [१५२] बारह [१५३] बाईस [१५४] पाँच सामायिक, छेदोपस्थापना, परिहार विशुद्धि, सुक्ष्म संपराय और यथाख्यात, [१५५] श्री नेमिचंद मुनि [१५६] पाँच, ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चारित्राचार, तपाचार एवं वीर्याचार [१५७] अनन्त ज्ञान [१५८] अनन्त दर्शन [१५९] अनन्त सुख [१६०] अनन्त वीर्य [१६१] अव्याबाध [१६२] अवगाहनत्व [१६३] सुक्ष्मत्व [१६४]अगुरुलघूत्व- [१६५] श्रावण शुक्ला पंचमी एवं चित्रा नक्षत्र [१६६] वंश-हरिवंश, गौत्र-गौतम[१६७] धनकुमार के भव में [१६८] पांडव उनकी बुआ के पुत्र थे [१६९] धनकुमार के भव से [१७०] एक हजार [१७१] वरदत्त ब्राम्हण के यहाँ [१७२] ५४ रात्रि दिवस तक [१७३] गिरनार पर्वत [१७४] वरदत्त राजाने [१७५] लगभग ६०० वर्षो तक।

योगदृष्टि में आत्मविकास

साध्वीजीश्री दिव्यदर्शनाश्रीजी

चरमावर्त काल में प्रवेश करने के पश्चात् जीव पुद्‌गलानंदी दशा से बाहर निकलकर आत्मविश्वास की ओर उन्मुख होता है क्रमशः मार्ग पतित मार्गानुसारी सकृतबंध अपुर्नबन्ध आदि अवस्थाओं को पार करके सम्यगदर्शन प्राप्ति की योग्यता प्राप्त करता है।

योगदृष्टि समुच्चय में सूरिपुरंदर हरिभद्रसूरि ने इस आत्मविकास का आठ योगदृष्टि में वर्णन किया है। प्रथम चार दृष्टि सम्यग्दर्शन पूर्व की है जो मंदमिथ्यात्व, सकृतबंध मार्गसन्मुख आदि दशा में प्रगट होती है। सम्यग्दृष्टि के पश्चात् की चार दृष्टि आत्मविकास की उत्तरोत्तर दशा की सूचक है। पहली मित्रादृष्टि आत्मबोध का प्रथम सोपान है। अब तक गाढ़ मिथ्यात्व दशा में जीव को संसार के प्रति तीव्र राग था और मोक्ष के प्रति द्वेष भाव था, मगर तारा दृष्टि प्राप्त होते ही जीव में जो प्रथम गुण आता है वह है मोक्ष के प्रति अद्वेष भाव। यहाँ मिथ्यात्व दशा मंद होने से आत्मबोध तृण की अग्नि समान अत्यंत अल्प है अनंतकाल अचरमावर्त मे गाढ़ मोह अज्ञान दशा में बिताने के पश्चात् चरमावर्त काल में आता है महोपाध्याय यशोविजयजी ने चरमावर्ती जीव के लक्षण कहे हैं :-

पाप ना करे तीव्र भावे जेने नहीं भव राग रे,
उचित स्थिति सेवे सदा ते अनुमोदवा लाग रे

जीव को संसार सुख का राग होता है, मगर वह घोर संसार को बहुत अच्छा नहीं समझता। निष्ठुर परिणति से पापकर्म नहीं करता एवं सर्वत्र उचित आचरण करता है अर्थात् धर्म का बीज वपन हो सके ऐसी कोमल परिणति आत्मा की होती है कदाग्रह का अशुभ परिणाम नहीं होने से शुभ संयोग मिलते ही सत्यमार्ग की प्राप्ति हो जाए ऐसी योग्यता आत्मा में निर्माण हो चुकी है, जिससे आत्मा में तत्वजिज्ञासा का गुण अंकुरित होता है.

दूसरी तारा दृष्टि में आत्मबोध का प्रकाश छाण की अग्नि के सामान होने से प्रथम मित्रादृष्टि से यहाँ बोध प्रकाश अधिक है अब तक जीव को संसार क्रिया में अधिक राग होने से धर्मक्रिया में खेद उद्वेग आदि दोष रहते थे, मगर अब आत्मा धर्मअनुष्ठान में भावोल्लास अनुभव करता है। धर्म में उपादे बुद्धि आने से आत्मा में शुश्रुषा गुण प्रकट होता है। जीव में धर्म श्रवण करके हेय उपोदय का विवेक करने की योग्यता आती है। हेय/आश्रव का त्याग करना चाहिये एवं उपादे का आचरण करना चाहिए ऐसी सुंदर परिणति आत्मा की बन जाती है।

तिसरी बलादृष्टि में आत्मबोध काष्ट की अग्नि के समान होता है। यहाँ आत्मबोध ज्यादा स्थिर होने से आत्मा हेय का त्याग करता है उपादेय संवर का आचरण करता है। यम नियम व्रत शुभभावपूर्वक ग्रहण करता है। धर्म श्रवण करके उन तत्व पदार्थो का बारंबार चिंतन करता हुआ आत्मा को भाषित करता है।

आत्मविकास की चौथी सोपान अर्थात दीप्रा दृष्टि—इस दृष्टि में आत्मबोध का प्रकाश दीपक के समान निर्मल एवं सुस्थिर होता है। आत्मा अब तक यथा प्रवृत्ति-करण द्वारा कर्मों की स्थिति अत्यंत अल्प अर्थात कोटाकोटि सागरोपम कर ली

है। अनादि काल से रही राग द्वेष की निबिड़ ग्रंथि को भेदने में आत्मा सक्षम बनती है। अपूर्वकरण एवं अनिवृतिकरण के योग्य शुभ भावों की वृद्धि इसी दृष्टि में होती है धर्म क्रिया करते समय अब तक क्षेप उत्थान आदि दोष उत्पन्न होते थे मगर दीप्रा दृष्टिवाला आत्मा शुभ भावों में ऐसी एकाग्रता प्राप्त करता है कि क्षेप उत्थान आदि विदा हो जाते है।

मेघगर्जन सुनकर मयूर को जो आनंद होता है अथवा तरूण युवक गान्धर्व नाटक देखते समय जो रसानंद अनुभव करता है वैसी ही आनंदमय दशा तत्वश्रवण करते समय दीप्रा दृष्टि वाले आत्मा की होती है।

विषय प्रतिभास रुप ज्ञान तत्वचिंतन में गहराई से उतरकर आत्मपरिणिति का कारण बनता है। सम्यग्दर्शन के अत्यंत निकट आ जाने से शुभभावों की वृद्धि उतरोत्तर बढ़ती जाती है। संसार की असारता के दर्शन करने से आत्मा में विवेक ख्याति उत्पन्न होती है। निर्मल तत्व परिणत आत्मा में पाँच आशय प्रकट होते हैं। (१) प्रणिधान (२) प्रवृत्ति (३) विघ्नजय (४) सिद्धि (५) विनियोग।

षोडशक ग्रंथ में बताया है कि कोई भी अहिंसादि धर्म, क्षमादि गुण आत्मसात् करने के लिए पांच प्रकार के आशयों की प्राप्ति अत्यंत आवश्यक है। पांचमी स्थिरा दृष्टि में सम्यग्दृष्टि की प्राप्ति होने से भावोल्लास इतना प्रबल बन जाता है कि प्रणिधान आदि आशयों की सहज में सिद्धि होती है।

(१) **प्रणिधान** :- आत्मा के भाव को प्रणिधान कहते है। पाँच आशय अर्थात आत्मा के उत्तरोत्तर शुभ परिणाम। आशय शब्द की व्युत्पत्ति-आसमन्तात शेते अस्मिन इति आशय। उत्तरोत्तर शुभ भावों का आत्मा में स्थापन अर्थात संस्कार साधना में एकाग्रता चित्त की निच्छल परिणति यह प्रणिधान है। साधना में मन समर्पण कर देना कि मन साधना के विषय को छोड़कर कहीं न जाए।। दूसरी प्रवृत्ति करते समय भी मन तो साधना में ही रमें। जैसे प्रभु दर्शन करते समय केवल बाह्य चक्षु से ही दर्शन नहीं करना परंतु मन भी प्रभु को समर्पण कर देना। शुष्क दिल से होनेवाली साधना से आत्मा में दृढ संस्कार नहीं पड़ते हैं।

(२) **प्रवृत्ति** :- साधना के शुभअध्यावसाय तो आत्मा में आ गए अब वह प्रणिधान अनुसार प्रवृत्ति करता है। उदाहरण- क्षमा की साधना करनी है। क्षमा की बांरबार प्रवृत्ति के व्दारा आत्मा में ऐसे दृढ संस्कार बन जाऐंगे कि प्रनिकूलता में भी क्रोध नहीं आना चाहिए। वाणी मुद्रा में प्रशम भाव बाह्य तो क्या आंतरिक क्रोध का भाव भी नहीं आना चाहिए। क्षमा अहिंसा आदि प्रवृत्ति जीवन में इस तरह छा जाए कि उसके बिना जीवन की कल्पना भी न हो सके।

(३) **विघ्नजय** :- कोई भी शुभ प्रवृत्ति करते समय विघ्न तो आते ही रहते हैं। प्रवासी के दृष्टांत से विघ्न ३ प्रकार के हैं। कंटक, ज्वर और दिशामोह- जैसे प्रवासी कंटक का विघ्न निवारने के लिए पहले से ही पग में मौज्रड़ी पहनता है। ज्वर के प्रतिबंध के हितकर अल्प आहार करता है। दिशामोह से बचने के लिए हर दम जागृत रहता है इसी तरह साधना में कांटे के समान कष्ट रुपी विघ्न से चलित न हो इसलिए साधक प्रथम से ही कष्ट सहिष्णुता रखता है। परिषह उपसर्ग आदि शारीरिक परिषह और आक्रोश वचन आदि मानसिक कष्ट सहन करके आत्मा को ऐसी सहनशील एवं सहिष्णु बना देता है कि मामूली प्रतिकूलता विघ्न में उसकी साधना ज्यादा तेजस्वी बन जाती है। उग्र प्रतिकूलता में भी वह अपने मन को सुस्थिर रख सकता है।

साधना में मन भ्रांत न बने इसलिए साधक हर पल अप्रमत्त रहता है। मन की चंचलता, फल आशंसा आदि व्यामोह से चित्त साधना से विचलित न बन जाए अत: साधक श्रद्धा को दृढ़ करके अभ्रांत चित्त से साधना काल में विघ्नजय करता है। विघ्न आने पर मन की अस्थिरता से

साधना भंग नहीं करता बल्कि निरंतर जागृति रखकर विघ्नों का जय करता है।

*(४) **सिध्दि :-** विघ्नजय की दृढ़ साधना से सिध्दि की प्राप्ति होती है। साधना की पराकाष्टा में सिद्धि होती है, जैसे क्षमा की साधना में सिद्धि मिल जाने पर क्रोध का भाव उठता ही नहीं है। इंद्रिय संयम अहिंसा आदि गुण ऐसे सहज सिद्ध हो जाते हैं कि उसके लिए प्रयत्न नहीं करना पड़ता। सिद्धि प्राप्ति के लिए साधना काल में जिनवचन का महापुरुष का आलंबन लेने से साधना में दृढ़ता आती है फिर संयम, इन्द्रिय-निग्रह, व्रत पालन में मन को मनाना नहीं पड़ता। आत्मा बिना प्रयास के ही हर परिस्थिति में अपने गुणों को खिला सकती है। चंदन में सुगंध सहज होती है, वैसे ही आत्मगुण ऐसे सहज सिद्ध बन जाते है कि जीवन वन महकने लगता है।*

*(५) **विनियोग :-** साधना की सिद्धि के पश्चात् उसका दान सुपात्र में करना, दूसरे के हृदय में उस साधना की स्थापना करना विनियोग कहलाता है। विनियोग में परहित प्रवृति सहज में हो जाती है। अर्थात जो गुण धर्म हमें साधना द्वारा सिद्ध हुए हैं उनका उपदेश द्वारा अन्य आत्मा में वितरण करना विनियोग है। स्थिरादृष्टि में इन ५ आशय की सिद्धि होती है।*

पाँचवी स्थिरादृष्टि का बोध रत्नदीपक की तरह अत्यंत निर्मल (मिथ्यात्व मलरहित) एवं तेजस्वी है। प्रथम की चार दृष्टि प्रतिपाति धर्मवाली है मगर पांचवी स्थिरादृष्टि अप्रतिपाति अर्थात् अपतित लक्षण वाली है-यह स्थिरादृष्टि का मुख्य गुण है। यहाँ भावमल के अत्यंत क्षय होने से आत्मा को तीन अवचंक योग की प्राप्ति सहज में होती है। योगवंचक सुदेव, सुगुरू आदि का योग आत्मा को हितकर बनाता है। क्रियावंचक योग में आत्मा को भावोल्लास पूर्वक धर्मक्रिया करने से अमृत अनुष्ठान आदि शुभ क्रिया की प्राप्ति होती है। फलावंचक योग में आत्मा धर्म के वास्तविक फल को प्राप्त करती है। इससे पहले जीव सांसारिक फल की आशंसा से धर्म अनुष्ठान करता था, मगर स्थिरादृष्टि में आत्मा आशंसा रहित बनकर केवल मोक्ष की लगनी से धर्म अनुष्ठान की सेवना करता है, अत: उत्तरोतर सुगति आदि पुण्य संपत्ति का अधिकारी बनता है।

'स्थिरादृष्टि में सम्यक्त्व की प्राप्ति होने से निर्मल आत्मबोध तीव्र राग-द्वेष का शमन करता है। राग-द्वेष की अनादि गाढ़ ग्रंथि-भेद हो जाने पर आत्मा को जो आनंद की अनुभूति होती है, वह अवाच्य है। महारोगी को आरोग्य प्राप्ति में अथवा जन्मांध को दृष्टि दान मिलने पर जो अवर्णनीय आनंद होता है ऐसा ही आनंद सम्यग्दर्शन की प्राप्ति के समय में आत्मा अनुभव करती है। अनादि काल की कुमति, अविवेक, कुसंस्कार आदि का नाश एवं विवेक ज्ञान की प्राप्ति से आत्मा इतनी सशक्त बन जाती है कि भ्रांति आदि दोषों को त्यागकर आत्मस्वरुप में स्थिरता करती है।

छट्ठी कान्तादृष्टि सप्तमी प्रभादृष्टि आठवीं परादृष्टि में आत्मा आत्मविकास की चरम विकास अवस्था में पहुंचती है। आत्मबोध की उज्ज्वलता के कारण शुभ ध्यान में लीनता प्राप्तकर समाधि के द्वारा साधना के अंतिम ध्येय को सिद्ध करती है अर्थात कर्मो से संपूर्ण मुक्ति पाकर जीवनमुक्त आत्मा वीतराग बन जाती है।

अंतिम तीनदृष्टि अप्रमत्त गुणस्थान से क्षीणमोह गुणस्थान की विकासदशा में उत्पन्न होती हैं। शुक्ल ध्यान द्वारा क्षपक श्रेणी को प्राप्त कर आत्मा सयोग केवली गुणस्थान में पहुंचकर साधना की पराकाष्टा को सिद्ध करती है।

★ ★ ★

श्रीराजेन्द्र वचनामृत

सर्वादरणीय सत्साहित्य में संदिग्ध रहना अपनी संस्कृति का घात करने जैसा है।

जिस देव में भय,मात्सर्य, मारण बुद्धि, कषाय और विषय वासना के चिन्ह विद्यमान है उसकी उपासना में और उसके उपासक में भी वैसी ही बुद्धि उत्पन्न होना स्वाभाविक है।

यदि सुपूर्वक जीवन-यापन की अभिलाषा हो तो सबके साथ नदी-नौका के समान हिल-मिल कर चलना सीखो।

विद्या और धन दोनों ही सतत् परिश्रम के सुफल है। मन्त्र-जाप, देवाराधना और ढोंगी-पाखण्डियों के गले पड़ने से विद्या और धन कभी नहीं मिल सकते। विद्या चाहते हो तो सद्गुरुओं की सेवा- संगति करो, पुस्तकों या शास्त्रों का मनन करने में सतत् प्रयत्नशील रहो; धन चाहते हो तो धर्म और नीति का यथाशक्ति परिपालन करते हुए व्यापार -धन्धे में संलग्न रहो।

धन की अपेक्षा स्वास्थ, स्वास्थ की अपेक्षा जीवन, और जीवन की अपेक्षा आत्मा प्रधान है शरीर को स्वस्थ रखने के लिए प्रकृति के अनुकूल कम खाना, झगड़े के वक्त गम खाना, और प्रतिक्रमणादि धर्मानुष्ठानों में उपवेशन एवं अभ्युत्थान करना चाहिये। जीवन और आत्म-विकास के लिए चुगलबाजी निन्दाखोरी चालबाजी, कलहबाजी आदि आदतों को हृदय-भवन से निकाल कर दूर फेंक देना चाहिये और उनको शुद्ध आचार-विचार शुभाचरण तथा शुद्ध वातावरण में योजित करना चाहिये।

उत्तम परिवार में जन्म, धर्मिष्ठ वातावरण, निर्वाह- योग्य धन, सुपात्र पत्नी, लोक में प्रतिष्ठा, सद्गुरुओं की संगति और शास्त्र-श्रवण में रुझान पूर्व पुण्योदय के बिना नहीं मिलते। जो पुरुष या स्त्री इन्हें पाकर भी अपने जीवन को सार्थक नहीं करता, उसके समान अभागा इस संसार में दूसरा नहीं है।

जिस व्यक्ति में शौर्य, धैर्य,सहिष्णुता, सरलता, गुणानुराग, कषाय और विषय-दमन, न्याय और परमार्थ में रुचि इत्यादि गुण निवास करते हैं, संसार में वही पुरुष आदर्श और सन्मानीय माना जाता है। ऐसे ही व्यक्ति की सर्वत्र सराहना होती है और उसकी बात को आदरपूर्वक सुना जाता है।

लालसा उस मृग-तृष्णा के समान है, जिसका कोई पार नहीं पा सकता। यह अन्तहीन है अत: सन्तोष धारण करने से ही सुख-शान्ति प्राप्त हो सकती है।

सन्तोषी प्रतिपल शास्त्र-श्रवण करता, नेत्रों से नीतिवाक्यामृतो को सुनता और सद्भावों की सुगन्धि से भरपूर रहता है; उसे काम-कलुष जरा भी छू नही पाते।

मोक्ष प्राप्त करना हमारा लक्ष्य : प्रतिमा दर्शन पहुँचने का मार्ग

श्री जी. आर. भण्डारी (अजमेर)

परमात्मा की प्रतिमा के दर्शन मात्र से ही आत्मा का कल्याण तो होता ही है साथ ही संसार की सच्ची उन्नति का एक मात्र साधन ही है।

मोक्ष प्राप्त करना हमारा अन्तिम लक्ष्य है और परमात्मा का दर्शन वहाँ तक पहुँचने का मार्ग हैं। इसलिये परमात्मा की आराधना, उपासना करने का पवित्र स्थल मन्दिर ही है। आराधना-उपासना का केन्द्र भगवान ही है, और प्राप्त भी उसी को करना है। उस अदृश्य के साथ सम्बन्ध जोड़ने के लिये किसी दृश्य प्रतीक का आलम्बन लेना आवश्यक है। इस कार्य को देव प्रतिमा के सहारे ही सम्पन्न किया जा सकता है। व्यक्ति यदि प्रतिमा का आलम्बन लिये रहे तो वैभव, परिवार, घर आदि सभी जागतिक पदार्थ उसके लिये आनन्ददायक होते है। यदि परमात्मा का आलम्बन छूट जाये तो ये सब उसके लिये उसी भांति घोर कष्टप्रद बन जाते हैं जैसे उस पिता से बिछडे हुए बच्चे के लिये मेले की खुशियाँ।

परमात्मा की प्रतिमा पाषाण का कोई टुकड़ा नहीं है। परमात्मा की प्रतिमा तो हमारी सुषुप्त चेतना को जाग्रत करने का अनमोल साधन है, क्योंकि प्रतिमा के माध्यम से ही हमें परमात्मा के वीतराग स्वरूप का बोध होता है। प्रतिमा दर्शन का तो हमारे जीवन में महत्व है ही साथ ही प्रतिमा दर्शन का विचार मन में आते ही कितने उपवास का फल मिलता है? यह "पद्म चारित्र व उपदेश प्रासाद" में बताया गया है कि भगवान के दर्शन का विचार मन में आते ही एक उपवास का लाभ, दर्शन के लिये उठते ही दो उपवास का लाभ, मन्दिर दृष्टिगोचर होते ही तीन उपवास का लाभ, मन्दिर के पास जाने पर ६ माह के उपवास का लाभ, मन्दिर का द्वार देखने पर १२ माह के उपवास का लाभ, प्रदक्षिणा देने पर १०० वर्ष के उपवास का लाभ, भगवान के धूप आदि से पूजा करने पर एक हजार वर्ष के उपवास का लाभ और परमात्मा की स्तुति करने पर अनन्त पुण्य का लाभ होता है। अतः प्रत्येक व्यक्ति को प्रतिदिन परमात्मा के दर्शनकर अपनी दैनिक दिनचर्या प्रारम्भ करना चाहिये। जिससे हम अपनी आत्मा का कल्याण कर, मोक्ष मार्ग की ओर अग्रसर हो सके। इससे सरल आत्म कल्याण करने का कोई मार्ग नहीं है।

परमात्मा दर्शन मात्र से ही हमारी आत्मा के शुद्ध स्वरूप का भान होता है। हमने प्रत्यक्ष, अप्रत्यक्ष रूप से प्रतिमा दर्शन के महत्व को महसूस/अनुभव किया है। वर्तमान में तीर्थयात्रा के लिए निकलने वाले बड़े बड़े संघों में स्थानकवासी एवं तेरापंथी सम्प्रदाय के जैन धर्मावलंबी भी अच्छी संख्या में जा रहे हैं। इतना ही नहीं स्थानकवासी एवं तेरापंथी समाज के लोगों के यहाँ तीर्थ यात्रा के लिये संघ निकालने का रिवाज सा हो गया है। श्वेतांबर समाज की सभी सम्प्रदायों के समन्वय दृष्टिकोण से एक मन्च पर आने का सराहनीय प्रयास है। चिन्ता का विषय यह नहीं है कि हमारी धार्मिक उपासना की क्रिया अलग-अलग है, क्योकि सभी का एक ही लक्ष्य है कि उपासना-आराधना कर आत्मा का

कल्याण करना। चिन्ता का विषय है सम्प्रदायवाद! हमें सम्प्रदायवाद से परे रहकर परमात्मा की उपासना-आराधना करनी चाहिये। भगवान महावीर के हम अनुयायी है, अत: भगवान महावीर के बताए मार्ग पर चलकर ही हम अपनी आत्मा का कल्याण कर सकते है। इससे आपसी समन्वय की कड़ी को त्याग की भावनाओं के समावेश से ही मजबूत किया जा सकता है।

वर्तमान में हमने सम्प्रदायवाद की दीवार को तोड़कर किसी भी सम्प्रदाय की अच्छी बातों को सहर्ष अपनाया है। आज प्रत्येक शुभ कार्य के सम्पन्न होने के बाद तीर्थयात्रा करने का रिवाज सा बन गया है। इतना ही नहीं जैन समाज की विभिन्न सम्प्रदायों के धर्माचार्यों द्वारा परमात्मा का दर्शन करना, जैन समाज के लिये प्रसन्नता की बात है। जैन श्वेतांबर समाज की विभिन्न सम्प्रदायों के धर्माचार्यों की नजर में प्रतिमा-दर्शन :

स्थानकवासी धर्माचार्य : प्रतिमा दर्शन

❉ जिस प्रकार इस आकाश का कोई अन्त नहीं है। उसी प्रकार परमात्मा के दर्शन के फल का कोई अन्त नहीं है। **-उपाध्याय श्रीसकलचन्द्रजी म. सा.**

❉ मेरी समझ में नहीं आता कि हमारी समाज ने तीर्थों का विरोध करके क्या लाभ उठाया? यदि ये तीर्थ न होते तो हम अपनी प्राचीनता कैसे सिद्ध कर सकते?
-राष्ट्रीय सन्त, उपाध्यायश्री अमरमुनिजी म. सा.

❉ हमारे कुछ मुनियों ने हमें तीर्थंकरों की कल्याणक भूमियों व संवेग वैराग्य की प्रेरक जिन प्रतिमाओं से क्यों वंचित रक्खा? **-विद्वानसन्त श्री विजयमुनिजी म. सा.**

❉ सत्य ही ईश्वर है, सत्य के पुजारी ईश्वर की उपासना करते हैं।
-उपाचार्य श्री देवेन्द्रमुनिजी म. सा.

❉ देव (परमात्मा), साधु-साध्वी आलम्बन रूप है, उनकी उपासना से सत्यमार्ग का दर्शन होता है **-श्री अभयमुनिजी म सा.**

❉ हमें महावीरजी की पूजा उनके सद्गुणों को धारण कर करना चाहिये।
-साध्वी श्री प्रेमवतीजी म. सा.

तेरापंथ धर्माचार्य : प्रतिमा दर्शन

❉ मैं तो हमेशा जाता हूँ मन्दिरों में। अनेक स्थानों पर प्रवचन भी किया। आज भीनमाल (राज) में श्री पार्श्वनाथ मन्दिर में गया। स्तुति गाई। बहुत आनन्द आया।
आचार्य श्री तुलसीजी म. सा.

❉ मूर्ति में चित्त को एकाग्र करने का गुण है, इस दृष्टि से भी मूर्ति की उपयोगिता निर्विवाद है। **आचार्य श्री तुलसीजी म. सा.**

❉ जो पुरुष जिनेश्वर देव की पूजा करता है, वह कीर्ति, विजय और लक्ष्मी का उपार्जन कर, इस संसार में भी सुखी रहता है। **मुनि श्री दुलहराजजी म. सा.**

❉ किसी भी वस्तु की स्थापना करके, उसे नाम से कहना स्थापना सत्य है। शतरंज के मोहरों को हाथी, घोड़ा, ऊँट आदि कहना स्थापना सत्य है।
-युवाचार्य कृत ''जीव-अजीव'' पुस्तक पृष्ठ ४ से

परमात्मा की पूजन-दर्शन की परम्परा अनादिकाल से है। श्वेताम्बर समाज का विघटन लगभग चार सौ वर्ष पूर्व होकर अन्य सम्प्रदाय बनी है। व्यक्तिगत स्वार्थ पूर्ति एवं

पद लालसा के कारण आज भी समाज का विघटन हो रहा है। किसी भी समाज का विघटन राष्ट्रहित में ठीक नहीं है। समय की माँग है कि हम आपसी समन्वय से एक मन्च पर एकत्रित हो, हमारी भावनाएँ शुद्ध हो। हम मासिक "तीर्थंकर" (१२ अगस्त १९८२) के विचारों से पूर्णतया सहमत है कि जिन प्रतिमाऐं और जिन मन्दिर जैन धर्म और जैन संस्कृति तथा जैन इतिहास की एक महत्वपूर्ण धरोहर है। यही सही है कि मनुष्यों की भावनाओं के पवित्रीकरण एवं वीतराग के गुणों का स्मरण दिलाने में मूर्ति निमित्त कारण अवश्य है। मूर्ति ध्यान का आलम्बन है तथा हमारे हृदय की पवित्र भावनाओं और श्रद्धा से आपूर्ति करती है। अतः जीवन के बन्धनों को छुड़ाने के लिये परमात्मा का दर्शन ही एक महत्वपूर्ण एवं सरल मार्ग है। प्रतिमा दर्शन के महत्व को स्वीकार करने वालों को परम पूज्य आध्यात्मिक योगी पन्यास श्री भद्रंकर विजयजी म. सा. के इस उपदेश का सदैव मनन करना चाहिये कि परमात्मा के नाम का दस हजार बार स्मरण करने से जो लाभ नहीं होता है, वह एक बार परमात्मा की प्रतिमा का आलम्बन करने से हो सकता है। अतः आत्मा का कल्याण, जीवन को सुखी बनाने एवं मनुष्य जीवन को सार्थक बनाने का उपाय परमात्मा दर्शन ही है। "परमात्मा के दर्शन से पाप/अशुभ कर्मो का नाश होता है, परमात्मा का दर्शन स्वर्ग की सीढ़ी है और मोक्ष का परम कारण है" महान आध्यात्मिक योगी परम पूज्य आचार्य श्रीमद् कलापूर्णसूरीश्वरजी म. सा. का यह उपदेश आत्मा का परमात्मा से मिलन ही है।

परमात्मा दर्शन से ही आपसी दूरी कम हुई है एवं सभी ने समन्वय का मार्ग अपनाया है। धर्माचार्यो की तरह जैन समाज की विभिन्न सम्प्रदायों के व्यक्तियों ने परमात्मा दर्शन करना प्रारम्भ किया है। इससे सम्प्रदायवाद कम हुआ है। "जित की भैरी" १५ मार्च १९९० में स्थानकवासी समाज के संघ मन्त्री एवं विद्वान लेखक श्री जीतमल चोपड़ा के विचार सराहनीय है - स्थानकवासी समाज में संघ निकालने की कोई परम्परा नहीं थी। वह भी पड़ोस से अपनाई गई और बड़े बड़े संघ निकालते है। अक्षय तृतीया के पारणे भी इन्हीं की देन है। पालीतणा, गिरनार, यहाँ तक की नाकोड़ाजी बसे की बसे ले जाना आज का रिवाज सा बन गया है। इस प्रकार मूर्तिपूजक समाज की अनेक प्रणालियों को स्थानकवासी समाज ने सहर्ष अपनाया है। क्या ही अच्छा हो कि ये निराकार ही आकार पूजा कर रहे हैं तो कम से कम मूर्तिपूजकों के साथ तो समन्वय कर लेना चाहिये ताकि संगठन की बहुत बड़ी समस्या सुलझ सके व जैन समाज का बिखराव कम हो सके।

यद्यपि स्थानकवासी एवं मूर्तिपूजकों के समन्वय के प्रयास की गति धीमी है लेकिन परिणाम सनूतोषजनक है। समन्वय का इससे बड़ा प्रमाण क्या होगा? कि पंजाब केसरी आचार्य श्री वल्लभसूरीश्वरजी म. सा. की सम्प्रदाय के वर्तमान गच्छाधिपति आचार्य श्रीमदविजयइन्द्रदिन्नसूरीश्वरजी म. सा. आदि ठाणा १७ ने वर्ष १९९० का चातुर्मास जालन्धर (पंजाब) के स्थानक में किया। इतना ही नहीं हमारे स्थानकवासी भाईयों ने प्रत्येक धार्मिक अनुष्ठान में सराहनीय सहयोग तो दिया ही साथ ही स्थानक में मूर्ति विराजमान करने का सुझाव भी। जालन्धर के स्थानकवासियों की समन्वय की यह कार्यवाही सराहनीय है। कागजी कार्यवाही की अपेक्षा रचनात्मक सहयोग से समन्वय की कड़ी को, और मजबूत करना ही है। आपसी समन्वय का एक मात्र मार्ग परमात्मा दर्शन है, जिससे हमारी भावनायें शुद्ध होती है।

★★★★★

एक नजर इधर भी

अच्छे गुणों का भी कोई दोष के रूप में प्रचार करे तो क्या किया जाय ?

अच्छे गुणों का होना स्वयं एक प्रमाण-पत्र है....अतः लोग उसकी प्रशंसा करे, ऐसी भावना ही दिल में नहीं रखनी चाहिये। प्रशंसा की तृष्णा व्यक्ति को कार्य के प्रति निष्ठा, एकरूपता, परिश्रमता एवं समर्पणभाव से दूर ले जाती है। फल स्वरूप उसकी नजर प्रशंसा के पात्र बनने की ओर विशेष होती है, जिसकी पूर्ति न होने पर उत्तम कार्य भी दोषयुक्त बनने की संभावना रहती है। निष्काम भाव से किये जाने वाले अच्छे कार्य से मन को तृप्ति व आनंद की अनुभूति होती है

जिनकी वृत्ति दोष निकालने की होती है, वे तो दोष निकालने के लिये कोई बहाना ढूंढ ही लेते हैं। उन्हे चंद्र में भी दाग दिखायी देता है, गुलाब के फूल को छोड़कर कांटे पर ही उनकी दृष्टि जाती है। ऐसे लोग तो कुछ करने पर दोष निकालेंगे व कुछ नहीं करने पर भी निष्क्रियता व प्रमाद का प्रमाणपत्र देने के लिये तैयार रहेंगे।

लोगों का मापदंड विशेषकर स्वार्थप्रेरित होता है। उन्हे सद्‌गुणों का उतना महत्व नहीं होता, जितना यह महत्वपूर्ण होता है कि ये सद्‌गुण उनकी स्वार्थसिद्धि में कितने काम लग सकते हैं। इसी गिनती में उनका रस होता है। अच्छे गुणों का कोई दोष के रूप में प्रचार करे तो ऐसे निंदक की निंदाजनक प्रवृत्तियों को लेशमात्र भी ध्यान में लिये बिना सत्कार्य के उत्साह में सहज भी स्खलना लाये बिना अपनी प्रवृत्ति को आगे बढाना चाहिये। ऐसे लोगों के प्रति क्षमाभाव रखना ही श्रेयस्कर है क्योंकि पूरी दुनियाँ के सामने तो हम सत्य हकीकत रख नहीं सकेंगे, या समाधान कर नहीं सकेंगे। सत्य अपने बल पर टिकता है और उसमें श्रद्धा रखने वाला कभी घबराता नहीं। सद्‌गुणी भी जो निंदक की निंदा करने लगेगा, तो फिर उसमें सद्‌गुण रह कहाँ जायेंगे? निंदक पर आक्रमक बनना अर्थात् अपने में सहिष्णुता की कमी है। जब आंधी आती है, तभी मनुष्य के आत्मबल की कसौटी होती है। सद्‌गुणों के विरूद्ध जब निंदा की आंधी उठती है तब सद्‌गुणों के प्रति अडिग रहते हुए अपने व्यक्तित्व को विशेष उज्जवल बनाने का प्रयत्न होना चाहिये।

इस प्रकार लोग क्या कहेंगे, इस दुविधा में पड़े बिना मंगलमय शुभ कार्यों के प्रति निष्ठापूर्वक आचरण करते हुए प्रवृत्त रहना, यही एक मात्र श्रेष्ठ उपाय है।

'धर्ममित्र'

अध्यात्म-कल्पद्रुम : सरल अध्ययन

—श्री लक्ष्मीचंद्र सरोज (एम.ए)

रुपरेखा :—

(१) ग्रंथ — अध्यात्म कल्पद्रुम। (२) कवि — मुनिसुन्दर सूरि।
(३) भाष्यकार — धनविजयगणि, रत्नचंद्रगणि
(४) विवेचक — मोतीचंद्र गिरधरलाल कापड़िया
(५) प्रकाशक — महावीर जैन विद्यालय गोवालिया टैंक रोड मुम्बई २६.
(६) भाषा — मूलतः श्लोक संस्कृत में टीका गुजराती। (७) विद्या — स्फुटकाव्य संग्रह
(८) पृष्ठ संख्या — ४०० (९) प्रकाशक वर्ष — १९६५ (१०) संस्करण — पंचम।
(११) अन्य सातव्य — छपाई सफाई कागज जिल्द विषय विवेचन बढ़िया।

ग्रंथ-विषय :—

अध्यात्मकल्पद्रुम ग्रंथ १६ अधिकारों में विभाजित है। इन सोलह अधिकारों में कुल २६६ श्लोक हैं। सभी श्लोक विषय वस्तु परक हैं। विराग और यतिधर्म पर विशेषतया बल दिया गया है। ग्रंथ आद्योपान्त अध्यात्मप्रधान है। इसे निस्संकोच किसी को पठनार्थ-पाठनार्थ दिया जा सकता है। भर्तृहरि की वैराग्य शतक की अपेक्षा औसतन पाठक अध्यात्म कल्पद्रुम पढ़ना अधिक पसंद करेंगे। कारण-विषय की विविधता है और अध्यात्मवाद की सम्पुष्टि। सभी श्लोक पुनः पुनः पठनीय, मननीय चिंतनीय, स्मरणीय, संग्रहणीय, आचरणीय हैं।

१.	समता	(२३)	९.	चित्तदमन	(१७)
२.	स्त्री ममत्व मोचन	(८)	१०.	वैराग्योपदेश	(२६)
३.	अपत्य ममत्व मोचन	(४)	११.	धर्मशुद्धि	(१४)
४.	धन ममत्व मोचन	(७)	१२.	देव-गुरु-धर्म-शुद्धि	(१७)
५.	देह ममत्व मोचन	(७)	१३.	यति-शिक्षा	(५७)
६.	विषय प्रमाद त्याग	(९)	१४.	मिथ्यात्वादि निरोध	(२२)
७.	कषाय-निग्रह	(२१)	१५.	शुभवृत्ति	(१०)
८.	शास्त्राभ्यास	(१६)	१६.	साम्य सर्वस्व	(८)

मुनि सुन्दरसूरि —

आप तपगच्छनायक युगप्रधान थे। आपने मोक्षसाधक शांतरस समुद्र सदृश 'अध्यात्मकल्पद्रुम' लिखा। यह लोक-परलोक में अनंत आनंद का साधन है। जो परमार्थ का इच्छुक है, वह इसका श्रेष्ठ पाठक है। ग्रंथ की विषय-विवेचन प्रणाली छन्द योजना को दृष्टि-पथ में रखते हुए कहा जा सकता है कि आपने यह ग्रंथ अध्ययन अनुभव-अभ्यास के उपरांत प्रोढ़ावस्था में लिखा होगा।

मुनि सुंदरसूरि का जन्म सन् १३८० में हुआ पर आप किस नगर-परिवार-कुल के भूषण थे? आपने किस ग्रंथ को कहाँ-किस क्रम से लिखा? ऐसे विविधप्रश्न अभी अनुत्तरित ही

हैं। आपके दीक्षागुरु मुनि सोमसुंदरसूरि थे (जो आपसे सिर्फ सात वर्ष बड़े थे, जिनके आचार्यपद उत्सव के उपलक्ष्य में सोम सौभाग्य काव्य लिखा गया था) आप असाधारण विद्वान थे। आपकी स्मरणशक्ति तीव्र थी। आप एक ही सहस्त्रावधानी थे। आपकी बुद्धि में व्याप्त तर्क जाल वादियों को काक सदृश भगा देता था। विश्व में भले कोई निर्दोष विद्या-कला न हो पर आपकी बुद्धि सभी विद्या-कला में अग्रगण्य थी। आपके सवा सौ-वर्ष बाद हीरविजयसूरि हुए थे। आप चमत्कारी थे।

आपने एक से अधिक ग्रंथ लिखे। त्रिदशतरंगिणी, उपदेशरत्नाकर, अध्यात्मकल्पद्रुम, स्तोत्र रत्नकोष, मित्र चतुष्क कथा, शांतिकर स्तोत्र, **पाक्षिक-अंगुल-वनस्पति सितरी,** तपागच्छपट्टावली, शांतरस रास, आपके लिखे कहे जाते हैं। कुछ रेखांकित तीन सित्तरी आपकी रचनाएँ नहीं मानते हैं। कुछ त्रैविद्यगोष्ठि, जयानंदचरित्र, चतुर्विंशिंति जिनस्तोत्र सीमन्धर स्तोत्र के कर्ता भी आपको मानते हैं। आपका अध्यात्म कल्पद्रुम श्रावकों और साधुओं के लिए आदर्श है। आपने सुख शांति, संतोष-समृद्धि हेतु पर्याप्त परिश्रम किया था।

विवेचना की परिधि :—

मानव जीवन में निरंतर चिंतवन करने योग्य यदि कोई भावना है तो वह समता है। समता के हाथ-पैर जैसी चार भावनाएँ हैं:— १. मैत्री, २. प्रमोद, ३ करुणा, ४. माध्यस्थ भाव। एक वाक्य में समता की भावना आदर्श (Ideal) है, उसमें जो मानसिक संतोष (consicious satisfaction) है वह अपूर्व आलौकिक नूतन सर्वोत्तम अनुभूत है। इसलिए मुनि सुंदरसूरि समता के सुख का अनुभव करने के लिए स्वर्णोपदेश देते हुए कहते है कि हे मन्! तूं एक क्षण के लिए तो सभी प्राणियों पर समता पुर्वक हितचिंतारुप मैत्री भाव तो रख, तू इस भव में और परभव में इतना सुख पावेगा कि सम्हालते या अनुभव करते नहीं बनेगा।

विश्व जन्तुषु क्षणमेकं, साम्यतो भजसि मानस! मैत्रीं।
तत्सुखं परमत्र परत्राप्यश्नुषे न यद भूत्तव जातु।।

चूंकि स्त्री पुरुष के गले में बँधी शिला है, अतएव स्त्री के शरीर में अरमणीयता देखे-लेखे बिना न शुभधर्म होगा और न सत्कर्म होगा। जितने भी साधक पराजित हुए. जितने भी युद्ध हुए. उनमें प्रत्यक्ष या परोक्ष रुप से स्त्री कारण रही। जिसे संसार-समुद्र से पार होना हो वह स्त्री के ममत्व का त्याग करे और आत्म कल्याण में लगे। सूरिजी का हमें सत्परामर्श यह है कि है विद्वानः तूं स्त्रियों की वाणी में, मधुर स्नेह में मोह मत कर, उन्हें प्राप्त करनें की इच्छा मत कर। क्या तूं इस बात को नहीं जानता कि संसार रुपी समुद्र में पड़े प्राणियों के लिए स्त्रियां गले बांधी शिला ही हैं। स्त्री, पुरुष के मार्ग में बाधा है।

मुह्यसि प्रणय चारु गिरासु प्रीतित: प्रणयिनीषु कतिंस्तवम्।
किं न वेत्सि पततां भववारिधौ तां नृणां खलुशिला गल बद्धा।।

अध्यात्मविद के लिए समता जितनी जरुरी है ममता उतनी ही अनावश्यक है। जैसे स्त्री का ममत्व बाधक है, वैसे संतान का ममत्व भी बाधक है। पुत्र-पुत्री बंधन है, शल्य हैं, संसार वर्धक है। स्त्री के उदर में एक कीड़े सदृश हैं। यह भूलाकर मनुष्य अपना अहित करता है। संतान को अशक्त अथवा आपत्ति ग्रस्त देखकर मनुष्य धर्म की दिशा में नहीं बढ़ता है। संतानविषयक संबंध की अनित्यता को नहीं स्वीकारता, भावी प्रत्युपकार की लालसा लिए उन्हें छोड़ता नहीं। आधुनिक-अदालतों के संदेह लाभ सदृश उन्हें स्वयं के सान्निध्य का लाभ देता हे जीवात्मन्। तूं पुत्र-पुत्री पर स्नेहवान मत हो अन्यथा नरक पावेगा।

न्नाणा शक्तेरावदि संबंधानत्यतो मिथोऽऽङ्गवताम्।
सन्देहाच्चोपकृतेर्मा ऽ पत्येषु स्निहो जीव!

पैसा, पाप का मूलभूत कारण है। पैसा, लोक-परलोक में दुःख का कारण है। धन से सुख नहीं दुःख ही बढ़ता है। धर्म के लिए धन का व्यय उत्तम और सार्थक है। सुंदरसूरि का सुंदरतम स्वर्णोपदेश यह है कि जो पैसा शत्रुओं का उपकार करे, जो पैसा तिर्यंच या नरकगति में ले जावे, जो पैसा आपत्ति या मरण में साथ नहीं दे उसके ऊपर मोह कैसा? उसकी छाया से जितना बचा जावे उतना श्रेयस्कर है।

यानि द्रिषामप्युपकारकामि, सर्वोन्दुरादिष्वपि यैर्गतिश्च।
शक्याच नापन्मरणामयाद्या, हन्तु धनेष्वेषु क एव मोहः ।।

पाप से शरीर का पोषण अनुचित है। शरीर के कारागार से छूटने का प्रयत्न अतीव आवश्यक है। देह की अधीनता में आत्मिक सुख नहीं है, आत्मिक सुख तो देह से स्वाधीनता में है। शरीर अपवित्र है, किराये के मकान सदृश है। आचार्य श्री कहते हैं कि शरीर के उपर मोह करके तूं पाप करता है, तुझे ज्ञात नहीं कि शरीर के कारण-संसाररुपी समुद्र में गोते खाना पड़े। लोहे की संगति से अग्नि को भी हथौड़े की चोटें सहना पड़ती है। इसलिए तूं तो आकाश की तरह आश्रय-रहित हो जिससे तेरी आत्मा को शरीर के संपर्क से दुःख नहीं सहना पड़े।

देहे विमुह्य कुरुषे किमघं न वेत्सि, देहस्यएव भजसे भव दुखजालय्।
लोहाश्रितो हिसहते घनघातमविन, बधि नें तेऽस्य नमोवदनाश्रयत्वे।।

विषय सुख पराधीन है और परिणामतः हानिकारक है। संसार का सुख बिंदु सदृश है और स्वर्ग तथा मोक्ष का सुख सरिता-सिंधु सदृश है। सुख की दिशा में विषय विषम दुख ही देते हैं। संसार और मोक्ष के सुख में पृथ्वी और आकाश जितना अंतर है। सूरिजी समझाते हैं — संसार में इन्द्रियों का सुख है जो बिंदु सदृश है पर स्वर्ग और मोक्ष का सुख तो अतीन्द्रिय है, समुद्र सदृश है। दोनों सुखों में परस्पर विपरीतता है। हे बंधु। विचार कर दोनों में से एक को चुन, जो श्रेष्ठ सुंदर शाश्वत हो।

यदिन्द्रियार्थैरिह शर्म विन्दुवद्यदर्णवत्स्वः शिवगं परत्र च।
तयोर्मिथः सप्रतिपक्षता कृतिन्! विशेष दृष्ट्यान्यतरद् गृहाण तत्।।

संसार के वृक्ष का मूल कषाय है। कषाय आत्मा को कसती है, दुःख देती है। कषाय के साथ विषय वासना का त्याग भी अभीष्ट है। क्रोध, त्याग करनेवाला योगी मोक्ष पाता है। मान का त्याग करके ही बाहुबली ने मोक्ष पाया था। मायाचार त्यागे बिना मुक्ति संभव नहीं है। लोभ क्षोभ का जनक है इस सूर्य सत्य को भूलाकर मनुष्य लोभ के लिए सब कुछ करता है। कषाय करने से एक नहीं अनेक कठिनाईयाँ हैं। सुंदरजी समझाते हैं कि कषाय करने से मित्र शत्रु होता है, धर्म मलिन होता है, यश अपयश होता है, माता-पिता, संबंधी और बांधव प्रेम करना छोड़ते हैं। कषाय के कारण जीवात्मा लोकपरलोक में विपत्तियां पाता है—

शत्रू भवन्ति सुहृदः! कलुषी भवन्ति धर्मा यशांसि निचिता यशसी भवंति।
स्निह्यंति नैव पितरो ऽ पि च बान्धवाश्च लोकद्वये ऽ पि विपदो भविनां कषायै!।।

जिन शास्त्रों में सांसारिक चारों गतियों के दुखों का वर्णन है, उन्हीं शास्त्रों में चारों गतियों से छूटने के उपाय भी उल्लिखित है। शास्त्र के अभ्यास के साथ संयम रखने में ही सच्चा ज्ञान है। शास्त्र

अपनी प्रशंसा के लिये नहीं बल्कि परलोक हित के लिए ही पढ़ें।

अधीति मात्रेण फलंति नागमा:, समीहितैर्जीव सुखैर्भवान्तरे।
स्वनुष्ठितै: किं तु तदीरितै: खरो, न यत्सिताया वहन श्रमात्सुखी।।

अभ्यासमात्र से आगम अन्य जन्म में सुख रुप नहीं फलता है किंतु आगम के अनुकूल आचरण करने से आगम सुख-फल देता है। जैसे गधा शक्कर का बोझा लादने से सुखी नहीं होता है वैसे ही आचरण-विहीन शास्त्रीय मान सुखद नहीं होता है।

मनरुपी धीवर का विश्वास मत करो। मन रुपी मित्र को अनुकूल बनाओ। मन पर अंकुश रखो। कारण, संसार-भ्रमण का मूलभूत कारण मन ही है। मन के निग्रह के लिए यम-नियम स्वीकारो।

मन का निग्रह किये बिना जप-तप व्यर्थ है। मन के भाव के साथ ही पुण्य और पाप का संबंध जुड़ा है। मन के निग्रह से मोक्ष होगा। मन के निग्रह के लिए बारह भावनाओं का चिंतवन श्रेष्ठ है। जहाँ मनरुपी सिंह जाग्रत है वहाँ दुर्ध्यान रुपी सूअर कैसे आ सकता है? यह बात आचार्य प्रवर ने निम्नलिखित श्लोक में इस प्रकार लिखी है:—

भावना चरिणामेषु, सिंहेष्विव मनोवने।
सदा जाग्रत्सु दुर्ध्यान-सूकरा न विशन्त्यपि।।

वैराग्य, आत्मा का हितैषी है। लोक रंजन नहीं आत्मरंजन ही अपेक्षित है। किसी भी प्रकार का धमंड अनुचित है। धर्म से दुख का नाश होता है। दुख का मूलभूत कारण प्रमाद है। प्रत्येक इन्द्रिय की उच्छ्रंखलता मनुष्य को मृत्यु के मुख में धकेलती है। सुख की प्राप्ति का उपाय धर्म है। सुख के साधनों में धर्म ही शीर्षस्थ है। समझदार जीवात्मा धर्म के लिए प्राण छोड़ते हैं और बेसमझ जीवात्मा प्राणों के लिए धर्म छोड़ते हैं।

धनांग सौख्य स्वजनानसूनपि त्यज त्यजैकं न च धर्म मार्हतम्।
भवन्ति धर्माद्धि भवे भवे ऽ र्थितान्यमून्यमीभि: पुनरेष दुर्लभ:।।

पैसा, सुख, शरीर सगे संबंधी प्राण छोड़ दे परंतु वीतराग अर्हत द्वारा बताए धर्म को नहीं छोड़े। पैसा, सुख, शरीर सगे संबंधी तो धर्म के प्रभाव से चाहे जब मिल सकते हैं परंतु धर्म का मिलना अतीव मुश्किल है। इसलिए है आत्मन्। कषाय-प्रमाद, कदाग्रह-कुमत्सर से बच। अपनी आत्मा कलुषित मत कर। क्या तुझे नरक जाने का भय नहीं?

शिथिलता, मत्सर, कदाग्रह, क्रोध, अनुचितदम्य, अनधिकृत गौरव, प्रमाद, अभिमान, कुगुरु-कुसंग, आत्म-प्रशंसा-श्रवण, इच्छा आदि से धर्म मलिन होता है। इनके विपरित कार्यों से धर्म विमल होता है। शुद्ध पुण्य आचरण से जीवन उज्जवल होता है। सुंदरसूरि का अभिमत है कि शुद्ध पुण्य थोड़ा भी बहुत है और अशुद्ध पुण्य बहुत भी थोड़ा है—

मंत्र प्रभारत्न रसायनादि निदर्शनादल्प मणीह शुद्धम्।
दानार्चनावश्यक पौषधादि, महाफलं पुण्यमितो ऽ न्यथा ऽ न्यत्।।

मंत्र, प्रभा, रत्न, रसायन (दृष्टांत), दान, पूजा आवश्यक पौषध (धर्मक्रिया) बहुत थोड़ी हो पर शुद्ध हो तो महाफलदायक है। बहुत हो और अशुद्ध हो तो मोक्ष रुपी फल नहीं मिलता है।

सदगुरु प्रमुख है, वंदनीय है, कुगुरु अनावश्यक है। मोक्ष की प्राप्ति के लिए शुद्ध देव, धर्म, गुरु का आश्रय लो। कारण शुद्ध देव-गुरु-धर्म मोक्ष नहीं देते हैं। जो धर्म की दिशा में लगावें वे

ही वस्तुतः माता-पिता है। सुगुरु सिंह सदृश है, कुगुरु सियार तुल्य है। देव, धर्म, गुरु पर अंतरंग से प्रीति करो। जो गुरु पाकर भी प्रमाद करे वह बड़ा अभागा है। यह सत्य अध्यात्मकल्पद्रुम में इस प्रकार समझाया गया—

पूर्णे तयो तृषितः सवैव भृतेऽपि गेहे क्षुधितः समूर्खः
कल्पद्रुमे सत्यपि ही दरिद्री गुर्वादि योगे ऽ पि हि यः प्रमादी।।

गुरुदेव को पाकर भी जो प्राणी प्रमाद करते है, वह पानी भरे तलाब को पाकर भी प्यासा मरता है, धन-धान्य से भरपूर घर पाकर भी मूर्ख भूख से मरता है, कल्पवृक्ष को पाकर भी दरिद्रनारायण ही रहता है।

मुनि को भावनात्मक स्वरुप अतीव आवश्यक है। वेश मात्र से न कोई साधु होता है और न मोक्ष ही पाता है। निर्गुण मुनि की भक्ति से कोई लाभ नहीं। निर्गुण मुनि पाप बंध का कारण है। निर्गुण होकर भी ख्याति-स्तुति चाहना तो भयंकर मूर्खता है। धर्मोपकरण की मूर्छा परिग्रह है। परिषह सहन करने से ही संवर होगा। संयम से सुख मिलेगा और प्रमाद से दुख मिलेगा। यह बात इस प्रकार समझाई गई —

यस्य क्षणोऽपि सुरधाम सुखानि पल्य-कोटिर्न्र्णां द्विनवतीं ह्याधिकां ददाति
किं हारयस्य धम! संयम जीवित तत्, हा हा प्रमत्त! पुनरस्य कुतस्तवनप्ति।।

जो क्षण भर का संयम करोड़ों पल्य का दैवी सुख देता है उसे नीच प्रमादी! तू क्यों छोड़ रहा। पागल! तुझे संयम की प्राप्ति फिर कब होगी? इसलिए संयम के बिना जीवन की एक घड़ी भी नहीं बीते। यह भावना उत्तरोत्तर बढ़ा।

संसार में भटकने का मूलभूत कारण मिथ्यात्व है विपरीत मान्यता है। सुदेव, सुधर्म, सुशास्त्र, सुगुरु की उपेक्षा करके कुदेव, कुगुरु, कुधर्म, कुशास्त्र को मान्यता देना है। मिथ्यात्व का त्याग किए बिना सम्यक्त्व नहीं होगा और सम्यक्त्व बिना सम्यग्ज्ञान, सम्यग्चारित्र तथा मोक्ष भी नहीं होगा। मिथ्यात्व का बंध नहीं हो, इस हेतु संवर की आवश्यकता है और संवर, मन, वचन, काया तथा इन्द्रियों की अन्यथा प्रवृत्ति को रोकने से बढ़ेगा। मन वश में नहीं करने से तन्दुल मत्स्य सातवें नरक में गया। मन के वेग को प्रसन्नचंद्र नहीं रोकते तो नरक जाते, रोका तो मोक्ष के कारण बने। अन्यथा वचन कहने से वसुराजा लोकनिंद्य हो नरकगामी हुआ वचनगुप्ति को स्वीकार कर तीर्थंकर केवलज्ञान नहीं होने तक मौन रहते हैं। दुर्वचनों के भयंकर परिणाम निकलते हैं। इसे अध्यात्मकल्पद्रुम में यों समझाया—

इहामुत्र च वैराग्य, दुर्वाचो नरकाय च।
अग्निदग्धा प्ररोहन्ति, दुवग्दिग्घा पुनर्न हि।।

दुष्ट वचन लोक-परलोक में पैर बढ़ाते हैं, नरक पहुंचाते हैं। अग्नि से जला हुआ तो उग सकता है परंतु दुर्वचनों से जला हुआ नहीं।

अशुभ (पाप) से बचने के लिए शुभ (पुण्य) वृत्ति अतीव आवश्यक है। स्वाध्याय के साथ स्वात्म निरीक्षण अनिवार्य है। मैत्री, प्रमोद, करुणा, मध्यस्थता, में लय होना अपेक्षित है। मोहरुपी सुभट को पराजित कर जो शुभ-शुद्ध प्रवृत्ति करते हैं, वे मोक्ष-महल भी पा लेते हैं।

इति यतिवर शिक्षांयो ऽ व धार्यय व्रतस्थ—

श्चरण करण योगानेक चित्तः श्रयेत।
सपदि भव महाब्धिं क्लेशराशिं स तीर्त्वा—
विलसति शिव सौख्यानन्त्य सायुज्य माप्यः॥

मुनिवरों की शिक्षा को स्वीकार कर जो व्रतचारी एकाग्रचित्त होकर चारित्र, क्रिया, योग स्विकारते हैं वे संसाररुपी समुद्र को पारकर मोक्ष का अनन्त सुख प्राप्त करते हैं।

समता का फल मोक्ष है। समता, अविद्या के त्याग से होती है। सुख-दुख का मूलभूत कारण समता-ममता है। मोक्ष की प्राप्ति के लिए समतारुपी अमृतरस अतीव आवश्यक है। समतारस की प्राप्ति के लिए प्रयत्न पूर्वक गुरु की उपासना करें, शास्त्र का अभ्यास करें, तत्वचिंतन करें। इससे समता-सुधा की प्राप्ति होगी—

तमेव सेवस्व गुरुं प्रयत्नाद धीष्व— शास्त्राण्यपि तानि विद्वन।
तदेव तत्वं परिभावयात्मन!— येभ्यो भवेत साम्य सुधो वयोगः॥

शांतरस से प्लावित, अध्यात्म ज्ञान रुपी कल्पवृक्ष सदृश-अध्यात्मकल्पद्रुम को मुनि सुंदरसूरि ने अपने और अन्य के हित के लिए ब्रह्म (ज्ञान-क्रिया) प्राप्ति की इच्छा से बनाया। कर्ता ने अपना नाम विषय प्रयोजन यों बतलाया—

शान्तरस भावनात्मा, मुनिसुन्दरसूरिभिः कृतो ग्रंथः ।
ब्रह्म स्पृह्या ध्येय, स्व पर हितो ऽ ध्यात्म कल्पतरुरेषः॥

❖ ❖ ❖

बोधकथा

उधार मांगने नहीं आया हूँ

श्री राजकुमार जैन

'कर्वे महिला विद्यापीठ' के संस्थापक आचार्य अण्णा साहब कर्वे रोजाना एक भोजनालय में खाना खाया करते थे। एक दफा भोजनालय के संचालक नागोपंत को टी. बी. हो गई। आचार्य कर्वे ने नागोपंत को पांच रुपये उधार दिए थे। बीमारी अधिक बढ़ जाने के कारण नागोपंत भोजनालय बन्द करके अपने गाँव लौट गये। कर्वे से उधार लिये हुए रुपये भी वे चुका नहीं सके।

आचार्य कर्वे गर्मी के अवकाश में गाँव गये। नागोपंत की आर्थिक स्थिति काफी शोचनीय हो गई थी। आचार्य कर्वे को अपने घर आया देखकर नागोपंत ने ग्लानि महसूस की कि वे उधार का रुपया अब तक नहीं चुका सके।

कर्वे जी ने सहज भाव से कहा—"नागोपंतजी, आप आश्वस्त रहें। मैं अपना उधार दिया रुपया वापस मांगने नहीं आया हूँ। मैं तो आपकी बीमारी की खबर सुनकर हालचाल जानने और सहायता करने आया हूँ। आप निश्चिंत होकर स्वास्थ लाभ करें। यह कुछ और धन अपने पास रखें।" यह कहकर कर्वेजी ने कुछ और रुपये नागोपंतजी के सामने रख दिए। नागोपंतजी कृतज्ञता से कुछ बोल नहीं सके और उनकी आँखों से आंसू बहने लगे।

दृष्टांत

मनुष्य के प्रकार

—श्री. महेन्द्र जे. संघवी

शास्त्रकार ज्ञानी भगवंतों ने शास्त्रों में चार प्रकार के मनुष्यों का वर्णन किया है। यह समझाने के लिये शास्त्रकारों ने (१) मिश्री की डली पर बैठी हुयी मक्खी (२) शहद पर बैठी हुयी मक्खी (३) श्लेष्म (नाक का बलखम) पर बैठी हुयी मक्खी और (४) पत्थर पर बैठी हुयी मक्खी के साथ मनुष्य की तुलना की है।

मिश्री की डली पर बैठी हुयी मक्खी, मिश्री का स्वाद चुसती रहती है और जब उसका दिल भर जाता है तो वह उड़कर दूर चली जाती है। उसी प्रकार कुछ मनुष्य भी ऐसे होते हैं, जो सांसारिक सुख भोगते हैं, उनमें मौज मनाते हैं परंतु कोई न कोई निमित्त पाकर संसार का त्याग करने में भी देर नहीं लगाते। शालिभद्र और जमालिकुमार भी इसी श्रेणी के जीव थे।

शहद पर बैठी हुयी मक्खी उसकी मिठास पर मुग्ध होकर उसका स्वाद लेने में मग्न हो जाती है। स्वाद लेते-लेते वह उसमें बुरी तरह फँस जाती है। उसे उसमें से निकलने की इच्छा होने और हाथ-पैर मारने के बावजूद वह उसमें से नहीं निकल सकती। ठीक उसी प्रकार कितने ही मनुष्य सांसारिक सुखों को भोगने में इतने लिप्त हो जाते है कि वे अंत तक संसार का त्याग नहीं कर सकते। जैसे : ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती।

श्लेष्म पर बैठी हुयी मक्खी तो सचमुच दया की पात्र है। उसे न तो कोई स्वाद चखने को मिलता है और न ही वह स्वतंत्र रहती है। वह उड़ने की कोशिश करने के बावजूद उड़ नहीं पाती। इसी प्रकार कुछ मनुष्यों की हालत भी ऐसी ही होती है। उनकें इहलोक और परलोक दोनों बिगड़ते हैं। वे सांसारिक सुखों का आनंद भी नहीं ले पाते और संसार के मोह को त्याग भी नहीं सकते। सांसारिक सुखों के पिछे भागने में वे अपना सारा जीवन खो देते हैं। कालसौरिक कसाई इसी तरह का जीव था।

पत्थर पर बैठी हुयी मक्खी को किसी प्रकार का स्वाद नहीं मिलता लेकिन जब चाहे वह वहाँ से पृथक हो सकती है। इस प्रकार के मनुष्यों को सांसारिक सुख प्राप्त नहीं होते। फिर भी उन्हें इस बात का संतोष होता है कि सुख साधन नहीं मिले तो अच्छा है पाप का बंध कम होगा।

उपर के चारों प्रकारों में से हम कैसे हैं? और आगे हमें कैसा बनना है' इसका निर्णय तो खुद हमें ही लेना है।

परिग्रह : आकाश-क्षितिज की भ्रान्ति

श्री. नरेन्द्रकुमार रायचंदजी- मद्रास

फकीर डायोजनीज ने विश्वविजेता सिकन्दर महान से कहा था-" मैं इतना समृद्ध हूं कि कुछ भी संग्रह नहीं करता और तेरी दरिद्रता का अन्त नहीं क्योंकि इस विशाल पृथ्वी का साम्राज्य प्राप्त करके भी तेरी तृप्ति नहीं हुई।" जीवन के अंतिम क्षणो में सिकन्दर को जब संग्रह में छिपी दरिद्रता के दर्शन हुए तब उसने अपनी समस्त सम्पत्ति को एकत्र कर उस पर अश्रुपात करते हुए कहा,"हाय! इस अपार "धन में से एक कौड़ी भी मेरे साथ आनेवाली नहीं है और इसी के लिए मैंने जीवनभर युद्ध किये, लाखों माताओं को पुत्रहीन बनाया और लाखों सौभाग्यवती नारियों का सुहाग लूटा। मैंने कितनी भूल की।" सिकन्दर की अंतिम आज्ञा यही थी कि मुत्यु के पश्चात मेरे दोनों हाथ कफन से बाहर रखना ताकि लोग देख सके कि जगजेत्ता सिकन्दर के हाथ भी खाली है और इससे सबक ले कि जो मूर्खता सिकन्दर ने जीवनभर की, वह हम न करें। धन-सत्ता-साधन के संग्रह से मनुष्य की आत्मा को भी तृप्ति-शान्ति-निराकुलता प्राप्त नहीं हो सकती इसका कितना मर्मस्पर्शी उदाहरण है यह।

हमारा पूरा जीवन ही वासना है, वासना अर्थात कुछ होने की, कुछ पाने की अभिप्सा। वासना यानी जो है उससे एक अन्धी अतृप्ति और जो नहीं है उसकी अन्धी आकांक्षा। आसक्ति और आग्रह ही वासना है। वासना आकाश क्षितिज की भ्रान्ति है, हम जितने उसके निकट पहुँचेंगे वह ठीक उतना ही पुनः हमसे दूर हो जायेगा। इस दौड़ का कोई अंत नहीं क्योंकि जैसे ही जो उपलब्ध हो जायेगा, वह व्यर्थ हो जायेगा और आकांक्षा पुनः अनुपलब्ध पर केन्द्रित हो जायेगी। तृष्णा कभी पूरी नहीं होती क्योंकि हम छाया के इन्द्रधनुष का पिछा कर रहे हैं। जो हमारे निकट ही है वह भूल जाता है, जो दूर है वह हमारे मन को पकड़े रहता है। आकर्षण दूर का है, ढोल सुहावने दूर के हैं निकट आते ही व्यर्थ हो जाते हैं। जैसे ही पाया जाता है, ज्ञात होता है कि हम ठीक वैसे ही दरिद्र, वैसे ही हीन है जैसे पाने के पहले थे इसलिए दुनियाँ की कोई सम्पत्ति, कोई पद, कोई यश, कोई गौरव तृप्ति नहीं देता। जो अपने में सुख नहीं पा सकता, वह दूसरे से सुख पा सकेगा यह असम्भव है। जो कम धन में आनंद अनुभव करना नहीं जानता, अपार धनराशि भी उसको सुखी नहीं बना सकती क्योंकि—

अकांतक्षितानि जन्तूनां, सम्पद्यन्ते यथा-यथा।
तथा-तथा विषेषाप्तौ, मनो भवतति दुखितम्।।

अर्थात मनुष्य को ज्यों ज्यों उसके अभीष्ट पदार्थ मिलते जाते हैं, त्यों त्यों वह अधिकाधिक की कामना करता चला जाता है, परिणामस्वरुप उसका हृदय सदैव असंतुष्ट और दुःखी रहता है। इसलिए सुकरात ने कहा है कि हमारी इच्छाएँ जितनी कम हो, उतने ही हम ईश्वर के समीप है एवं इच्छाओं से उपर उठना ही ध्यान है। कोई जड़ या चेतन पदार्थ सुख या

दुःख नहीं दे सकता। जितना कषायों का उपशम उतना सुख , जितना कषायों का उदय उतना दुःख।

एक बादशाह ने अपने शहजादों को राज्य के लिए आपस में लड़ते-झगड़ते देखकर खिन्न होकर कहा,'' एक कम्बल पर दस फकीर सो सकते हैं मगर एक राज्य में दो बादशाह नहीं रह सकते। एक फकीर के पास यदि एक रोटी है तो वह आधी खुद खाकर आधी किसी भूखे को खिलाकर प्रसन्न होगा, परन्तु किसी बादशाह के पास एक साम्राज्य है तो भी वह दूसरा साम्राज्य हथियाने के लिए बेचैन रहता है। मनुष्य के लिये चित्र विश्लेषण से जो केन्द्रिय तत्व उपलब्ध होता है वह है परिग्रह की दौड़। चाहे धन हो, चाहे यश हो, चाहे ज्ञान हो, प्रत्येक स्थिति में मनुष्य किसी न किसी तरह बाहर की वस्तुओं से ही अपने को भरना चाहता है। क्योंकि वह भीतर से तो एकदम खाली और कंगाल है। संग्रह न हो तो वह स्वयं को स्वत्वहीन अनुभव करता है और संग्रह हो तो उसे लगता है कि मैं भी कुछ हुँ। संग्रह शक्ति देता मालुम होता है और संग्रह स्व या अहं को भी निर्मित करता है। इसलिए जितना संग्रह उतनी शक्ति, उतना अहंकार। जहाँ भी कुछ पाने की आकांक्षा है, वहाँ परिग्रह है फिर चाहे वह आकांक्षा परमात्मा के लिए हो या चाहे मोक्ष के लिए, चाहे निर्वाण के लिए। गहराई से सोचने पर पता चलता है कि किसी भी तरह संग्रह के पिछे सुक्ष्म हिंसा घट रही होती है। धन संग्रह या कुछ वस्त्रादि जैसे स्थुल पदार्थों के रखने को परिग्रह नहीं कहा जा सकता बल्कि इस तमाम वस्तुवादी सभ्यता में आसक्ति या ममता रखना परिग्रह है।

वासना परिग्रह की आत्मा है, लोभ उसका श्वास-प्रश्वास है। कषायो में सबसे अधिक टिकता है— लोभ। क्रोध की अभिव्यक्ति के पिछे लोभ है, मान भी लोभ का ही परिणाम है। मनुष्य बुढ़ा हो जाता है किन्तु लोभ बुढ़ा नहीं होता। लोभ की पूर्ती कभी नहीं होती इसलिए लोभ के साथ क्षोभ लगा हुआ है। महान चिन्तक सिसरो ने कहा है कि यदि लोभ को हटाना है तो पहले उसकी माता विलासता को हटाना होगा आग्रह जहाँ है वहाँ परिग्रह जहाँ वहाँ विग्रह है ही।'' साधारणतः परिग्रह को छोड़ना कठिन है जब तक कि उसके उद्भाव का मूल कारण न जाना जा सके, मूल कारण है स्वयं से अपरिचित रहना। इस अपरिचय और अज्ञान से आत्म- अविश्वास उत्पन्न होता है, आत्म अविश्वास से असुरक्षा अनुभव होती है। असुरक्षा की भावना से बचने के लिए परिग्रह की दौड़ आरम्भ होती है। सम्पत्ति- यश पद-प्रतिष्ठा इन सबसे उस अभाव से पलायन ही हम खोजते है लेकिन अभाव है आन्तरिक और साधन है बाह्य। बाहर के साधन कितने भी जमा करते जाएँ उससे अभाव खत्म नहीं होता।

परिग्रह की वृत्ति स्वयं में रिक्तता से पैदा होती है। जीवन की दो ही दिशाएँ है-परिग्रह अथवा परमात्मा। स्वयं का अभाव है दोनों दिशाओं का प्रारम्भ बिन्दु, उससे भागिए तो परिग्रह की गति शुरु होती है, उसमें डुबिए तो परमात्मा उपलब्ध होता है। परमात्मा उपलब्ध

हो, परम-सत्ता का साक्षात्कार हो तो परिग्रह की वृत्ति सहज ही विलीन हो जाती है। वासना से आत्मा को नहीं पाया जा सकता। **''वासना प्रक्षयो मोक्ष :''** अर्थात वासना का क्षय ही मोक्ष है। शान्ति पदार्थ को नहीं परमात्मा को जानने से आंती है। व्यक्ति के अन्त:स्तल के परिवर्तन के बिना कोई परिवर्तन वास्तविक परिवर्तन नहीं होता। **''अन्तरेवाव भासन्ते स्फुरा : सर्वा : समृध्दय :''** अर्थात भीतर ही सारी समृद्धियाँ स्थित है। यदि उस भीतरी समृध्दि की ओर निगाह उठाकर देख लिया जाए तो बाह्य-समृध्दि का आकर्षण अपने-आप नष्ट हो जायेगा। जीवन का लक्ष्य बाह्य-समृद्धि जुटा लेना नहीं वरना आन्तिरक वैभव को प्रकाशित करना है। केवल भौतिकता का विकास जीवन को शान्त और सुखी नहीं कर सकता। चीजों का बढ़ता जाना पर्याप्त नहीं, हृदय भी बढ़ना चाहिए, मनुष्य की गुणात्मकता परिमाणिकता ही नहीं, उसकी आन्तरिकता का भी विकास होना चाहिये। मनुष्यता की वृद्धि जितनी अधिक होगी, उतनी ही अधिक समस्याएँ कम हो जायेगी। अरविन्द घोष ने कहा है कि ''जीवन में भगवान को अभिव्यक्त करना ही मनुष्य की मनुष्यता है, भगवान को मंदिर में नहीं हृदय में विराजमान करना एवं सांस-सांस में परिव्याप्त करना सच्ची साधना है।'' संसार नहीं संसार के प्रति अपनी दृष्टि बदलनी है। दृष्टि बदली कि सृष्टि अपने-आप बदल जायेगी।

रोग तो शरीर का है।

उपाचार्य श्री देवेन्द्र मुनिजी

रामकृष्ण परमहंस के गले में नासूर हो गया था, प्राणलेवा रोग। यह देखकर उनके परम प्रिय अनुयायी शशधर तर्क चूड़ामणि को बड़ी चिन्ता-पीड़ा हुई। उन्होंने परमहंस से एक दिन कहा—स्वामी जी! आप केवल एक बार अपने मन को केन्द्रित कर उसे आदेश दीजिए कि यह रोग नष्ट हो जाए, ऐसा हो जाएगा, आपमें इतनी शक्ति है।'

परमहंस अपनी परम हंसी मुस्कान के साथ बोले, 'अरे शशधर, तुम तो पण्डित हो। जानते हो कि मुझे अपना यह मन मंगलमयी मां का स्मरण - आराधना करने हेतु मिला है। उस मन को मैं हाड़-मांस के इस नश्वर शरीर में क्यों रमाऊँ?'

चिन्तित शशधर फिर भी निराश नही हुए। बोले—'तो स्वामी जी! इतना तो किजिए कि मां से ही कहिए कि वह आपका रोग दूर कर दे। मां की कृपा से क्या अशक्य है?'

'मां की ही तो कृपा है शशधर, वह दया की आगार, सर्वशक्तिमान है। सब जानती है। जिस बात से मेरा कल्याण होगा, वही तो वह करेगी न? इस रोग से मुक्ति प्राप्त करने के लिए मैं मां से क्या प्रार्थना करूं? यह रोग तो शरीर का है, शरीर के साथ ही चला भी जाएगा। मुझे तो अपनी आध्यात्मिक उन्नति की कामना है। इन छोटी-मोटी नाशवान बातों के लिए मां को क्यों कष्ट दूं?'

परमहंस यह उत्तर देकर समाधिस्थ हो गए—जैसे न उनका कोई शरीर है, न कोई रोग।

ज्ञान कसौटी-७

(स्वाध्यायी पाठक निम्नांकित प्रश्नों के उत्तर पहले क्रमशः कागज पर लिखें, फिर इसी अंक में पृष्ठ **8** पर दिये गये उत्तरों से मिलान करें — संपादक)

(१५१) ज्ञान किसे कहते है?

(१५२) अनुप्रेक्षा कितनी है ?

(१५३) परिषह कितने होते है?

(१५४) चारित्र कितने प्रकार के है तथा कौन- कौन से हैं?

(१५५) 'द्रव्य संग्रह' ग्रन्थ के रचयिता कौन थे ?

(१५६) आचार कितने होते है तथा कौन से हैं?

(१५७) ज्ञानावरण कर्म के नाश से कौनसा गुण प्रकट होता है?

(१५८) दर्शनावरण क्रम के नाश से कौनसा गुण प्रकट होता है?

(१५९) मोहनीय कर्म के नाश से कौनसा गुण प्रकट होता है ?

(१६०) अन्तराय कर्म के नाश से कौनसा गुण प्रकट होता है?

(१६१) वेदनीय कर्म के नाश से कौनसा गुण प्रकट होता है ?

(१६२) आयुष्य कर्म के नाश से कौनसा गुण प्रकट होता है?

(१६३) नाम कर्म के नाश से कौनसा गुण प्रकट होता है?

(१६४) गोत्र कर्म के नाश से कौनसा गुण प्रकट होता है?

(१६५) भगवान अरिष्ठ नेमि (नेमीनाथ) की जन्म तिंथि व जन्म नक्षत्र क्या थे ?

(१६६) भगवान अरिष्ठनेमि के वशं व गौत्र कौनसे थे?

(१६७) भगवान अरिष्ठनेमि के जीव ने किस भव में सम्यगदर्शन प्राप्त किया?

(१६८) भगवान अरिष्ठनेमि का पांडवों से क्या रिश्ता था?

(१६९) भगवान अरिष्ठेनेमि का राजीमती के जीव के साथ सबंध किस भव से था?

(१७०) भगवान अरिष्ठनेमि के साथ कितने पुरूषों ने दीक्षा ली?

(१७१) भगवान अरिष्ठेमि ने दीक्षा लेने के बाद अठ्ठम तप का पारणा कहाँ किया?

(१७२) भगवान अरिष्ठनेमि कितने समय तक छद्मावस्था में रहे?

(१७३) भगवान अरिष्ठेनेमि का दीक्षा, केवलज्ञान एवं निर्वाण स्थान कौनसा है?

(१७४) भगवान अरिष्ठेनेमि की देशना सुनकर सर्वप्रथम किसने दीक्षा अंगीकार की?

(१७५) भगवान अरिष्ठेनेमि कितने वर्षों तक केवली प्रर्याय में विचरण करते रहे?

धारावाहिक -

।। 卐 ।। आचाराङ्ग की सूक्तियाँ (१) ।। 卐 ।।

संकलन-श्री पुखराज भण्डारी

आचारांग-सूत्र का प्रथम श्रुतस्कंध जैन आगम-साहित्य का प्राचीनतम ग्रन्थ है। इसको निर्विवाद रूप से भगवान् महावीर के निकटतम माना गया है। यह सर्वज्ञ वाणी है, यह आप्त वाणी है, भवि जीव को उद्‌बोधित-उत्थित कर निर्वाण की ओर ले जाने वाली पावन वाणी है। आचारांग-निर्युक्ति १६-१७ में निर्युक्तिकार आ. भद्रबाहु (द्वितीय) ने कहा है - 'आचारांग का सार अनुयोग है, अनुयोग का सार प्ररूपता है, प्ररूपता का सार आचरण है, आचरण का सार निर्वाण है, और निर्वाण का सार अव्याबाध (शाश्वत) सुख है।'

आचारांग चारित्रप्रधान ग्रन्थ होते हुए भी दार्शनिक दृष्टि से युक्त है। संशय और जिज्ञासा से उसकी शुरूआत होती है। जिज्ञासा से ही संसार तथा हेय-उपादेय का ज्ञान होता है। ज्ञान से हेय का त्याग, और उपादेय के प्रति श्रद्धा का जन्म होता है। श्रद्धा से ज्ञान, आचरण और क्रमशः निर्वाण होता है।

आचारांग का एक-एक पद, एक-एक शब्द अथाह गांभीर्य और प्रेरक संदेश लिये हुए है। ग्रन्थकार ने गागर में सागर भर दिया है। आइये, कतिपय अनुपम एवं अनमोल सूक्तियों का मुक्ताहार पिरोने का प्रयास करें:-

(१) 'अत्थि मे आया उववाइए, णत्थि मे आया उववाइए। के अहं आसी, के वा इओ चुओ पेच्चा भविस्सामि।। १-१-१-१ ।।'

अर्थ:- मेरी आत्मा औपपातिक जन्म धारण करनेवाली है या नहीं ? मैं पूर्वजन्म में कौन था ? मैं यहाँ से आयुष्य पूर्ण करके कहाँ जाऊँगा ?

(२) 'सो हं से आयावादी लोगावादी कम्मावादी किरियावादी।। १-१-१-३ ।।'

अर्थ:-जो स्वसत्ता को जान लेता है, वही आत्मावादी, लोकवादी, कर्मवादी, क्रियावादी है।

(३) 'तत्थ खलु भगवन्ता परिण्णा पवेदिता।। १-१-१-७ ।।'

अर्थ:-इस कर्मबन्ध के कारणों के लिए भगवान् ने **परिज्ञा-विवेक** का उपदेश दिया है। 'परिज्ञा' के दो भेद हैं :-(१) **ज्ञ-परीज्ञा** - हिंसा के हेतुओं को जानना।

(2) **प्रत्याख्यान-परिज्ञा** - हिंसा के हेतुओं को त्याग देना। वही मुनि परिज्ञात-कर्मा मुनि होता है।

(४) 'एस खलु गंथे, एस खलु मोहे, एस खलु मारे, एस खलु निरए।। १-१-२-१४ ।।

अर्थ:-साधक को भगवान् से या अणगार मुनियों से सुनकर ज्ञान होता है कि जीव-हिंसा

ही ग्रन्थि है, मोह है, मृत्यु है और नरक है। जिसके द्वारा, जिससे या जिसमें बन्धा जाता है, उस कषाय या कर्म को 'ग्रन्थ' (ग्रन्थि) कहते हैं। 'ग्रन्थ' अर्थात् गाँठ। द्रव्य-ग्रन्थ बाह्य-परिग्रह को, एवं क्रोध-मान-माया-लोभ (४ कषाय), राग, द्वेष, मिथ्यात्व, वेद, रति, अरति, हास्य, शोक, भय, जुगुप्सा-रूप १४ प्रकार को 'भावग्रन्थ' कहते हैं। राग-द्वेष, सद्-असद् विवेक का नाश, हेय-उपादेय बुद्धि का अभाव, अज्ञान (विपरीत बुद्धि), मूढ़ता, चित्त की व्याकुलता, मित्थात्व और कषायविषय की अभिलाषा यह सब 'मोह' है। 'मार' का अर्थ मृत्यु' तथा 'नरए' का '**नरक**' है।

(५) '**जाए सद्धाए णिक्खंतो तमेव अणुपालिज्जा विजहिता विसोत्तियं॥ १-१-२०॥**'

अर्थ :-जिस श्रद्धा, निष्ठा, वैराग्य भावना के साथ संयमपथ पर कदम बढ़ाया है, उसी श्रद्धा के साथ संयम का पालन करे। '**विस्रोतसिका**'- अर्थात् लक्ष्य के प्रति शंकाशील या चंचलचित्त न बने। शंका का त्याग कर दे।

(६) '**पणया वीरा महावीहिं॥ १-१-३-२१॥**

अर्थ :-वीरपुरुष **महापथ** (अहिंसा व संयम का प्रशस्तपथ) के प्रति समर्पित होते हैं

(७) '**लोगं च आणाए अभिसमेच्चा अकुतोभयं॥ १-१-३-२२॥**'

अर्थ :-मुनि ज्ञानी की आज्ञा से लोक (सब प्राणियों) को '**अकुतोभय**' बना दे, अभय प्रदान कर दे।

(८) '**लज्जामाणा पुढ़ो पास॥१-१-४-३४॥**

अर्थ :-तू देख! संयमी पुरुष जीव हिंसा में लज्जा (ग्लानि-संकोच) का अनुभव करते हैं।

(९) '**जे गुणे से आवट्टे, जे आवट्टे से गुणे॥ १-१-५-४१॥**'

अर्थ :-जो **गुण** (शब्दादि विषय) हैं, वह '**आवर्त**' (संसार) है, जो आवर्त है, वह गुण है। यह आसक्ति ही संसार कहा जाता है। '**दशवैकालिक**-८/४०' में कहा है—

'**चत्तारि एए कसिणा कसाया सिंचंति मूलाई पुणब्भवस्स।**'

(१०) '**तं से अहियाए, तं से अबोहिए॥ १-१-५-४३॥**'

अर्थ :-यह हिंसा का करना, कराना, अनुमोदन करना उसके अहित के लिए होता है, उसकी अबोधि के लिए होता है।

(११) से बेमि

इमं पि जातिधम्मयं, ए यं पि जाति धम्मयं,
इमं पि वुड्ढिधम्मयं, एयं पि वुड्ढिधम्मयं,
इमं पि चित्तमंतयं, एयं पि चित्तमंतयं,
इमं पि छिण्णं मिलाति, एयंपि छिण्णं मिलाति,
इमं पि आहारगं, एयं पि आहारगं,
इमं पि अणितियं, एयं पि अणितियं,
इमं पि असासयं, एयं पि असासयं,
इमं पि चयोवचइयं, एयं पि चयोवचइयं,

इमं पि विप्परिणामधम्मयं, एयं पि विप्परिणामधम्मयं। ।।१-१-५-४५।।'

● मैं कहता हूँ—

□ यह मनुष्य भी जन्म लेता है, यह वनस्पति भी जन्म लेती है।

□ यह मनुष्य भी बढ़ता है, यह वनस्पति भी बढ़ती है।

□ यह मुनष्य भी चेतनायुक्त है, यह वनस्पति भी चेतनायुक्त है।

□ मनुष्य छिन्न होने पर म्लान हो जाता है, वैसे ही वनस्पति भी।

□ मनुष्य भी आहार करता है, वनस्पति भी आहार करती है।

□ मनुष्य शरीर अनित्य, उसी तरह वनस्पति भी अनित्य है।

□ मनुष्य शरीर की तरह वनस्पति-शरीर भी अशाश्वत है।

□ मनुष्य शरीर आहार से पुष्ट, अभाव से क्षीण (उपचित-अपचित) होता है, वनस्पति भी

□ मनुष्य शरीर अनेक प्रकार की अवस्थाओं को प्राप्त होता है; वनस्पति भी।

**(१२) 'पभू एजस्स दुगुंछणाए। आतंकदंसी अहियंति णच्चा।
जे अज्झत्थं जाणति से बहिया जाणति जे बहिया जाणति, से अज्झत्थं जाणति।
एयं तुलमण्णेसि। इह संतिगता दविया णावकखंति जीविउं।। १-१-७-५६।।'**

अर्थ— साधनाशील पुरुष हिंसा में आतंक देखता है, उसे अहित मानता है। हिंसा से निवृत्त होने में समर्थ होता है।

□ जो अध्यात्म को जानता है, वह बाह्यसंस्कार को भी जानता है। जो बाह्य-संसार को जानता है, वह अध्यात्म को जानता है। इस (स्व-पर की) तुला का अन्वेषण कर, चिंतन कर। इस जिनशासन में जो शांतिप्राप्त (जिनके कषाय उपशमन हो गये हैं) और दयार्द्र मुनि हैं, वे जीव हिंसा करना नहीं चाहते।

(१३) 'एत्थं पि जाण उवदीयमाणा, जे आयारे ण रमंति। आरंभमाणा विणयं वियंति। छंदोवणीया अज्झोववण्णा। आरंभसत्ता पकरेंति संगं। सेवसुमं सव्वसमण्णागतपण्णाणेणं अप्पाणेणं अकरणिज्जं पावंकम्मं णो अण्णेसिं।। १-१-७-६२।।'

अर्थ— तुम यहाँ जानो। जो आचार में रमण नहीं करते, वे कर्मों से-आसक्ति की भावना से बंधे हुए हैं। वे आरंभ करते हुए भी स्वयं को संयमी बताते हैं। अथवा दूसरों को विषय-संयम का उपदेश देते हैं। वे स्वच्छंदचारी और विषयों में आसक्त होते हैं। आरंभ में आसक्त रहते हुए पुनः पुनः कर्म का संग/बंधन करते हैं। वह **'वसुमान'** (ज्ञानदर्शनचारित्ररूप धन से संयुक्त) सब प्रकार के विषयों पर प्रज्ञापूर्वक विचार कर, अन्तःकरण से पापकर्म को अकरणीय जाने, तथा उस विषय में अन्वेषण/चिंतन भी न करे। षट्जीवनिकाय की हिंसा में त्रिकरण से अलिप्त रहे।

क्रमशः

शब्द सागर इनामी स्पर्धा (३)

संकलन - प्रदीप एम. जैन

(प्रस्तुत पृष्ठ काट कर उसमें आवश्यक शब्द भरकर अपने पूरे नाम एवं पते के साथ कार्यालय में भिजवायें। प्रथम विजेता को एक सौ रुपये, द्वितीय को साठ रुपये, एवं तृतीय को तीस रुपये का पुरस्कार अ. भा. श्री रा. जै. न. प. शाखा जोगेश्वरी (बम्बई) के सौजन्य से दिये जावेंगे। उत्तर इसी पृष्ठ में भरकर कार्यालय में १ अगस्त तक पहुँचाना आवश्यक है विजेता के नाम व स्पर्धा के उत्तर सितम्बर अंक में प्रकाशित किये जायेंगे।-सम्पादक)

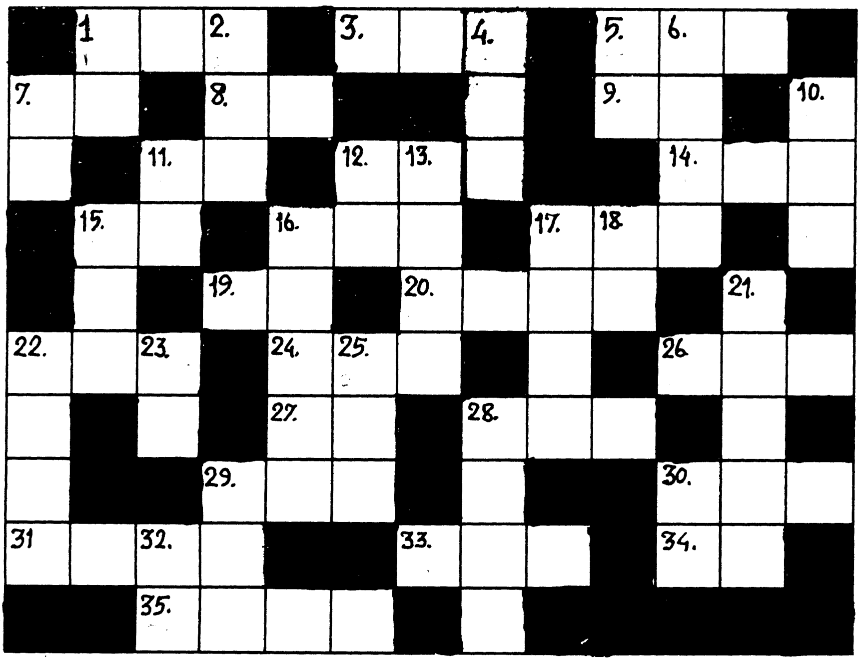

बायें से दांयी ओर.....

(1) ....कुमारने, तपस्या में लीन थे तब श्वसुर द्वारा सर पर मोक्ष की पगड़ी बांधी, उसके लिये धन्यवाद दिया। (3)

(3) भावनगर जिले में स्थित एक तीर्थ यह तीर्थ पालीताणा की पंचतीर्थी में भी आता है। (3)

(5) नमस्कार मंत्र में पंच परमेष्ठी को..............किया जाता है। (3)

(7) इतना बड़ा.........महल, धन, दौलत और वैभव सब कुछ महावीर जी ने ठुकराया था। (2)

(8) दुःखमय इस संसार में धर्म ही आधार है, रास्ते चला जो धर्म के उसका बड़ा..............है। (2)

(9) इन्द्र इत्यादि मिलकर तीर्थंकर भगवंतों का जन्माभिषेक करने.............पर ले जाते हैं। (2)

(12) नौ तत्वों में से एक (3)

(14) जैन धर्म किसी भी देवी............को किसी का भला बूरा करने में सक्षम नहीं मानता (3)

(15) ....काय जीव, यानि पानी (2)

(16) बंधे कर्मों को पुरुषार्थ से अथवा स्वत: कम होना/क्षय होना कहलाता है।(3)
(17) साधु................श्रावक श्राविका के संगठन को चतुर्विध संघ कहते हैं (3)
(19) ....परिपाटी सुबह उठकर तीर्थ पर चलकर दर्शनार्थ जाना (2)
(20) महावीर स्वामी के जन्म से राज्य में धन, वैभव, कीर्ति में वृद्धि होने लगी। इसलिये उनका नाम...........रखा गया। (4)
(22) पापों से अलग होने की भावना, त्याग की भावना (3)
(24) जैन धर्म से हर जीव मोक्ष पा सकता है, इसी बात के कारण यह धर्म सभी धर्मों से..............है। (3)
(26) जिनालय/चैत्य/देरासर (3)
(27) मुनि सुव्रत स्वामी के.............वरुण है (2)
(28) पाप कर्म, बुरे कर्म, वे कर्म जो नर्क में ले जावे। (3)
(29) भोजन में.............आहार विकार पैदा करता है। (3)
(30) मनुष्य धनवान या.............अपने पुण्य और पाप कर्म के फल से होता है (3)
(31) एक प्राचीन तीर्थ रैवताचल का दूसरा नाम (4)
(33) ....तीर्थ वंदु कर जोड़ जिनवर नामे मंगल कोड (3)
(34) यहां कौन है अपना ? जिसने.......को अपना समझा वह भी यहीं रह जाता है। (2)
(35) भगवान महावीर के अग्यारह............थे। (4)

उपर से नीचे की ओर.....

(1) विरा मोरा..........सुं हेटा उतरो,..........चढ़ीयो केवल्य न होये (2)
(2) सातवें तीर्थंकर (3)
(4) कर्मों के बन्धन को.............कहते हैं (एक तत्व) (3)
(5) ....ते सहु ने गमे नम्रता का परिचय (2)
(6) इस काल चक्र में सबसे पहले जो जीव मोक्ष में गया (4)
(7) ....भोजन त्याग, संयम जीवन में पांच महाव्रतों के बाद यही छट्ठी प्रतिज्ञा है। (2)
(10) ओ जिणजी तेरे दर्शन से मेरे सारे रोग, शोक..........मिट जाते हैं। (3)
(11) नो तत्वों में से एक (2)
(12) सेवक प्रभुजी से.......करता है, चरणों की सेवा प्यारी लागे है (2)
(13) भगवान पार्श्वनाथजी का एक तीर्थ (4)
(15) आत्मा...........अमर है। (3)
(16) हमारे...........में मन्दिर जाने का समावेश भी होना चाहिये (5)
(17) 48 मिनीट विरति में रहने की क्रिया को.............कहते है।(4)
(18) जीवन में तीन तरह के मित्र होते हैं, तनमित्र...........मित्र व धर्ममित्र। (2)
(21) भगवान महावीर के बड़े भाई का नाम...........है। (5)
(22) अरिहंत जिनेश्वर तीर्थंकर...........आदि। (4)
(230 तीर्थंकर..............की स्थापना करते हैं। इसलिये वे तिर्थंकर कहलाते हैं। (2)
(25) रावण..........जाति में जन्म लेकर भी जैन धर्म को मानता था। (3)
(28) नाभि राजा तेरहवें.........थे। (4)
(29) अरिहंत देव ही सभी जीवों के............हार हैं। (3)
(30) गुरू गुण को..........उठ कर गाये, यश किर्ती व रिद्धि पाये (2) (गुरु गुण इक्कीसा का अंश)
(32) भगवान पार्श्वनाथ का लांछन..........है। (2)

२ री पुण्यतिथि पर
हार्दिक श्रद्धांजली

आहोर निवासी स्व. धर्मचन्दजी बाफना

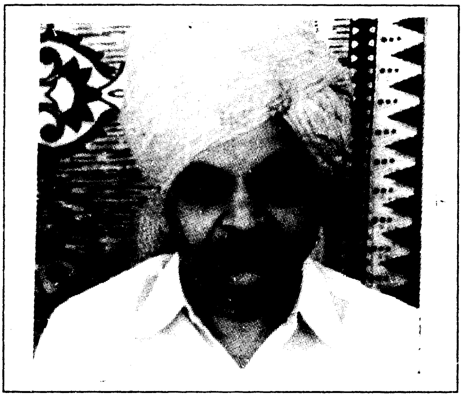

स्वर्गवास-20-5-89

हम है आपके

पुत्र - जयन्तिलाल, कैलाशचन्द्र, विनोदकुमार, प्रवीणकुमार

पुत्री - विमलादेवी, कान्तादेवी

पत्नी - हंजाबाई

पौत्र - राजेन्द्र, जीतेन्द्र, राकेश, रवि, संजय

पौत्री - पिंकी, खुश्बु, डिम्पल, नीलम, सिम्पल, नीकिता, प्रीति

एवं बाफना परिवार

फर्म : (१) रतनाजी मिश्रीमल, गुंडुवारी स्ट्रीट, राजमहेन्द्री

(२) प्रवीण इलेक्ट्रीकल्स, जे. पी. रोड, राजमहेन्द्री

समाचार दर्शन

साध्वीत्रय की निश्रा में
श्री राजेन्द्र-जयन्तसेन सम्यग्ज्ञान कन्या शिविर का आयोजन

साहित्य मनीषी वर्तमानाचार्यदेव श्री जयन्तसूरीश्वरजी की आज्ञानुवर्तिनी साध्वीजी महाप्रभाश्रीजी, साध्वीजी डॉ. प्रियदर्शनाश्रीजी एवं साध्वीजी डॉ. सुदर्शनाश्रीजी की निश्रा में ८ वीं से बी.ए., एम.ए. तक की छात्राओं की दस दिवसीय श्री राजेन्द्र-जयन्तसेन कन्या शिविर का आयोजन २१ जून से ३० जून तक होगा। शिविर आयोजन में आर्थिक सहयोग भीनमाल निवासी शा. विजयराजजी भँवरलालजी मुथा, आहोर निवासी शा. मीठालालजी सरेमलजी कुहाड, जोधपुर निवासी श्रीमती बदामबाई समरथमलजी श्रीश्रीमाल व जोधपुर निवासी श्रीमती भँवरीबहन अमृतलालजी नाहटा का रहेगा। विशेष विस्तृत समाचारों की प्रतिक्षा हैं।

आचार्यश्री मधुकरजी की निश्रा में रतलाम में प्रतिष्ठोत्सव

रतलाम - तीर्थप्रभावक वर्तमानाचार्यदेव श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी, मुनिश्री नित्यानंदविजयजी, मुनिश्री विश्वरत्नविजयजी, मुनिश्री पद्मरत्नविजयजी, मुनिश्री सिद्धरत्नविजयजी, मुनिश्री अपूर्वरत्नविजयजी, मुनिश्री सिद्धरत्नविजयजी, मुनिश्री अपूर्वरत्नविजयजी, मुनिश्री विद्वद्रत्नविजयजी, मुनिश्री नयरत्नविजयजी आदि ठाणा की निश्रा में श्री सुविधिनाथादि जिनबिम्ब एवं श्री गुरु गौतम स्वामीजी, गुरुदेव राजेन्द्रसूरीश्वरजी बिम्ब की प्रतिष्ठा ज्येष्ठ सुदी ११ शनिवार दि. २२-६-९१ को उल्लासपूर्वक संपन्न हुयी। इस अवसर पर आयोजित दशान्हिका महोत्सव में अंगरचना, पूजा, नास्ता व स्वामिभक्ति का लाभ विविध महानुभावों ने लिया।

साध्वीजी हेतश्रीजी की शिष्या साध्वीजी स्वयंप्रभाश्रीजी अपने विशाल शिष्या परिवार के साथ पधारी थी।

दानशीला श्रीमती झमकुबाई सन्मानित

रतलाम—दानवीर सेठ स्व. श्रीमान कन्हैयालालजी काश्यप की धर्मपत्नी एवं सुप्रसिद्ध व्यवसायी व अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री चैतन्यकुमारजी काश्यप की दादीजी श्रीमती झमकुबाई का बहुमान उनकी धर्म प्रवृत्ति व समाज हित में किये गये कार्य व हीरक जयन्ति के उपलक्ष में श्री सौधर्मवृहत्पागच्छ

त्रिस्तुतिक जैन श्वेताम्बर संघ के उपक्रम से दि. २२-६-९१ को प्रातः नीमवाला-उपाश्रय-रतलाम में किया गया।

परिषद द्वारा अ. भा. जैन ज्ञान शिविर का आयोजन

रतलाम—अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद द्वारा प्रतिवर्ष की तरह इस वर्ष भी मध्यप्रदेश में रतलाम से एक किलोमीटर दूर प्रसिद्ध सागोदिया तीर्थ पर १३ जून से २२ जून १९९१ तक दस दिवसीय शिबिर का आयोजन किया गया। विशेष सहयोग श्री कांतिलालजी विजयराजजी संघवी-सियाणा वालों का रहा एवं शिविर संचालन परिषद के धार्मिक शिक्षा मंत्री श्री सुरेन्द्रजी लोढ़ा ने किया। शिबिर समापन समारोह आचार्य श्री जयन्तसेनसूरिजी की निश्रा में २३ जून को सम्पन्न हुआ। विस्तृत समाचारों की प्रतिक्षा है।

साध्वीजी मुक्तिश्रीजी की निश्रा में बैंगलोर में विविध कार्यक्रम आयोजित किये गये

बैंगलोर—साध्वीजी मुक्तिश्रीजी का अपनी शिष्याओं के साथ मद्रास में चातुर्मास पूर्ण कर विविध नगरों में विहार करते हुए २८ फरवरी को बैंगलोर आगमन हुआ। १ मार्च को गुरुणीजी हेतश्रीजी की आठवीं पुण्यतिथि निमित्त उवसग्गहरं पूजन का आयोजन एवं चिकपेट मंदिर से विश्वेसपुरम् व जयनगर जिनमंदिरो की दो चैत्य परिपाटी आयोजित की गयी। आहोर निवासी श्रीमान् शंकरलालजी मेघराजजी द्वारा नवपदजी ओली आराधना एवं सिद्धचक्र पूजन पढ़ाया गया। कुछ कारणवश जिनमन्दिर एवं गुरुमन्दिर का कार्य रुका हुआ था, आपने प्रेरणा देकर शिघ्रातिशीघ्र प्रारंभ करने का आव्हान किया। श्री संघ ने खननविधि, शिलान्यास के चढावे बोलकर निर्माण कार्य प्रारंभ किया।

साध्वीजी ने श्रवणबेलगोला, मैसूर होते हुए कोयम्बतूर चातुर्मास हेतु विहार किया। वहाँ २७-६-९१ ज्येष्ठ सुदी १५ को प्रवेश होगा।

भूतिनयरे जीवित महोत्सव एवं उद्यापन

भूति—प. पू. आचार्य श्री जयन्तसेनसूरीश्वरजी के आज्ञानुवर्ती मुनिराज श्री जयानन्दविजयजी, मुनिराज श्री सम्यग्रत्नविजयजी, मुनिराज श्री हरिश्चंद्रविजयजी आदि ठाणा एवं साध्वीजी श्री स्नेहलताश्रीजी आदि ठाणा की निश्रा में शा मूलचन्दजी रतनचंदजी एवं सौ. शान्ताबेन मूलचंदजी के जीवित महोत्सव एवं वीसस्थानकादि तप के उद्यापन निमित्त श्री सिद्धचक्र एवं समवसरण महापूजन सह अष्टान्हिका महोत्सव ३० मई से ६ जून तक आयोजित किया गया। ३ जून को स्वामीवात्सल्य आयोजित किया गया था।

मुनिराजश्री चेतनविजयजी कालधर्म को प्राप्त हुए

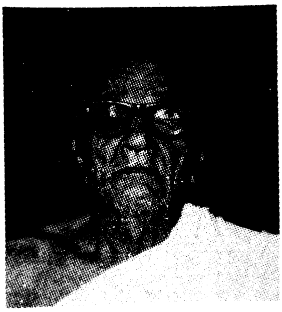

भीनमाल—आचार्यदेव श्री जयन्तसेनसूरिजी के आज्ञानुवर्ती पूज्य मुनिराज श्री चेतनविजयजी ८२ वर्ष की उम्र में ज्येष्ठ वदि १० शनिवार दि. ८-६-९१ को दोपहर १ बजे कालधर्म को प्राप्त हुए।

आपका जन्म राजस्थान प्रांत के जालोर जिले के डूडसी गांव में विक्रम संवत १९६६ की कार्तिक शुक्ला १० को हुआ था। आपके पिता का नाम श्री भीकाजी एवं माता का नाम श्रीमती झमूबाई था। गृहस्थ जीवन में धार्मिक प्रवृत्तियों में लीन रहते हुए आपने वैराग्यभावना को प्रबल बनाया। वि. सं. २०२१ माघशुक्ला ६ को स्व. विद्याचंद्रसूरीश्वरजी के पास आपने भागवती प्रवज्या ग्रहण की थी। आपने मासक्षमण, इक्कीस उपवास, एक सौ आयम्बिल, तीन अट्ठाई, वर्धमान तप ओली (४८ तक) की तपश्चर्याएँ की थी। आप आत्मकल्याण की प्रवृत्तियों में रत शांत व मधुर स्वभाव के मुनि थे।

रविवार की शाम ४ बजे तेरह शिखरों वाली पालखी में पार्थिव देह रखा गया। गांधी मुथा उपाश्रय से पालखी 'जय जय नंदा-जय जय भद्दा' के स्वरों के साथ नगर के विविध मार्गों से होती हुई गोड़ीजी मंदिर के पास प्रांगण में लाई गयी, जहाँ शाम ५-३० बजे पूज्य श्री के सांसारिक परिजनों द्वारा अग्नि प्रगटाकर अंतिम संस्कार किया गया।

स्वर्गस्थ मुनिश्री के अंतिम संस्कार पूर्व कांबळी आदि उपकरण अर्पित करने का लाभ मुथा नरपतराजजी उकचंदजी, श्री जैन संघ आहोर, नाहर सुमेरमलजी केवलजी, सालेचा बगदालालजी पारसजी, दोषी सोमतमलजी, सांवलचंदजी, सेठ जोमतराजजी शिवराजजी आदि महानुभावों ने लिया।

अंतिम संस्कार के बाद गोड़ीजी के प्रांगण में गुणानुवाद सभा आयोजित की गयी, जिसमें शाश्वत धर्म के संपादक श्री जे. के संघवी ने पूज्यश्री के जीवन संदर्भ की जानकारी दी। आंध्रप्रदेश जीवरक्षा संघ के अध्यक्ष श्री मांगीलाल टी. जैन ने पूज्यश्री के संयम जीवन की अनुमोदना करते हुए श्रद्धांजली अर्पित की। अंत में सभी ने १३-१३ नवकार गिनकर मौन रखकर स्वर्गस्थ मुनिराज श्री को श्रद्धांजली अर्पित की।

स्व. पूज्य मुनिराज श्री चेतन विजयजी के स्वर्गवास निमित्त पूज्य मुनिराजश्री जयानन्द विजयजी, सम्यगृरत्नविजयजी, हरिश्चंद्रविजयजी आदि ठाणा की निश्रा में आहोर में जिनेन्द्र भक्ति स्वरुप नव्हान्हिका महोत्सव का आयोजन जेठ सुदि ८ से किया गया।

हॉसपेट (कर्नाटक) में प्रतिष्ठोत्सव

प. पू. आचार्य श्री विजयभुवन तिलकसूरीश्वरजी के शिष्य अशोकरत्नसूरिजी आदि ठाणा ५ की निश्रा में १३ दिवसीय जिनेन्द्र भक्ति महोत्सव के साथ वैसाख सुदि १० को आदिनाथ आदि जिन बिम्ब एवं गुरु मंदिर की प्रतिष्ठा का भव्य आयोजन संपन्न हुआ।

साध्वीजी श्री हर्षरत्नाश्रीजी के वरसीतप का पारणा भी अक्षय तृतीया को सम्पन्न हुआ। साध्वीजी जिनेन्द्रश्रीजी आदि ठाणा, साध्वीजी बालाश्रीजी आदि ठाणा एवं साध्वीजी कल्पगुणाश्रीजी आदि ठाणा भी पधारी थी।

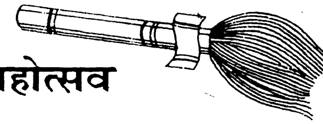

बैंगलोर में भव्य दीक्षा महोत्सव

बैंगलोर—प.पू.आचार्यश्री भुवनभानुसूरीश्वरजी, धनपालसूरीश्वरजी, जयघोषसूरीश्वरजी आदि ठाणा ३५ की पावन निश्रा में ज्येष्ठवदि ५ (गुजराती द्वि. वैसाखवदि ५) रविवार दि. २-६-९१ को मुमुक्षु कु. चन्द्रकान्ता ने भागवती प्रवज्या ग्रहण की। १ जून को दीक्षार्थी के भव्य वरसीदान वरघोडा का आयोजन किया गया, जो चिकपेठ जैन मंदिर से प्रात: ८ बजे प्रारंभ होकर नगर के मुख्य मार्गों से होकर गुजरा। करीबन १७ मंडल विविध गणवेशों मे विविध प्रकार से भक्ति करते हुए जिनशासन की शोभा बढाते हुए चल रहे थे। कई संस्थाओं द्वारा दीक्षार्थी का भव्य अभिनन्दन किया गया। इस अवसर पर जिनेन्द्रभक्ति स्वरूप अष्टान्हिका महोत्सव के आयोजन के साथ वृहत्‌शान्तिस्नात्र भी पढ़ायी गयी।

दीक्षा के दिन प्रात: ६-३२ बजे दीक्षार्थीनी बहन ने घर से विदाई ली। शोभायात्रा के साथ दीक्षा स्थल पर आगमन होने के बाद ७-३० बजे से दीक्षाविधि प्रारंभ हुयी। हजारों-हजार आंखे जिस भव्य प्रसंग को आतुरता से निहार रही थी, वह घड़ी भी आ गयी जब आचार्यश्री ने मुमुक्षु बहन को रजोहरण प्रदान किया। रजोहरण पाकर कु. चन्द्रकान्ता खुशी से झूम उठी एवं गृहस्थ वेष त्यागकर श्रमणी वेष में जब उपस्थित हुयी तो सर्व विरति के पच्चखाण के पश्चात् नूतन साध्वी का नाम श्री संस्कारनिधिश्रीजी घोषित किया गया। वे गुरुणीजी अनंतकीर्तिश्रीजी की शिष्या बनी। नूतन साध्वीजी के जयघोष एवं जैन जयति शासनम् के गगनभेदी नारों से सारा वातावरण गूंज उठा।

मुमुक्षु कु. चंद्रकान्ता 'जीजी' के नाम से लोकप्रिय थी। स्थानीय दानवीर सुप्रसिद्ध व्यापारी पारेख बाबुलालजी चन्दनमलजी की सुपुत्री थी। पिछले ८-१० वर्षों से आप संयम भावना में अतिदृढ़ थी। व्यवहारिक शिक्षा में सायन्स ग्रेजुएट होने के साथ ही जैन आगमों का आपने गहन अध्ययन किया है। बैंगलोर की प्रसिद्ध लब्धिसूरि जैन धार्मिक पाठशाला में आप विद्यार्थियों को मूलसूत्र के साथ संस्कृत, प्राकृत, तत्वार्थ, जीवविचार, कर्मग्रंथ एवं संगीत आदि विषयों का ज्ञान भी देती थी। आपके शान्त स्वभाव, मधुर वाणी एवं विनयशीलता ने सभी का मन मोह लिया था। इसीलिये दीक्षा के दूसरे दिन मद्रास की ओर उग्र विहार के समय हजारों नर-नारी आंखों में आंसू से निस्तब्ध थे।

आपकी संयम यात्रा निष्कंटक रहे व क्रमश: शुभ परिणामों आगे बढते हुए, निरतिचार संयम पालन करते हुए, अनेकानेक भव्य जीवों को सही राह बताने के निमित्त बनते हुए, शीघ्रातिशीघ्र सर्व कर्मों से मुक्त होकर सिद्धावस्था को पायें, यही अंतरेच्छा।

—सम्पादक

भीनमाल में वरसीतप पारणा निमित्ते अष्टान्हिका महोत्सव

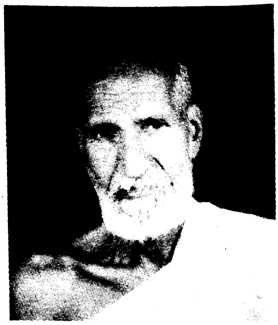

आचार्य श्री जयन्त सेनसूरीश्वरजी के शिष्यरत्न मुनिराज श्री नयरत्न विजयजी म. सा. के अक्षयतृतीया को वरसीतप के पारणा निमित्त सेठ विशनराज बाबुलालजी बाफना परिवार द्वारा ९-५-९१ से १६-५-९१ तक अष्टान्हिका महोत्सव मुनिराज श्री भुवनविजयजी चेतनविजयजी, पद्मरत्नविजयजी, रामरत्नविजयजी आदि ठाणा की निश्रा में आयोजित किया गया।

अंधेरी (बम्बई) में पूरे परिवार ने प्रवज्या अंगीकार की

अंधेरी (बम्बई) - यह जिन शासन की बलिहारी है कि इस भौतिक युग की अंधी दौड़ में ऐसे पुण्यशाली परिवार विद्यमान है जो एक साथ संसार की माया को तिलांजली देकर श्रमणजीवन की कांटो की राह पर हँसते-हँसते चलने के लिये कटिबद्ध है। १८ मई १९९१ को अंधेरी के प्रांगण में श्री सतीशभाई, उनकी पत्नी अलकाबेन, पुत्र मयंक, पुत्रीयाँ पीनाली, वैशाली एवं फाल्गुनी (परिवार के ६ सदस्य) ने गच्छाधिपति आचार्यश्री दर्शनसागरसूरीश्वरजी की निश्रा में धन सम्पत्ति का त्याग कर भागवती प्रवज्या अंगीकार की। श्रमण जीवन में जिनका नामकरण क्रमशः मुनि सिद्धियशसागरजी, साध्वी अमितप्रज्ञाश्रीजी, मुनि मुक्तियशसागरजी, साध्वी पुनितप्रज्ञाश्रीजी, साध्वी धैर्यप्रज्ञाश्रीजी एवं साध्वी उर्मितप्रज्ञाश्रीजी किया गया।

थलवाड़ में अंजनशलाका व प्रतिष्ठा महोत्सव

थलवाड़ - राजस्थान प्रांत के जालोर जिले में स्थित थलवाड़ नगर में प. पू. आचार्यश्री जयन्तसेनसूरीश्वरजी आदि ठाणा की निश्रा में भगवान आदिनाथजी आदि जिन बिम्बों एवं गुरु गौतमस्वामी, राजेन्द्रसूरिजी आदि बिम्बों की अंजनशलाका व प्रतिष्ठा महोत्सव का कार्यक्रम हर्षोल्लास पूर्वक संपन्न हुआ।

इस प्रसंग पर परम श्रद्धेय आचार्य श्री का मुनिमंडलसह पदार्पण वैसाखसुदि १० को नगर प्रवेश उत्साह व उमंग के वातावरण में हुआ। पूरा नगर ध्वजाओं विविध रंगी पताकाओं न बेनरों से सजाया गया था। सौमेये के पश्चात् नगर भ्रमण करते हुए शोभायात्रा जिनमंदिर पहुंची, जहाँ दर्शन व चैत्यवंदन के पश्चात् क्रमशः उपाश्रय में जाकर धर्मसभा के रूप में परिवर्तित हो गयी।

द्वि. वैसाख वदि १४ सोमवार दि. १३-५-९१ से महोत्सव प्रारंभ हुआ। अंजनशलाका में पंचकल्याणक महोत्सव के अंतर्गत पांचों दिन वरघोड़े का आयोजन हुआ। पूजादि कार्यक्रम में सिरोही पार्श्व महिला मंड़ल, जयन्तसेनसूरि संगीत मंडल ने भाग लिया। रात्रि भावना में सांस्कृतिक कार्यक्रम व भक्ति-गीतों का कार्यक्रम होता था।

नगर के बाहर स्कूल के विशाल प्रांगण में भोजन नाश्ते की व्यवस्था रखी गयी थी।

सारी व्यवस्था में अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद-शाखा-थलवाड, बालिका परिषद एवं बालिका मंडल गुढा का सहयोग सराहनीय रहा। शाखा परिषद नारोली द्वारा प्रभुजी की भव्य नयनरम्य अंग रचना की गयी। विविध ऐतिहास प्रसंगों को लेकर चलित प्रदर्शनी आयोजित की गयी थी।

द्वि. वैसाखसुदि १० गुरुवार दि. २३-५-९१ को प्रात: शुभ मुहूर्त में प्रतिष्ठा विधि के अंतर्गत मूलनायक आदीश्वरजी को विराजमान करने लाभ शा पारसमलजी सोवलजीने लिया। ध्वजारोहण शा भण्डारी गणेशमलजी तिलोकचन्दजी परिवार; ईण्डा-शा भूरमलजी कपूरजी बाफना परिवार; दण्ड - शा मोडमलजी जोमताजी; गुरु गौतमस्वामी प्रतिमा-शा जुगराजजी मिश्रीमलजी सालेचा परिवार; गुरुदेव राजेन्द्रसूरिजी की प्रतिमा विराजमान - शा वसंतीलालजी कपूरजी परिवार द्वारा की गयी। और भी अनेक महानुभावों ने विविध लाभ लिये। आचार्यश्री को कांबळी शा वस्तीमलजी कपूरजी बाफना द्वारा वोहरायी गयी।

आचार्य श्री मधुकरजी का चातुर्मास जावरा में १७ जुलाई को प्रवेश होगा

नयागांव—राजस्थान एवं मध्यप्रदेश के सीमावर्ती नयागांव में सौधर्म वृहतपागच्छीय त्रिस्तुतिक जैन संघ के वर्तमानाचार्य देव श्री जयन्तसेनसूरीश्वरजी 'मधुकरा' का अपने शिष्यों सह प्रवेश के समय हजारों गुरु भक्तों द्वारा जयजयकार के नारों से गगन गूंज उठा। इस अवसर पर म. प्र. के गृहमंत्री श्री कैलाश चावला ने आचार्यश्री की गहुंली कर अगवानी की। विशाल जनसमूह बेण्ड बाजे के साथ करीबन दो किलो मीटर रास्ता तय कर धर्म सभा में परिवर्तित हो गया।

अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री चेतनकुमारजी काश्यप की अध्यक्षता में आचार्य श्री को मालवा जैन श्री संघो की ओर से राजगढ़ निवासी श्री मोतीलालजी हरण ने कांबली वोहराने का लाभ लिया। श्री चावलाजी का स्वागत परिषद के प्रदेशाध्यक्ष श्री सोहनलालजी सुराणा ने किया। डा० श्री लक्ष्मीनारायण पांडे, श्री चावला, श्री काश्यप ने अपने विचार रखे। आचार्यश्री ने देश में बढती अशांति की रोकथाम के लिये भगवान महावीर के सिद्धान्तों पर चलना एक मात्र हल बताया। चातुर्मास हेतु जावरा, राजगढ़, निम्बाहेडा, बडनगर आदि श्री संघो द्वारा आचार्यश्री समक्ष निवेदन किया गया। आचार्यश्री ने देशकाल भाव को देखते हुए जावरा में चातुर्मास करने की घोषणा की, जिससे उपस्थित गुरु भक्तों एवं जावरा नगर में आनंद व हर्ष की लहर व्याप्त हो गयी।

आचार्यश्री विहारकर क्रमश; नीमय, जमुनियाकला, चंदु, मल्हारगढ़, नारायरगढ़, पिपलिया, वहीपार्श्वनाथ, मन्दसौर, दलौदा, कचनारा, ढोढर, अरनिया होते हुए १७ जून को रतलाम पधारे, जहाँ २२ जून को आपकी निश्रा में प्रतिष्ठोत्सव सम्पन्न हुआ।अभी अभी समाचार मिला है कि अचार्यश्रीकी मुनिमंडलसह जावरा में चातुर्मास प्रवेश आषाढ सुदी ६ बुधवार १७ जुलाई को प्रात: ५ बजकर १० मिनट पर होगा।

साध्वीजी श्री आत्मदर्शनाश्रीजी आदि ठाणा का चातुर्मास हेतु जावरा में प्रवेश उपरोक्त दिन ही होगा।

अहमदाबाद में आचार्य श्री रामचंद्रसूरीश्वरजी के वरद् हस्तों से हीराबाजार के अति श्रीमंत व्यापारी के युवान पुत्र अतुलकुमार शाह ने भागवती प्रवज्या अंगीकार की

अहमदाबाद - आज़ के युग में लोग आंखे मूंद कर भौतिक साधनों की ओर दौड लगा रहे हैं। अर्थ और काम के पिछे पागल दुनियाँ में भी नररत्न होते हैं जो ज्ञानियों के कथनानुसार धर्म और मोक्ष की प्राप्ति में प्रयत्नशील हैं। अखूट संपत्ति के धनी हीराबाजार के अति श्रीमंत व्यापारी श्री दलपतभाई एवं माता शान्ताबहन के युवा सुपुत्र श्री अतुलकुमार शाह ने २ जून १९९१ मिती द्वि. वैसाख वदि ५ रविवार को गच्छाधिपति ९६ वर्षीय श्रीमद् विजय रामचंद्र सूरीश्वरजी के वरद् हस्तो से ११७ वें शिष्य के रूप में अहमदाबाद के वल्लभभाई पटेल स्टेडियम में प्रात: ९ बजकर २० मिनट पर जैसे ही रजोहरण स्वीकार कर हर्षपूर्वक झूमने लगे, लगभग २ लाख लोग वह दृश्य देखकर धन्य हो गये। साधुवेष धारण कर सर्व विरति के पच्चखाण बाद नूतन मुनि का नाम 'हितरुचिविजयजी' रखा गया, जिसकी उद्घोषणा का लाभ ॲन्टवर्प (बेल्जियम) के हीरों के व्यापारियों ने लिया।

दीक्षा के पूर्व अनुमोदना के रूप में श्री अतुल शाह का लगभग १३५ श्री संघो द्वारा विविध कार्यक्रमों में बहुमान किया गया था व ३० नगरों में शोभायात्रा आयोजित की गयी थी। एक वरघोड़े में पालनपुर के नवाब भी आये थे। सूरत के ९ कि.मी. लम्बे वरघोड़े में अनेक राजनेता आये थे। बेल्जियम के ॲन्टवर्प शहर में संपन्न शोभायात्रा में वहाँ के मेयर ने भी भाग लिया था।वहाँ के टेलीविजन कार्यक्रम में शोभायात्रा के दृश्यों के साथ श्री अतुल शाह का इंटरव्यु भी प्रसारित हुआ था। १ जून को वर्षीदान के वरघोड़े में ७ हाथी, ६४ इंद्र, ५६ दिक्कुमारी, सफेद हंस आकार की शिविका में मुमुक्षु अतुल शाह इंद्रध्वजा, रथ, उंटगाड़ी, घोड़े आदि के साथ हजारों की संख्या में पधारे भाविकों को देखने के लिये पूरा अहमदाबाद उमड़ पड़ा था। श्री अतुल शाह की शिबिका को चलाने के लिये ६ हाथी जोड़े गये थे। विविध प्रान्तों से नाना प्रकार के देशी वाद्यों को बजाने वाले कलाकार शोभायात्रा में चल रहे थे।मुमुक्षु ने अहिंसक सिल्क का राजघराने का ड्रेस पहना था (रेशम का कीड़ा उड जाने के बाद कोशेटा में से बनाये गये सिल्क को मोहकट्टासिल्क या मटका सिल्क कहते हैं)। दोनों हाथों से श्री अतुल शाह हीरे मोती परचुरण एवं दस रूपये तक के नोट उछालते हुए लक्ष्मी की मूर्छा त्यागने का पैगाम दे रहे थे। लगभग ९ किलोमीटर लम्बी यात्रा में दो लॉरी भरकर सिक्कों के बेग एवं चावलों की व्यवस्था वर्षीदान के लिये की गयी थी।

दो जून को प्रात: ६ बजे से ही लोग दीक्षा विधी देखने के लिये परिवार व इष्टमित्रों के साथ स्टेडियम में आने प्रारंभ हो गये थे।२५ फीट ऊपर बनाने गये मंच पर दीक्षाविधी का कार्यक्रम हुआ, जिससे अपार भीड़ को देखने में सुविधा हो। करीबन ८०० साध्वीजी एवं २०० मुनि भगवंतों की दीक्षा कार्यक्रम में उपस्थिती एक रिकार्ड था। करीबन १०० पत्रकार व अनेक राजनेताओं के साथ गुजरात के मुख्यमंत्री श्री चिमनभाई पटेल, मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री श्री सुंदरलाल पटवा व आधा दर्जन जापानी नागरिक भी इस महोत्सव में उपस्थित थे। दो लाख लोगों के लिये भोजन व्यवस्था कॉलेज मैदान में बहुत ही सुव्यवस्थित ढ़ंग से रखी गयी थी। अनुशासनबध्द कार्यकर्ताओं द्वारा सारा कार्य बहुत ही

सुंदर व शान्ति से संपन्न हुआ।गर्मी के मौसम में इतने लोगों की भोजन व्यवस्था में भी मिट्टी की बड़ी बड़ी कोठियों में पानी का सुंदर इंतजाम किया गया था और अभक्ष्य बर्फ का इस्तेमाल नहीं किया गया। अहमदाबाद के सभी जिनालयों में उस दिन बिजली का उपयोग नहीं किया जाकर शुध्द घी में दीपक जलाये गये। इस प्रकार अनेकों विशेषताओं को संजोये हुए अहमदाबाद के प्रांगण में यह दीक्षोत्सव एक यादगार बन गया।

गच्छाधिपति गुरूदेव रामचंद्रसूरीश्वरजी आदि अनेक मुनि भगवंतों के साथ नूतनमुनि श्री हितरूचिविजयजी का इस वर्ष का चातुर्मास साबरमती जैन उपाश्रय में होगा।

आहोर नयरे बाफना परिवार द्वारा पंचान्हिका महोत्सव एवं स्वामीवात्सल्य

आहोर -शा मिश्रीमलजी रत्नाजी बाफना परिवार ने आहोर स्थित गोड़ीजी जिनालय के प्रांगण में श्री महावीर स्वामी जिनालय का निर्माण करवा कर विक्रम संवत १९९६ के वैसाख सुदी १४ को जैनाचार्य श्री यतीन्द्रसूरीश्वरजी के वरद् हस्तों से प्रतिष्ठा करवायी थी।

स्व. श्री. धर्मचन्दजी मिश्रीमलजी बाफना की इच्छानुसर अर्धशताब्दि महोत्सव के अवसर पर वैसाख सुदी १४ को ध्वजारोहण किया जाकर पंचान्हिका महोत्सव का आयोजन उनके पुत्रों जयन्तिलाल, कैलाशचंन्द्र,विनोदकुमार,प्रवीणकुमार द्वारा किया गया। इस अवसर पर ज्येष्ठ वदी ३दि. ३१.५.९१ को स्वामीवात्सल्य का आयोजन हुआ।

शब्दसागर ईनामी स्पर्धा-१ उत्तर व परिणाम

परिणाम -प्रथम क्रमांक श्री एस. आर. डूंगरवाल,(सेंधवा)ने प्राप्त किया है। निम्नांकित पाठकों के उत्तर भी क्रमश: संतोषजनक रहे-

(१) श्रीविकास नवीनचंद्र जैन-बम्बई (२) सगरावत इलेक्ट्रीकल्स-नीमच

(३) कु.निर्मला शेषमलजी जैन-कल्याण (४) श्रीमती चन्द्रकेशरसिंह कर्नावट मदनगंज-किशनगढ़

(५) श्री.किशोरकुमार पी.शाह-नवसारी

	अ	भ	य	कु	मा	र		त	त्व
	ना		क्ष	मा	या	च	ना		
मं	दि	र		र		यि		आ	त्मा
त्री				पा	ली	ता	णा		
वि	म	ला	च	ल			ण	मो	
म	म		क्र		जी	भ		ह	स
ल	ता	ए		प्र	द	क्षि	णा		म्य
श		क		भ				रा	गू
ह	क		भा	व		स	म	ता	
		ना	व		पा		र		वि
आ	लो	च	ना		र	ट	ण		न
	च		ए	ष	णा			हे	य

आपका पत्र मिला

● शाश्वत धर्म अनुपम अद्‌भुत मौलिक अभिनन्दनीय पत्रिका है यथा कलित सामग्री की गुणात्मकता की दृष्टि से अपने शाश्वत धर्म को अन्वर्थ करती है। इसकी सारी रचनाएँ रेखांकित है। सजग अध्यताओं को संतुष्ट करने में सक्षम है। निश्चित ही श्रमण संस्कृति के शाश्वत मूल्यों का अनुशीलन कर पाठकों के आत्मोत्थान में प्रेरणादीप बनेगी।

डा. सुशील कुमार जैन -संपादक जैनप्रभात, कुरावली (यू. पी.)

● अंक में प्रकाशित लेख बोधकथाएँ एवं प्रसंगों की मुख्य पंक्तियों को पढ़ा। पत्रिका का आकार मुद्रण एवं सम्पादन को देखा। बहुत अच्छा लगा। आकर्षक कवर पृष्ठ एवं प्रकाशित सामग्री पाठक के मन को सहज ही आकर्षित करने में सक्षम है। इस प्रकार की पत्रिका के प्रकाशन हेतु हमारी बधाई एवं शुभ कामनायें स्वीकार करें।

हुकुमचंद पवैया सम्पादक जनप्रिय

● शाश्वत का जून ९१ का अंक मिला। अंक बहुत ही सुन्दर एवं पठनीय बना है। समस्त प्रकार के लेख एवं विविध विचारों के लेखकों को शाश्वत में सम्मिलित कर आपने शाश्वत धर्म मासिक को एक सामाजिक, आध्यात्मिक आंदोलन का रूप दे दिया है। हमारे समाज के हर घर में इसका इन्ताजार है, इसका स्वागत है, इसका आकर्षण है।

नरेन्द्र कुमार जैन (बागरा)

● आपका प्रयत्न प्रशंसनीय हो रहा है। नैकनियती और लगन अवश्य सफलता देते हैं। प्रश्नोत्तर चालू रखें वे ज्ञानवर्धक सिद्ध हुए हैं कितनी ही जगह शिविर लगते हैं और उनके काम आते हैं पाठकों को भी जानकारी हाती है।

सौभाग्यमल जैन (वकील)-रतलाम

● मई अंक आज ही मिला। धन्यवाद। बढ़िया ढंग से उत्कृष्ठ लेख प्रकाशित करा रहे हैं। छपाई सुन्दर है एतदर्थ धन्यवाद।

पीलारामकृष्ण-(सम्पादक-जीवबंधु)-गुन्टुर (आ. प्र.)

● शाश्वत धर्म वांचवा नो लाभ मळ्यो बहु सारु स्टॅंडर्ड आपे राख्यु छे ते थी गम्यो।

डा. शांतिलाल खेमचंद शाह-पूना

● शाश्वत धर्म मई ९१ का अंक रुचीकर एवं ज्ञानवर्धक रहा। विशेषकर पूर्व से प्रारम्भ स्तम्भ "ज्ञानकसौटी" तथा इस माह से प्रारम्भ किया गया नया स्तम्भ शब्दसागर स्पर्धा रूचिकर तथा ज्ञानवर्धक पाया गया। आशा है आप इस स्तम्भ को हमेशा जारी रखेंगे।

एस. आर. डूंगरवाल-सेंधवा (म. प्र.)

● शाश्वत धर्म समय पर मिलता है, प्रवास में रहने से थोड़ा विलम्ब होता है। हमेशा अंक की प्रतिक्षा बनी रहती है। अभी इन दिनों जो अंक मिल रहे हैं वे सभी दृष्टि से सराहनीय है, मननीय, पठनीय एवं दर्शनीय है, इसलिये आप बधाई के पात्र हैं।

-रतनमुनि-दुर्ग (म. प्र.)

● शाश्वत धर्म ३९ वें वर्ष में प्रवेश (जून ९१ के अंक से) कर रहा है। शाश्वत धर्म में अनेक बार उतार-चढाव आये। जब से सम्पादक का कार्य आपके जिम्मे किया स्थायीत्व आया व काफी प्रगति हुई। पाठकों के लिये विद्वान लेखकों आचार्य भगवंतों मुनिराजों के आध्यात्मिक लेखां से रूचि जागृत की। प्रथम पृष्ठ कलात्मक ढ़ंग से आकर्षक छपाई साफ स्वच्छ, पेपर भी अच्छा अंक को मिलते ही पढ़ने की जिज्ञासा जागृत होती है।

-मानवमुनि-इन्दौर

● लखाण नो उठाव अने पसंदगी से सम्पादक नी आवडतनुं प्रतिबिंब छे. शाश्वत धर्म वांचनार आपश्रीना पत्रकारत्वथी पण प्रभावित थया विनां रही शके नहीं तेवी सुन्दर आपश्रीनी कलम छे. हुं आपश्री ना व्यक्तिगत उंच जीवन अने जैनशासन प्रभावना नी प्रबल भावना ने कारण तेमज पू. आ. देव श्री जयंतसेन सूरीश्वरजी म. सा. बे वखत दीयोदर पधारतां तेमना प्रवचनों सांभळवानो लाभ मलतां अत्यंत आनन्द थयो छे. हिन्दी, गुजराती बन्ने भाषा मां प्रगट थतु सामायिकनुं जैन समाज जेटलुं महत्व आंके तेटलुं ओछु.

प्रवीण भाई एन. मेहता-अमरोली-सुरत

● शाश्वतधर्म मासिक की साजसज्जा उत्तम है, लेख आदि भी बहुत रुचिकर है।

—शांतिलाल जैन (मनासा)

● अभी पत्रिका का स्वरुप बहुत सुधरा है पढ़ते- पढ़ते आनन्द आता है। सुन्दरताके लिये धन्यवाद।

बी. वी. मेहता- मद्रास

● आपके सम्पादकत्व में प्रकाशित 'शाश्वत धर्म' का जून ९१ अंक अवलोकनार्थ एक मित्र के पास से उपलब्ध हो गया। मैंने आद्योपांत सिंहावलोकन कर लिया, सामग्री सामयिक नैतिक शिक्षा पर आधारित है।

वास्तव में वर्तमान पत्रकारिता के क्षेत्र में इस प्रकार के प्रकाशनों का अभाव-सा सटकने लगता है। मैंने भारतीय पत्रकारिता के क्षेत्र में अनेकों पत्र-पत्रिकाओं को देखा-पढ़ा-कुछ समझने का प्रयत्न किया-उनके अपने-अपने दायरे हैं, लेकिन आपके सम्पादकत्व में कुछ विशिष्टताऐं देखने को मिली है—वह है वर्तमान विश्व-परिस्थितियों में पर्यावरण के माध्यम द्वारा अहिंसात्मक विचारधारा का प्रचार करना।

छपाई बहुत स्वस्थ-स्वच्छ है। धार्मिक पत्र-पत्रिकाओं में इस रूप की पत्रिकाऐं अपने आप सम्पूर्ण है।

आशा है आपके सम्पादकत्व में प्रकाशित होनेवाली इस पत्रिका का भविष्य उज्ज्वल व मानव समाज के जीवन को शाश्वत रूप में ढालने में एक सशक्त माध्यम बनेगा।

डॉ. हरिश्चन्द्र विद्यार्थी (सम्पादक-राष्ट्रनायक) हैदराबाद

समाचार-सार

● **इन्दौर** - श्रीतिलकेश्वर पार्श्वनाथ जैन धार्मिक पाठशाला, तिलकनगर-इन्दौर की कार्यकारिणी का गठन किया गया।

ट्रस्ट की ओर से अक्षय तृतीया पर वर्षी तप पारणा का आयोजन पू. साध्वीजी श्री चन्द्रोदयाश्रीजी आदि ठाणा की निश्रा में सानन्द सम्पन्न हुआ, एवं जिनालय के शिखर पर स्वर्णकलश अर्पण एवं मांगलिक भवन निर्माण हेतु भूमि पूजन किया गया।

● **अलीराजपुर** - श्री मीश्रीमलजी जैन की धर्मपत्नी श्रीमती रामप्यारी बाई का स्वर्गवास ९२ वर्ष की उम्र में हुआ। उनकी आत्मशान्ति हेतु परिवार की ओर से तीन दिवसीय श्री जिनेन्द्र भक्ति महोत्सव एवं स्वामीवात्सल्य का आयोजन किया गया।

● **बम्बई** - (भायखला)-श्री आहोर जैन चेरीटेबल ट्रस्ट के वार्षिक चुनाव सम्पन्न हुए जिसमें अध्यक्ष श्रीशांतिलाल सुमेरमलजी नागोरी, उपाध्यक्ष-श्रीलालचंद धर्मचंदजी, महामंत्री-श्री कुशलराज पी. जैन, सहमंत्री-श्री जयंतीलाल पी. जीवावत नियुक्त किये गये।

● **सांचोर** (राज.) - द्वितीय वैशाख सुदी ९ को श्री राजेन्द्रसूरि जैन धर्मशाला का खात मुहूर्त सम्पन्न हुआ।

● **उदयपुर** (राज.) - मेवाड़ के संतकविवर स्व. श्री कुंदनमलजी डांगी की ९वीं पुण्य तिथी पर अ. भा. साहित्य संगम द्वारा श्री भगवन्त राव गाजरे 'शांत' निम्बोहड़ा की अध्यक्षता में कुन्दन काव्यांजलि का भव्य आयोजन पारदर्शी साधना केन्द्र-आयड़ पर श्री अनिल चतुर्वेदी बादल के संचालन में सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

● **जोधपुर** - स्व. आचार्य श्री हस्तीमलजी म. सा. के पट्टधर अष्टम आचार्य श्री हीराचंदजी म. सा. का आचार्य पद चादर महोत्सव ज्येष्ठ वदी ५ रविवार दि. २-६-९१ को उपाध्याय पं. रत्न श्री मानचन्द्रजी म. सा. आदि ठाणा एवं पू. प्रवर्तिनी महासती श्री बदन कंवरजी म. सा. आदि ठाणा तथा चतुर्विध श्री संघ के सानिध्य में सम्पन्न हुआ।

जय गच्छाधिपति प्रशांतचेता आचार्य गुरूदेव श्री शुभचंद्रजी म. सा. एवं प्रवर गुरूवर श्री पार्श्वचन्द्रजी म. सा. आदि ठाणा के पावन सानिध्य में जोधपुर निवासी मुमुक्षु सुनिलकुमारजी छाजेड़ का जैन भागवती दीक्षा समारोह ज्येष्ठ सुदी ११ शनिवार दि. २२-६-९१ को विविध धार्मिक कार्यक्रमों के साथ सानन्द सम्पन्न हुआ।

पर्यूषण पर्व में जैन साधु संतो से वंचित क्षेत्र में धर्माराधना हेतू स्वाध्यायींयों को बुलवाने हेतू श्री चंचलमल चोरड़ीया सचिव स्वाध्याय संचालन समिति घोड़ों का चौक-जयपुर से सम्पर्क करें।

● **बीकानेर** - श्री अखिल भारतवासी साधुमार्गी जैन संघ द्वारा प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी साहित्य पुरस्कार प्रतियोगिता आयोजित की जा रही है, अत: प्रतियोगी निम्न पते पर सम्पर्क कर पूर्ण जानकारी प्राप्त करे। श्री अखिल भारतवर्षीय साधु मार्ग जैन संघ समता भवन-बीकानेर-३३४००१ (राज.)

● **बूसी (राज.)** - पू. आचार्य श्री पद्मसूरीश्वरजी म. सा. आदि ठाणा एवं प. पू. साध्वीजी श्री दानलता श्रीजी आदि ठाणा की निश्रा में श्री पार्श्वनाथ स्वामी आदि जिनबिम्बों की प्रतिष्ठा ध्वज दण्डकलशारोहण आदि श्री अष्टोतरी शांति स्नात्रमहापूजन सह नवन्हिका महोत्सव का आयोजन (दि. १२-३-९१ से २०-३-९१) को सानन्द सम्पन्न हुआ।

● **देशलपुर (कच्छ गुज.)** - पू. मुनिराज श्री मुक्तिचंद्रजी म. सा. आदि ठाणा एवं पू. साध्वी जी की निश्रा में दि. १८ मई से २६ मई तक श्री अजितनाथजी जैन जिनालय शताब्दि महोत्सव निमित्त श्री सिद्ध चक्र महापूजन, बृहत शांतिस्नात्र, अठारह अभिषेक नूतन ध्वजदण्ड

स्थापना सह नवान्हिका महोत्सव का आयोजन किया गया। श्री भुवनचंद्रजी म. सा. द्वारा लिखित ,व 'श्रीकच्छ प्रदेश पार्श्वचन्द्र गच्छ जैन संघ' द्वारा प्रकाशित पुस्तक "मंडलाचार्य श्री कुशलचंद्रजी गणिवर" का विभोचन श्री लक्ष्मीचंद्र राघवजी एडव्होकेट के कर कमलों द्वारा किया।

● **ह्रींकारतीर्थ (विजयवाड़ा)** - ह्रींकार तीर्थ की रमणीय स्थली पर गुन्टुर और विजयवाड़ा जैन श्री संघ के सहयोग से युवावर्ग में धार्मिक संस्कारों के प्रचारार्थ सात दिवसीय आध्यात्मिक शिविर का आयोजन ४-५-९१ को आचार्य श्री भुवनभानुसूरीश्वरजी म. सा. के आज्ञानुवर्ती शिष्य पू. मुनि श्री अजितशेखरविजयजी एवं पू. मुनि श्री विमलबोधविजयजी की पावन निश्रा एवं श्री कुमार पाल वी. शाह आदि के कुशल संचालन में सानन्द सम्पन्न हुआ।

● **अजमेर** - पू. साध्वी श्री विनयप्रभाश्रीजी म. सा. की शिष्या पू. साध्वीजी महाप्रज्ञा श्रीजी आदि ठाणा की निश्रा में श्री वासुपूज्य स्वामी जैन श्वेताम्बर मन्दिर में भगवान श्री वासुपूज्य स्वामी आदि जिनबिम्बों का प्रवेश निमित्त श्री शांतिस्नात्र महोत्सव श्री पार्श्वपंचकल्याण पूजा आदि कार्यक्रमों का त्रिदिवसीय (२४-२५-२६ मई) आयोजन किया गया।

● **डोम्बीवली (थाने)** - पू. आचार्य श्री कीर्तिचन्द्रसूरिजी म. सा. के आज्ञानुवर्ती शिष्य पू. मुनिराज श्री हरीश**भद्र** विजयजी म. सा आदि ठाणा की निश्रा में श्री आदिनाथ भगवान आदि जिनबिम्बों का नगर प्रवेश एवं गृहमन्दिर स्थापना नवगृहादि पूजन, अठारह अभिषेक सह रत्नत्रयी महोत्सव (१-२-३ जून) श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ घोघारी जैन कॉलोनी डोम्बीवली में सानन्द सम्पन्न हुआ।

● **समदडी (राज.)** - पू. आचार्य श्री सुशील सूरिजी म. सा आदि ठाणा की शुभ निश्रा में नवनिर्मित श्री कुन्थुनाथ स्वामी जिनालय में श्री कुन्थुनाथ भगवान आदि जिनबिम्बों की प्राण प्रतिष्ठा, अंजनशलाका एवं प्राचीन मूल नायक श्री सुपार्श्वनाथ भगवान एवं श्री पार्श्वनाथ भगवान आदि जिनबिम्बों की पावन प्रतिष्ठा निमित्त श्री पंचकल्याणक महोत्सव, श्री सिद्धचक्र महापूजन, श्रीबृहत अष्टोतरी शांतिस्नात्र महापूजन सह नवान्हिका जिनेन्द्र भक्ति महामहोत्सव (१८ मई से २६ मई) का आयोजन श्री समदड़ी जैन श्वे. सकलसंघकी ओर से किया गया।

● **आदोनी** - आचार्यश्री वारिषेणसूरीश्वरजी आदि ठाणा की निश्रा में विमलनाथ प्रभु आदि जिनबिम्बों की अंजनशलाका व प्रतिष्ठा १९-५-९१ को संपन्न हुयी। कु. चंद्रिका बहन छाजेड-ब्यावर निवासी की दीक्षा १८-५-९१ को संपन्न होकर नूतन साध्वी का नामकरण प्रिय श्रद्धांजनाश्रीजी रखा जाकर साध्वीजी सुलक्षणाश्रीजी की शिष्या घोषित की गयी।

● **मुलुंड** - चैकनाका (मुलुन्ड-बम्बई) में आचार्यश्री राजेन्द्रसूरिजी, प्रवर्तक मुनिश्री हरिशभद्रविजयजी आदि ठाणा की निश्रा में श्री रतिलाल मगनलाल शाह परिवार द्वारा निर्मित श्री धर्मनाथ स्वामी जिनालय का प्रतिष्ठोत्सव २४ जून को अष्ट दिवसीय महोत्सव के साथ सम्पन्न हुआ।

● **मालवणी** - बम्बई मलाड (वेस्ट) में मालवणी के अंतर्गत श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथादि जिन बिम्ब एवं दादा गुरु राजेन्द्रसूरिजी की गुरुमूर्ति प्रतिष्ठा वैसाखशुक्ला १३ को सम्पन्न हुयी। इस अवसर पर नव्हान्हिका महोत्सव आयोजित किया गया था।

● **बम्बई** - अंग्रेजी समाचार पत्र मिड-डे से ९-५-९१ को प्रकाशित समाचार के अनुसार मुंबई महानगरपालिका ने बम्बई में ६०८ नये मीनी कसाईखाने एवं उपनगरों में चार मार्केटों एवं देवनार कत्लखाने के पास दूसरे चार और खाजगी कत्लखाने खोलने के परवाने दिये हैं। अहिंसा प्रेमी इस भारतीय संस्कृति के लिए कलंक के समान भ्रष्टाचार व हिंसा को बढावा

देने वाली इस याजना का जम कर विरोध करें।

● **दिल्ली** - कथालोक मासिक द्वारा माह अगस्त ९१ का वार्षिकांक **''भक्तकथा विशेषांक''** रूपमें प्रकाशित किया जा रहा है। विशेष जानकारी हेतू कथालोक (मासिक) ५०५, कुन्दन भवन, आज़ादपुर कमर्शियल कॉम्प्लेक्स-दिल्ली-११० ०३३ से सम्पर्क करें।

● **जलगाम** - मुनिराज श्री सर्वोदयसागरजी आदि ठाणा की निश्रा में यहाँ नवपदजी ओली आराधना, जैन उपाश्रय का भूमिपूजन एवं महावीर जन्म कल्याणक प्रसंगे तीन पहियों की १५२ सायकिलें, सिलाई मशीन आदि बांटी गयी।

चालीसगाम में अठ्ठारह अभिषेक व पारोला तीर्थ में १५ दिवसीय संस्कार ज्ञान शिविर आयोजित की गयी, जिसमें १२० विद्यार्थियों ने ज्ञानार्जन किया।

● **आहोर** - मुनिराज श्रीकीर्तिविजयजी की ९ वीं पुण्य तिथि निमित्त चौपडा भँवरलालजी वस्तीमलजी की ओर से जेष्ठ सुदी ७ को पूजा पढायी गयी।

● **सेन फ्रान्सिसको (अमेरिका)** - अमेरिका में छठवाँ विश्व जैन अधिवेशन ४ से ६ जुलाई ९१ तक होगा जिसमें विश्वभर से जैन अग्रणी भाग लेंगे।

● **पाटण** - फोफलिया वाडा में निस्पृह शिरोमणि, नवकार मंत्र के आराधक पू. पंन्यास प्रवर श्री भद्रंकर विजयजी म. सा. की गुरुमूर्ति की प्रतिष्ठा महोत्सव के साथ सानन्द सम्पन्न हुई, पाँच दिन के महोत्सव में सिद्धचक्रमहापूजन, गुरुगुणानुवाद, गुरुमूर्ति के पू. अभिषेक कार्यक्रम में बाबुभाई कड़ीवाला, शशीकांतभाई-राजकोट, हिंमतभाई-बेड़ा, ललितभाई मद्रास वाले विधिकारक पधारें थे। पू. आ. श्री प्रद्योतनसूरिजी पंन्यासप्रवरश्री वज्रसेन विजयजी म. विद्वान् मुनिश्री रत्नसेन विजयजी, आदि २५ मुनि भगवन्त एवं पू. आ. देवश्रीमद् जयंतसेन सूरिजी के शिष्य मुनि हेमरत्न विजयजी व मुनि प्रशान्त रत्नविजयजी की निश्रा में यह महोत्सव संपन्न हुआ। पाटणनगर में उपस्थित श्रमणीवर्ग भी महोत्सव में पधारें थे।

● ***भेंट मंगवायें.........***

मुनिराज श्री जयानन्द विजयजी द्वारा लिखित दर्शन, ज्ञान, चारित्र विषयक प्रश्नोत्तरी की पुस्तक 'समाधान की राह पर' जिज्ञासु पाठकों को १ रुपये का पोस्टेज स्टेम्प शाश्वत धर्म कार्यालय के पते पर भेजने से भेंट भेजी जायेगी।

शाश्वत को भेंट

१७०३/-आहोर निवासी शा. जयन्तिलालजी कैलाशचन्द्रजी, विनोदकुमारजी, प्रवीण कुमारजी, धर्मचन्दजी बाफना परिवार द्वारा आयोजित महावीर स्वामी मंदिर की ५१ वीं सालगिरह निमित्ते ध्वजारोहण व पंचान्हिका महोत्सव के अवसर पर सप्रेम भेंट।

२५१/- भूती (राज.) निवासी शा. मूलचंदजी रजन चंदशाह परिवार द्वारा पू. मुनिराज श्री जयानंदविजयजी म. सा. की प्रेरणा से जीवित महोत्सव एवं वीसस्थान कतप उद्यापन प्रसंगे सप्रेमभेंट।

१०१/-सियाणा निवासी श्री बाबुलालजी. वी. मेहता के सुपुत्र प्रवीण कुमार का विवाह संगीता कुमारी के साथ २४ जून को मद्रास में संपन्न हुआ, इस प्रसंगे भेट

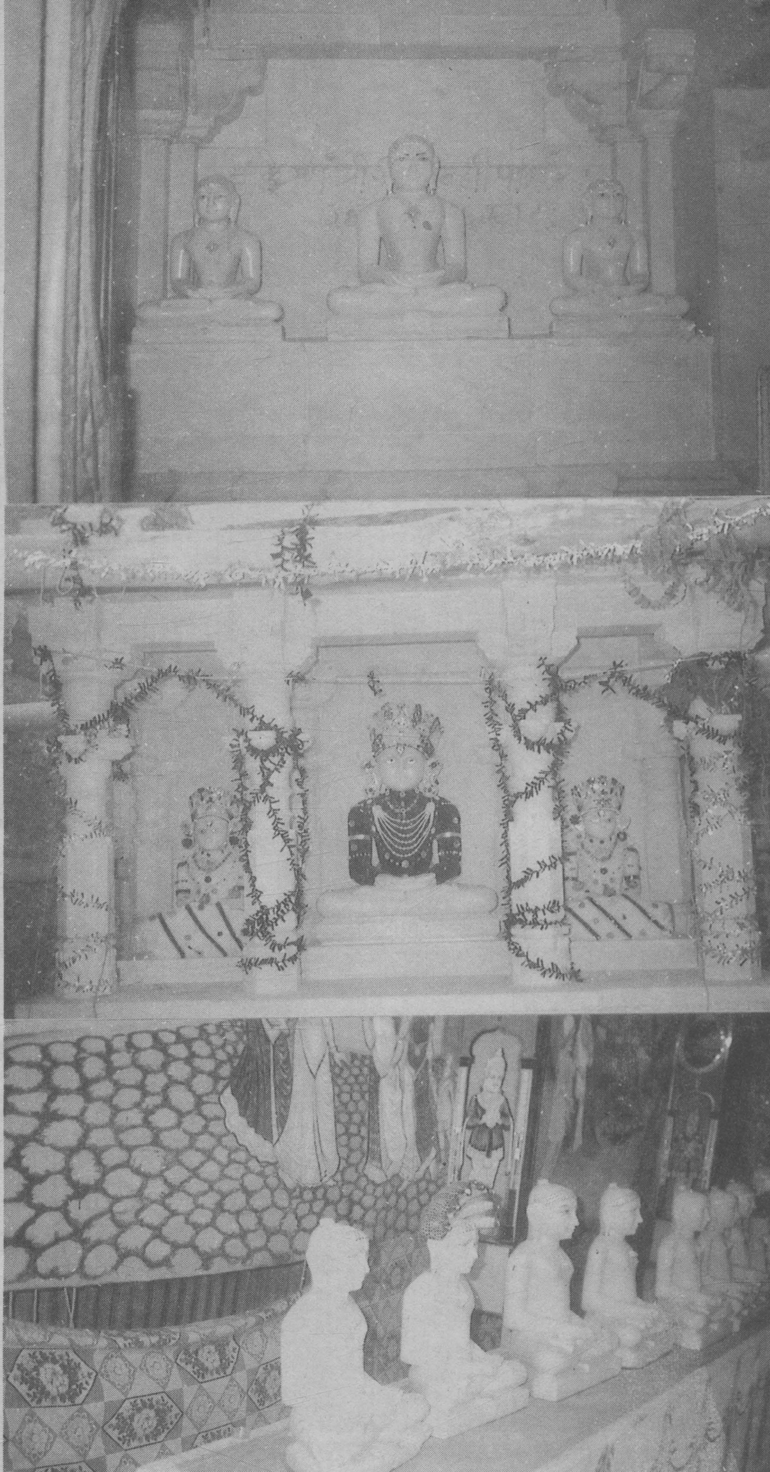

थलवाड में आयोजित प्रातिष्ठा एवं अंजनशलाका महोत्सव
23.5.91

आ. श्री कैलाससागर सूरि ज्ञानमंदिर
श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र, कोबा.

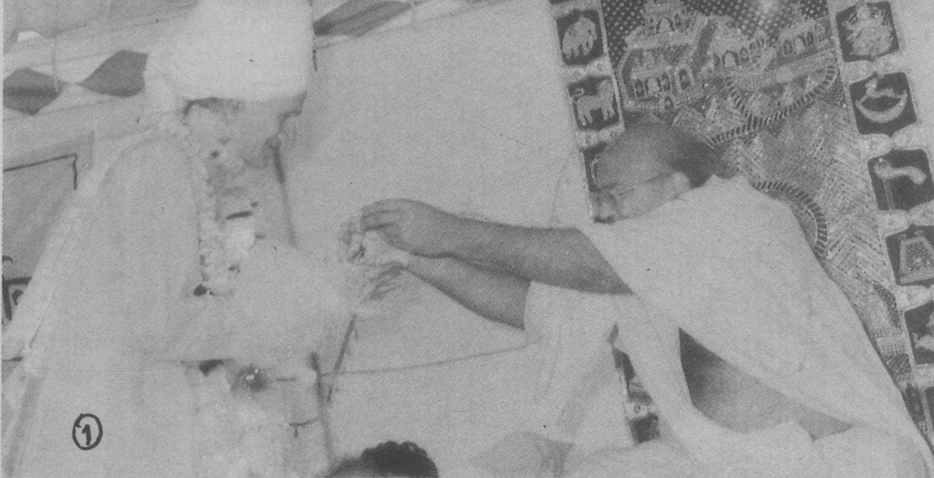

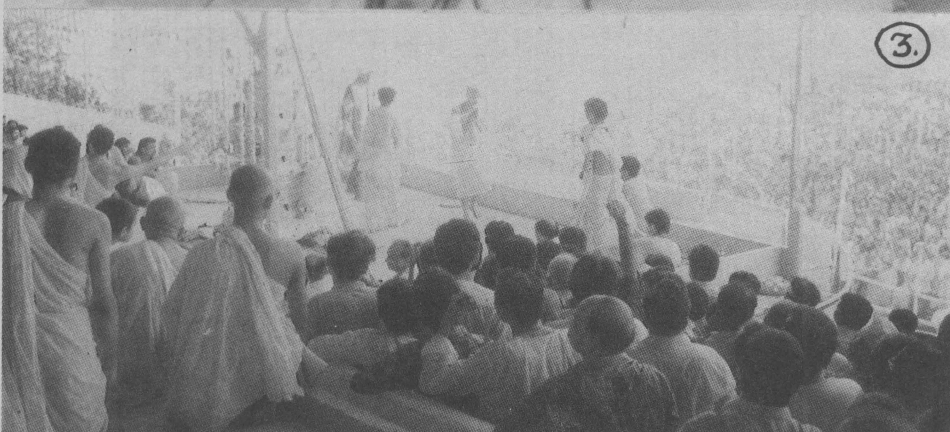

(1.) भीनमाल में आचार्य श्री जयंतसेनसूरीश्वरजी से 7/3/91 को भागवती प्रवज्या अंगीकार करते समय रजोहरण ग्रहण करते हुए सेठ बाबुलालजी

(2.) आचार्यश्री से वासक्षेप ग्रहण कर मुनिश्री नयरत्नविजयजी नाम घोषित

(3.) 2 जून को अहमदाबाद में डायमंड प्रिन्स श्री अतुल शाह ने आचार्यश्री रामचन्द्रसूरीश्वरजी से दीक्षा अंगीकार की. नामकरण- हितरुचि विजयजी.

मुनिराज श्री चेतनविजयजी की अंतिमयात्रा के दृश्य. स्थल : भीनमाल दि : 9.6.91
(1.) तेरह शिखरी पालखी में दिवंगत मुनिराज का पार्थिव देह (2.) अंतिम यात्रा में जन समूह
[इनसेंट में स्व. मुनिश्री का चित्र]

2 जून 91 को बैंगलोर में कु. चन्द्रकांता बहन ने आचार्य श्री
भुवनभानुसूरीश्वरजी के वरद्‌हस्तों से भागवती प्रवज्या अंगीकार की.

(1.) दीक्षा पूर्व वरसीदान का एक दृश्य

(2.) दीक्षा के बाद नूतन साध्वीजी 'संस्कार निधिश्रीजी' नामकरण

(3.) गुरुणीजी श्री अनंतकीर्तिश्रीजी के साथ नूतन साध्वीजी
श्री संस्कारनिधिश्रीजी मद्रास की ओर विहार करते हुए।

આત્મસંશોધન

—મુનિ શ્રીપ્રશાન્ત રત્નવિજયજી

એક શેઠ હતા.એક વાર અવસર આવ્યો કે સાથે જ પોતાની રત્નમંજૂષા લઈને બીજે ગામ જવાનું થયું. રસ્તે ચાલતાં એમને એક ઢોંગી ઠગનો ભેટો થઈ ગયો. ઠગ પણ ઘણો હોંશિયાર, એણે રસ્તામાં જ શેઠ સાથે મિત્રતા બાંધી. શેઠ પણ આમ તો ઘણી દિવાલી જોઈ ચુકેલા. અને ગામે-ગામનૂ પાણી પી ચૂકેલા. શેઠને પેલા ઠગ સાથે મિત્રતા બાંધવામી મજા પડી. શેઠને ધ્યાન તો હતું જ કે આ ઠગ છે. છતાં શેઠે અજાણ હોય તેવો જ વર્તાવ રાખ્યો.

ઠગ પણ પોતાના સ્વાંગ બદલી શેઠને રૂપેજ તેમને મળેલો. વાટ હતી ઘણી લાંબી. અને મંજીલ હતી દૂર. શેઠને વાતે વળગ્યા બેઉ જણા. વાત-વાતમાં ઠગે શેઠને પૂછી લીધું સાથે કાંઈ જોખમ તો નહીં રાખ્યું હોય કેમ ? શેઠે વિગતવાર બધીજ વાત જણાવી દીધી. પોતાની પાસે રત્નમંજૂષા છે તે પણ બતાવી દીધી.

રત્નમંજૂષા દેખતાંજ પેલા ઠગનો જીવ આધોપાછો થવા માંડયો. પણ પોતાના મનોગત ભાવ આમ વર્તાવા કેમ દેવાય? તરતજ તેણે શેઠને શિખામણ દેવા માંડી શેઠ! આવું જોખમ લઈ એકલા આ વિકટમાર્ગે નાં જવાય, તરતજ શેઠ બોલ્યા હું ક્યાં એકલો છું? તમે મારા મિત્ર તો સાથે છો પછી મને શાની ચિન્તા?

છેવટે સાંજ પડી પણ નિર્ધારિત મુકામ સુધી પહોંચાયું નહીં છેલ્લે બન્ને જણે નક્કી કર્યું કે આપણે એક યાત્રિકગૃહ માંજ રાતવાસો કરી લેવો. સવાર થતાંજ મુસાફરી શુરૂ કરી દઈશું.

મનોમન ઠગને હર્ષ થયો. ચાલો હવે આપણું કામ સરળ બનશે. ગયા યાત્રિકગૃહમાં અને એક રૂમમાં બન્ને ઉતર્યા. સાથેજ મિત્રભાવે વાળું કર્યું. હવે રાત પડી, ઠગ મનમાં વિચારે કે ઠીક શેઠ સપડાઈ ગયા છે. આજ તો રાત્રે ઉઠીને તેમની રત્નપેટી લઈ જ લઈ. એમ કરી નિરાંતે નિદ્રાદેવી ને શરણે ગયો.

શેઠ પર મનમાં વિચાર કરે છે. આ ઠગ! શું સમજ તો હશે એના મનમાં? તે ચાલાક છે તો હું યે ક્યાં કમ છું? આસ્તે થી ઉઠીને શેઠ પોતાના બિસ્તરમાંથી રત્નપેટી બહાર નિકાલી. પેલા ઠગના ઓશિકા નીચે જાળવીને મુકી દીધી. હવે શેઠને ચિન્તા પલાયન થઈ ગઈ. જે ચિન્તા હતી તે ધન નીજ હતી. શેઠ પણ નિરાન્તે ઉંઘી ગયા.

બરાબર મધ્ય રાત્રે શેઠની ઉંઘ તૂટી. પાસે જ પેલો ઠગ મિત્ર શોધખોળ કરી રહ્યો હતો. શેઠ ખબર ન પડે તેમ ચાલાકી થી જોતા રહ્યા. આખરે ઠગ ખોળી ખોળી ને થાક્યો તેને રત્નપેટી ના મળી તે ના જ મળી. કંટાળીને તે પાછો સૂઈ ગયો.

સવારે બન્ને સાથે જ ઉઠ્યા. ઠગે શેઠને પૂછ્યું. રે શેઠ! તમે મને ખરો મૂર્ખ બનાવ્યો.

કે મારી પાસે રત્ન પેટી છે. રાત્રિ તે ક્યાં સંતાડી આવ્યા? હવે હું તમને મિત્રભાવે સત્ય હકિકત કહું હું શેઠ નથી પણ આ વિસ્તાર નો મહાન ઠગ છું. પણ આજે તો તમે મને પણ ઠગી ગયા.

શેઠ કહે મને બધીજ ખબર છે. કે રાત્રે તું ઉઠેલો. અને બિસ્તર ની તલાશી લીધી કેમ તને રત્નપેટી મળીગઇ ને!

ઠગ કહે ક્યાં હતી રત્નપેટી?

શેઠ કહે બિસ્તરમાં જ હતી. પણ તું ભીંત ભૂલ્યો. તેં જાગીને મારો જ બિસ્તર ફેંદ્યો. જરાક તારાય બિસ્તરમાં નજર કરતો તો તને ખબર પડત કે રત્નપેટી તારીજ પાસે હતી.

મહા મૂલ્યવાન ખજાનો આપણી પાસેજ પડ્યો છે. કે જે ખજાનાની ચાહના રાખીને જગત ના માનવો આમ તેમ શોધતા ફરે છે. પણ એ બધા આંધલાણી પાછલ દોડતા બીજા આંધળાની જેવાજ છે.

પરમ ખજાના રૂપી આત્મધન-અખંડ અને અવિનાશી રૂપ તો પ્રાણીમાત્રના આત્મામાં પ્રકાશમાન છે. સન્મુખજ છે. એટલે સમ્યગ્દર્શન સ્વરૂપ મુખ ના આગળ જ એ આત્મધન વિદ્યમાન છે. જ્ઞાનજ્યોતિ વાળાને એ આત્મધન યથાર્થ દષ્ટિગોચર થાય છે. એ જ્ઞાનજ્યોતિવાળો જ એને બતાવી શકે છે. જેઓ સમ્યગ્દષ્ટિ જ્ઞાનચેતનવાળા છે, તેઓ તો ઈન્દ્રિયાર્થો ને આત્માથી ભિન્ન માને છે. અને જુવે પણ છે. આત્માના અવ્યાબાધ અનંત સુખને અને શરીર તથા ઈન્દ્રિયોના સુખને જુદા માને છે.

સમ્યગ્દષ્ટિવાળાનેજ જ્ઞાન થાય છે કે ભાઇ! જેની તને ચાહના છે, જેની તને ઝંખના છે, એ તો તારા માં જ સમાયેલું છે. બ્હાર ક્યાંય નથી. રખેને પેલા ઠગની માફક આપણે પણ ઠગાઈ જઇએ! જેમ ઠગે પોતાનો બિસ્તર ન દેખ્યો. તંત્ર જગતના મોહાન્ધ લોકો પુદ્‌ગલા નંદી બને છે. તેઓ નામમાત્રથી આત્માની શોધ કરતા ફરે છે. અને જ્ઞાનજ્યોતિવાળા સુદેવ, સુગુરૂ, સુધર્મ ને છોડીને મોહાન્ધ, ઉપાસક ની પાસે જાય છે, જે બતાવેલા ઉપાયોથી આ આંધળાઓને પણ આત્મતત્વ મલતું નથી. આત્મસુખની પ્રાપ્તિ પણ થતી નથી.

સૂર્ય રોજ ઉગે છે ને રોજ આથમે છે-આપણે એ જોઇ રોતાં નથી. ફૂલ રોજ સવારે ખિલે છે સાંજે આથમે છે, આપણે જે જોઇ શોક કરતાં નથી કારણ આપણે જાણીએ છીએ કે સવારે ઊગવું અને સાંજે આથમવું એ એનો સ્વભાવ છે.

પરંતુ કોઈ વ્યક્તિ જન્મે છે ત્યારે આપણે આનંદ વ્યક્ત કરીએ છીએ ને મરે છે ત્યારે શોક વ્યક્ત કરીએ છીએ. એ વખતે આપણે સમજતાં નથી કે-આ પણ એનો સ્વભાવ છે. જે જન્મે તે અવશ્ય મરે જ! જન્મે ત્યારે હસવાનું શું....ને મરે ત્યારે રોવાનું શું... ?

— શ્રેયસ —

ચન્દનબાલા

—પં. શ્રીપૂર્ણાનન્દવિજયજી 'કુમાર શ્રમણ'

વૈશાલી ગણતંત્રના અધિનાયક ચેટક મહારાજાની ધારિણી નામની પુત્રી ચંપાના દધિવાહન રાજાને પરણી હતી, તેમ મૃગાવતી કૌશાંબીના રાજા શતાનિક સાથે વિવાહિત હતી. માટે બંને રાજા પરસ્પર સાઢુના સંબધથી સંબંધિત હતાં, પરન્તુ વક્રગતિએ ચલાવેલી રાજનીતિના અભિશાપે ભારતદેશના કેટલાય રાજા-મહારાજા ધાર્મિક બની શક્યા નથી. કેમકે :- મૈથુન અને પરિગ્રહ સંજ્ઞામાં બેહાલ અને મદમસ્ત બનેલા માનવની દાનત કેવળ પોતાની શ્રીમંતાઈ અને સત્તા વધારવાની જ હોય છે, જેથી તેને તેનાથી બીજા એકેય કાર્યમાં રસ હોતો નથી. માટે જ આવો માણસ સમય આવ્યે પોતાની ધર્મ પત્નીનો પર સાચો પતિ, જન્મદાત્રી માતાનું કુળદીપક, પિતાની ખાનદાનીને શોભાવનારો, સગાસંબંધીઓનો આશ્વાસનીય, મિત્રોનો સહૃદય મિત્ર તેમજ પોતાના પુત્ર પુત્રીઓનો પણ સાચો પિતા બની શકવા માટે સમર્થ બની શકતો નથી.

શાસ્ત્રોમાં મૈથુન અને પરિગ્રહ સંજ્ઞાને ભયંકર કાળી નાગણની ઉપમા આપવામાં એટલા માટે જ આવી છે કે તે બંનેમાં મર્યાદાતીત આસક્ત બનેલા ગૃહસ્થાશ્રમીઓનાં પુણ્યકર્મને નાશ કરાવનારી, સત્કર્મોને બાળી નખાવનારી, ધાર્મિકતાથી હજારો માઈલ દૂર રખાવનારી, તેમજ ભવભવાંતરને પર બગાડી નાખનારી શક્તિ રહેલી છે. દેવલોકના દેવો પણ વિષયાસક્ત બનીને અનંત અવસર્પિણી અને ઉત્સર્પિણીની કાર્યસ્થિતિવાળું વનસ્પતિકાયત્વ પ્રાપ્ત કરી શકતા હોય તો, ભોગવિલાસો અને પરિગ્રહના પાપે માનવ શા રીતે ઊર્ધ્વગતિ મેળવી શકશે ?

જૈન ધર્મોપાસિકા મૃગાવતીના પતિ અને જૈનત્વના રંગમાં પૂર્ણરૂપે રંગાયેલી જયંતી શ્રાવિકાના સગા ભાઈ શતાનિક રાજા પોતે મહાવીરસ્વામીના શાસનથી હજારો માઈલ દૂર હોવાથી સમ્યક્જ્ઞાન અને ધર્મની સંજ્ઞાના માલિક બની શક્યા નથી, માટે જ વાતે વાતે રણમેદાન રમવાનો શોખ વધ્યો અને કારણ વિના જ ચંપાનગરી ઉપર હુમલો કર્યો. પોતાના સગા સાઢુ દધિવાહન રાજાને હરાવ્યાનો આનન્દ શતાનિક રાજાને જરૂર રહ્યો હશે. પરંતુ તેને ક્યાંથી ખબર હોય કે; મારી મહાસતી મૃગાવતી રાણીને પોતાના પડખે લેવામાં મારો જ સાઢુભાઈ માલવાધિપતિ ચંડપ્રદ્યોત રાજા મારા માટે કાળા નાગની જેમ ફૂંફાડો મારીને તૈયાર બેઠો છે.

જે દેશના રાજાઓ, રાજનૈતિકો, સેનાપતિઓ તેમજ શ્રીમંતો શરાબપાન, પરસ્ત્રીગમન, જુગાર અને વાતેવાતે લડાઈઓ લડવાની વૃત્તિ ધરાવનારા હશે તે દેશને અને રાજાદિને અધ:પતનના માર્ગે ગયા વિના છૂટકો નથી, કેમ કે સૌના મૂળમાં મૈથુનાસક્તિ તથા ધન અને સત્તાનો પરિગ્રહ જ મુખ્ય કામ કરે છે. આ કારણે જ **આચારાંગ સૂત્રના પ્રથમ સૂત્રમાં જ મહાવીરસ્વામીએ કહ્યું કે: "જેમના જીવનમાં આહારસંજ્ઞા-મૈથુનસંજ્ઞા-પરિગ્રહસંજ્ઞા અને ભયસંજ્ઞા મર્યાદાથી બહાર વધી ગઈ હશે તેમના જીવનમાં ધર્મસંજ્ઞા કે જ્ઞાનસંજ્ઞા નથી જ હોતી."**

વિજય મેળવેલા શતાનિક રાજાના સૈનિકોએ ચંપામાંથી જે હાથ લાગ્યું તે લીધું.

દધિવાહન રાજાની ધારિણી રાણી તથા વસુમતી પુત્રી પણ એક સૈનિકના હાથમાં પડી. વસુમતી બાલિકા હતી અને ધનાશેઠને ત્યાં તેનું વેચાણ થયું. શેઠ ઉદાર, ધર્મિષ્ઠ અને પ્રેમાળ હોવાથી તે કન્યાને ચંદનબાળાના નામે સંબોધિત કરી, તથા પોતાની પુત્રીતુલ્ય માન્ય રાખી. શેઠને મૂળા નામે શેઠાણી હતાં. યદ્યપિ ખાનદાન કુટુંબમાં જન્મેલી અને પરણેલી હોવા છતાં પર સંસારની વિષમતાના કારણે તે શેઠાણીના માનસિક જીવનમાં ભય, વ્હેમ, શોક અને ચિંતા આદિ દોષો વૈકારિકરૂપે પ્રવિષ્ટ થયેલા હોવાથી શેઠ પ્રત્યે તેનું મન શંકાશીલ હતું. કેમ કે પ્રથમના શેઠાણીના મૃત્યુ પામ્યા પછી શેઠે કંઈક મોટી ઉંમરમાં મૂળા સાથે લગ્ન કર્યાં હતાં. મોટી ઉંમરે બીજીવાર પરણનાર પુરૂષ ત્રીજી-ચોથી અને પાંચમી સ્ત્રી સાથે પણ વૈવાહિક નહીં તો વૈષયિક સંબંધમાં ન જોડાય તેની ખાતરી કોણ આપશે? વાંદરાને પણ ડાળ કુદતાં કેટલીવાર? તો પછી વાંદરા જેવું પુરૂષનું મન એક સ્ત્રીમાં સંતુષ્ટ રહે તે પ્રાય: અશક્ય છે.

ગુલામી પ્રથાના પાપે દાસી તરીકે લાવેલી ચંદનાને શેઠ ભલે બેટી-બેટી કહીને બોલાવે પણ "न जाने जानकीनाथ प्रभाते किं भविष्यति" આવતી કાલે કદાચ તેને પત્ની તરીકે સ્વીકાર કરી લે તો મારા માથા પર શોક્યનું દુઃખ આવ્યા વિના રહે નહીં. આ પ્રમાણે રોષે ભરાયેલી મૂળાએ ચંદનાને મારી શોક્ય બનવાનો અવસર જ ન આવે તે પ્રમાણે નાપિત (ગાંજો) ને બોલાવી ચંદનાનું માથું મુંડાવી દીધું, હાથ પગમાં બેડીઓ નાખી અને ભોંયરામાં ઉતારી, જ્યાં પ્રકાશ અને હવાનો અભાવ હતો. ત્યાર પછી શેઠાણી પોતાના પિયરે ગઈ. કર્મરાજાની પણ વક્તા હશે તેથી શેઠ પણ વ્યાપારાર્થે ત્રણ દિવસ માટે બહારગામ ગયેલા હતાં.

મોગરાની કળી જેવી ચંદનાને ન કલ્પી શકાય તેવી પોતાની બેહાલ અવસ્થા પર જબ્બર અફસોસ થયો અને આંખમાંથી આસુંના બૂંદ પણ ટપકાવી દીધાં. પરંતુ કર્મજન્મ સંસારની વિટંબણાઓનો અંત શું અફસોસ કર્યે, દુઃખ લાવ્યે કે રૂદન કર્યે મટી જવાની હતી?

સંસારમાં જન્મનારા મનુષ્ય યોનિના જીવો ભોગી અને યોગીરૂપે બે પ્રકારના હોય છે. જેઓ પુણ્ય અને પાપ કર્મોની ગ્રંથિઓમાં જકડાયેલા હોવાથી તેમનાં ફળ સુખ અને દુઃખ, સંયોગ અને વિયોગ, હસવું અને રોવું, ખાવું અને ભૂખે મરવું, મિત્રોનો મિલાપ કે શત્રુઓનો મિલાપ આદિ દ્વંદ્વો ગમે ત્યારે, ગમે તે નિમિત્તે કે ગમે તે સ્થાને ભોગવ્યા વિના પુરૂષ વિશેષને માટે પણ બીજો માર્ગ નથી, તેમ છતાં પણ જન્મજન્માંતરની યોગ સાધના દ્વારા આત્મિક શક્તિનો વિકાસ સાધેલા યોગી પુરૂષો પોતાના માથા ઉપર ઉતરેલા દુઃખના ડુંગરાઓને, માતાપિતાના વિયોગને, ધર્મપત્નીના અભાવને કે ગમે તેવા શરીરિક કષ્ટોને પણ હસતે મોઢે સહન કરીને દુઃખોને પણ સુખમાં પરિવર્તિત કરવાની ક્ષમતા ધરાવનારા હોય છે. જ્યારે નિકૃષ્ટતમ ભોગની સાધનાથી હણાઈ ગયેલી આત્માની શક્તિવાળા પુરૂષો, સુખ સંપત્તિના સદ્‌ભાવમાં, માતાપિતાના સંયોગમાં, ઘરવાળીની હાજરીમાં કે પુત્રપુત્રીઓની વચ્ચે રોતાં રોતાં પોતાના દિવસો પૂર્ણ કરતાં પણ આપણે જોઈએ છીએ.

દેવાધિદેવ ભગવાન મહાવીરસ્વામીના કેવલજ્ઞાન પૂર્વે ચેડા (ચેટક) મહારાજાની ખાનદાની પાર્શ્વનાથ પરમાત્માની પરમોપાસિકા હતી. ત્યાર પછી મહાવીરસ્વામીને કેવળજ્ઞાન થયા બાદ તેમનાં શાસનનાં રંગમાં રંગાયા. તેમની સાતે પુત્રીઓ, સતીત્વ ધર્મમય હોવાનાં કારણે તેમનાં રોમેરોમમાં જૈનત્વ વસેલું હોવાથી તેઓ પણ વ્રતધારિણી બન્યા.

ધારિણી પોતાના શિયળ રક્ષાર્થે મૃત્યુને પણ આરામથી ભેટી શકી હતી. માટે જ ચંદનબાળાની ખાનદાની યોગપ્રધાન હોવાથી ઊંમર નાની હતી પણ આત્મામાં સમ્યક્‌જ્ઞાનનો પ્રકાશ થયેલો હતો. તે કારણે મૂળા શેઠાણીના રોષનો ભોગ બનેલી ચંદનાને આત્મા, બુદ્ધિ અને મનને સંયમિત કરતાં વાર ન લાગી. કેમ કે ઉદયમાં આવેલા કર્મોનું તથા શેઠાણી પ્રત્યે ભડકવાની તૈયારી કરેલા ક્રોધનું ઉપશમન કરનારને સમ્યક્ત્વ નકારી શકાતું નથી અને જ્યાં સમ્યક્ત્વ હોય ત્યાં જ્ઞાનનો પ્રકાશ વધતાં વાર લાગતી નથી. તે બંન્નેની હાજરીમાં સમ્ક્ચારિત્ર જીવ માત્રનું આધ્યાત્મિક રક્ષણ કરવા માટે સદૈવ તૈયાર જ છે. ''કર્મેરિતં સર્વ જગત્પ્રપંચ'' સંસારનો પ્રપંચ માત્ર પોતાના જ કરેલા કર્મોની ફળશ્રુતિ છે તો પછી મૂળા શેઠાણી પ્રત્યે રોષ કરવાથી કે વધારવાથી કે તેને યાદ કરવાથી પણ ક્યો ફાયદો? આવી રીતે ઉશ્કેરાયેલા મનને સમાધિસ્થ કર્યું' અને પોતે સ્વસ્થ બની. એટલે કે સંસારના માયા પ્રપંચમાંથી નીકળીને, ભાડુતી પૌદ્‌ગલિક સુખ-દુ:ખોને ખંખેરીને, ક્રોધ-રોષ તેમજ શઠ પ્રત્યે શાઠ્યની માયા પ્રંપંચમાથી નીકળીને, ચંદના સ્વસ્થ બની તથા સંસારને, મૂળા શેઠાણીને તથા પોતાના શારીરિક કષ્ટોને પણ ભૂલી ગઇ. આવા પવિત્રતમ જીવનમાં પરમાત્માના દર્શન તથા સાક્ષાત્કાર થાય તેમાં કોઇને પણ આશ્ચર્ય નથી તત્ત્વજ્ઞાન જાણી લીધા પછી જેઓ બાળવત્ નિર્દોષ રહે છે ત્યાં પરમાત્માના સાક્ષાત્કારને કોઇએ નકાર્યું પણ નથી.

તે ચંદનબાળા એટલું જાણતી હતી કે મારી ખાનદાનીમાં ત્રિશલા રાણીના પુત્ર વર્ધમાનકુમારે કષ્ઠાય ક્લેશથી પરિપૂર્ણ, માયા તથા સ્વાર્થમાં અંધ બનેલા સંસારને તથા તેની માયાને અસાર જાણીને માનવ માત્રને કષાય ક્લેશોથી મુક્ત કરવા માટે વૈરાગ્ય ધારણ કર્યું છે તથા કેવળજ્ઞાન મેળવી લીધા પછી જગતનો ઉદ્ધાર કરણા માટે ભાવ દયાલુ તે પરમાત્મા મારો પણ કરશે જ. આવી આસ્થાથી હર્ષ વિભોર બનેલા આત્માને ''पूर्णानन्दस्य तत् किं स्यात् देन्यवृश्चिक वेदना'' સંસારના દુ:ખોની અસર કરવાની હતી?

જ્યારે પરમાત્માની માયાને છોડીને સંસારની માયામાં મસ્તાન બનેલા કોઇએ પણ સુખ મેળવ્યું નથી, મેળવ્યું હશે તો ટક્યું નથી, અને ટક્યું હશે તો ચિરસ્થાયી બન્યું નથી. **કાળા નાગના મોઢામાંથી અમૃતનો ઉદ્‌ભવ નથી તથા કડવા તુંબડાના ભક્ષણથી કોઈ જીવિત રહ્યું નથી તેવી રીતે મોહ-માયા અને કષાયમય સંસાર પણ કાલા નાગ જેવો તથા કડવા તુંબડા જેવો છે, તેથી** સંસારને શણગારવા માટે પોતાની જીન્દગીને ખપાવી દેનારા પણ છેવટે રોતાં રોતાં અને હાથ પગને ઘસતાં ઘસતાં મર્યા છે. પત્નીના હાથે પતિ, પતિના હાથે પત્ની, પિતાના હાથે પુત્ર અને પુત્રના હાથે પિતા પણ વગર મોતે મર્યા છે. સંસારની આ નાટકશાળામાં એક ઘાતક છે બીજો ઘાત્ય, એક મારક છે બીજો માર્ય, એક કર્જો ચૂકવવા માટે જન્મ્યો છે તો બીજો તેની વસુલાત કરવા માટે જન્મ્યો છે. આનાથી અતિરિક્ત બીજું એકેય તત્ત્વ સંસારમાં નથી. માટે ક્રોધ, વૈર અને ભૂંડાઇ આદિ ગંદા તત્ત્વોને જવાબ **ક્રોધથી વૈરથી કે ભૂંડાઇથી દેવા હરહાલતમાં પણ સારૂં નથી.** ઈત્યાદિ સમ્યક્‌જ્ઞાનની વિચારધારામાં ચન્દનાના ત્રણ દિવસ પૂર્ણ થયાં. ભૂખ અને તરસનાં કારણે શરીર નબળું પડ્યું હશે પણ આત્માને અરિહંત પરમાત્માઓનો ચોલમજીઠીયો રંગ પૂર્ણ રૂપે લાગી ગયો હોવાથી તે ચન્દનાનો આત્મા અનંતશક્તિઓનું ઉદ્‌ઘાટન કરવાની મર્યાદામાં પહોંચી ગયો હતો.

બહારગામ ગયેલા શેઠ પણ ત્રણ દિવસ પછી આવ્યા. ચન્દનાની તપાસ કરી અને

ભોંયરાના દરવાજા તોડીને સર્વથા અશક્ત બનેલી ચન્દનાને બહાર લાવ્યા. હડહડતો વૈરી પણ પોતાના શત્રુને એક જ ઝાટકે મારી દે છે, પણ આવી બેહાલ અવસ્થા અને નિર્દય જુલમ તો તોઈ કરી શકે નહીં તેથી શેઠ ધ્રુસકે ધ્રુસકે રોઈ પડચાં અને પૂછ્યું કે, બેટી! આવું શી રીતે બન્યું અને કોણે કર્યું?

સ્વસ્થ ચન્દનાએ મનમાં વિચારી લીધું હતું કે-સંસાર રોવા માટે કે હસવા માટે નથી. કેમ કે આજના હસવાના પ્રસંગો આવતીકાલે રોવાના કારણ બન્યા છે અને આજે રોવડાવનારા પ્રસંગો પણ આવતી કાલે હસવાના કારણ બન્યા છે તેથી સંસારના કોઈ પણ પ્રસંગમાં હસવું કે રોવું સર્વથા નિરર્થક છે. સમાધિ પ્રાપ્ત ચન્દનાએ જવાબમાં કહ્યું કે-"પૂજ્ય પિતાજી! મારા કરેલા કર્મોના કારણે જ અથવા નિકટ ભવિષ્યમાં અરિહંત પરમાત્માઓની જ્યોત મેળવવા માટે હકદાર બનેલી તમારી ચંદનાને અંધકાર જોવો પડે કે શારીરિક કષ્ટો ભોગવવા પડે તે માટે કંઈ પણ દુ:ખ લાવવાની આવશ્કતા નથી. પિતાજી! **પોતાના કેરેલા કર્મોથી અતિરિક્ત બીજો કોઈ પણ માનવ બીજા કોઈને દુ:ખી બનાવી શકતો નથી તેમ સુખી પણ બનાવી શકતો નથી.** મેં ઘણાઓને સુખી કર્યા કે ભૂખે મરતા કર્યાં' આના જેવું ભ્રમજ્ઞાન બીજું કયું? માટે **દુર્બુદ્ધિના કારણે કે સદ્બુદ્ધિના કારણે જીવ માત્ર પોતે જ દુ:ખી અને સુખી બને છે. મારા માટે તો આ દુ:ખના** ડુંગરાઓ પણ સુખદાયક બનવા પામ્યા છે." કાયાથી અશક્ત બનેલી ચંદનાએ મૌન લીધું. બાફેલા અડદના દાણાને સૂપડામાં મૂકીને ચંદનાને તે સૂપડુ આપ્યું અને પોતે ત્વરિતગતિએ લુહારને બોલાવવા માટે ગયો.

ભૂખ અપાર હતી, તરસ અસહ્ય હતી,. વેદના કલ્પનાતીત હતી, તો પણ સ્વસ્થ બનેલી ચંદનાના મોઢે શબ્દો સરી પડચા.

"જીયા બેકરાર હૈ, હૃદયકી પુકાર હૈ;
આ જાઓ મહાવીર સ્વામી તેરા ઈન્તેજાર હૈ.
દધિવાહન રાજા કી બેટી મહેલોં કી મતવાલી હો;
મહેલોં કી મતવાલી.
તીન દિન સે પડી અકેલી,
મેં કર્મો કી મારી હો, મેં કર્મો કી મારી.
કોઈ ન પૂછનહાર હૈ, કિસીકા ન પ્યાર હૈ;
આ જાઓ મહાવીરસ્વામી તેરા ઈન્તેજાર હૈ.

ભક્તની પ્રાર્થના ભગવાનને સાંભળ્યા વિના છુટકો નથી જ, અને ભગવંત પધાર્યા. ૧૭૫ દિવસનું પારણું ચંદનાના હાથે થયું. માટે જ કહેવાયું છે કે, 'મહાવીરસ્વામી સિવાય બીજો કોઈ દીર્ઘ તપસ્વી નથી અને ચંદના જેવી ઉત્તમોત્તમ નારી બીજી કોઈ નથી.

મહાવીરસ્વામીની આદ્ય સાધ્વી ચંદનબાળા હતી, જેમના ચરણે શિયળ ધર્મની અજોડ આરાધિકા, સત્ય ધર્મની પરમોપાસિકા અને અહિંસાના સૂક્ષ્મતમ તત્ત્વની સુરક્ષિકા ૩૬ હજાર સાધ્વીજીઓ પોતાના આત્મતત્ત્વ પ્રત્યે પ્રતિસમય જાગૃત હતી.

'જય હો નારી નારાયણીનો'

- शाश्वत धर्म के संरक्षक -

* शा. ओटमल वेलाजी कांकरिया - सुरा निवासी , * शा. ताराचंद फुटरमल फौजमल, भानाजी वेदमुथा-आहोर निवासी, * कटारिया संघवी भंवरलाल, उगमचंद, विरेन्द्रकुमार राजेन्द्रकुमार बेटा पोता तोलाजी धाणसा निवासी, * शा. तिलोकचंद, नरसींगमल, पुखराज, परखचंद, सांवलचंद, बेटा पोता प्रतापचंदजी - सरत निवासी, * संघवी मिश्रीमल, हस्तीमल, समरथमल, हिरालाल शांतिलाल जिनेशकुमार, बेटा पोता कन्नाजी कटारिया-जाखल निवासी. * नैनावा श्री जैन श्वेतांबर सकल संघ, गुरूभक्तगण-नैनावा, * श्री समकित गच्छीय जैन श्वेतांबर संघ-धानेरा, स्व. मयाचंद धुलाजी की स्मृति में धर्मपत्नी धापुबाई, सुपूत्र कुशलराज, भ्राता निहालचंद एवं श्रीमती जडावबेन कातरेला वोहरा आहोर निवासी, * मेहता तेजराज, जयंतीलाल, राजेन्द्रकुमार, अरविंदकुमार, बेटा पोता रायचंदजी जसराजजी भूती निवासी, * मोरखीया चंदुलाल, बाबुलाल, रसिकलाल मेहशकुमार, परेशकुमार, अल्पेशकुमार, रुपेशकुमार, पुत्रपौत्र स्व. मोरखीया नानचंद मूलचंद भाई-थराद निवासी, * स्व. मुणोत रिखबचंदजी की स्मृति में धर्मपत्नी ठेलीबाई सुपुत्र बाबुलाल, सुमेरमल, अशोककुमार - रमणिया निवासी, * श्री राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट - मद्रास, * स्व. रामाणी शेषमलजी की स्मृति में मांगीलाल, फुटरमल, शांतीलाल, किशोरकुमार, बेटा पोता खुशालजी रामाणी-गुडा बालोतान (फर्म. शांतिलाल ज्वेलर्स, नेल्लोर) * शा. मोहनलाल, पारसमल, सुरेशकुमार, किशोरकुमार, कमलेशकुमार, अरविंदकुमार, बेटा पोता सांकलचंद जेरूपजी - भेंसवाड़ा निवासी (गोल्डन ज्वेलरी, नेल्लोर), * स्व. सुगीबाई धर्मपत्नी अचलजी की स्मृति में पुत्र कांतिलाल प्रपौत्र रमेशकुमार बागरा निवासी, * श्री श्वेताम्बर जैन संघ - सियाणा, * श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ - थराद * श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ - चौराऊ, * दोशी सोमतमल, गुमानमल, सुखराज सांवलजी ह. गुमानमल सावलचंदजी चेरिटेबल ट्रस्ट, बम्बई , सुशीला बहन की स्मृति में भीमराज, हिमांशकुमार, श्रेणिककुमार बेटापोता बेचरदासजी छाजेड़ - नैनावा निवासी हाल मु. सांचोर (राज), * श्री गोड़ी पार्श्वनाथ जैन देरासर पेढी - सोनारी सेरी - थराद, प्रतिष्ठा प्रसंगे गुरूभक्तों द्वारा. * स्व. जेठमलजी खुमाजी की स्मृति में चंदनमल, कैलाशचन्द, हंसराज, शीतलकुमार, अश्विनकुमार परिवार बागरा निवासी, फर्म : राजस्थान फायनेन्स कार्पोरेशन - काकीनाडा, * श्री विमलनाथ जैन डोसी दहेरासर - थराद. • **श्री सौधर्मवृहत्पागच्छ जैन संघ-आणंद**

डाक पंजीयन क्रमांक MH/THN १६१ पहले से डाक चुकाये बिना भेजने की
अनुमति प्राप्त लायसेन्स नं. ३५

क्या आप जानते हैं कि....

किसको किस दशा में केवलज्ञान हुआ ?

- नंदिषेण मुनि को चलते - चलते।
- गौतमस्वामी को विलाप करते - करते।
- मेतारज मुनि को दुःख भोगते हुए।
- मरूदेवी माता को हाथी की अंबाडी पर।
- मृगादेवी को पश्चाताप करते - करते।
- इलायची कुमार को रस्से पर खेल बताते समय।
- कुरगडू मुनि को खाते - खाते।
- बाहुबलिजी को मान (कषाय) छोड़ने पर।
- भरत चक्रवर्ती को श्रृंगारगृह में।
- स्कन्दक आचार्य के शिष्यों को घाणी में- -पिले जाते समय।
- गजसुकुमाल को उपसर्ग सहन करते हुए।
- खंदकमुनि को अपनी चमड़ी उतरती देखकर।
- गुणचंद्रजी को हस्त मिलाप करते समय।
- पृथ्वीचन्द्रजी को सिंहासन पर।

(संकलित)

संपादक - जे.के.संघवी अ.भा. श्री. राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के लिये
डपूजी आर्ट प्रिन्टर्स- थाने में मुद्रित।